॥ श्री शासनपति महावीराय नमः ॥
॥ गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरि गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

पुण्य सम्राट

संस्थापक–श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | नवम्बर-2021
दिव्याशीष–लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी मोक्ष कल्याणक दिवस

दीपावली अभिनंदन

नूतन वर्ष मंगलमय हो

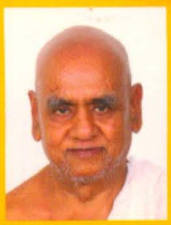

गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरीजी म.सा.

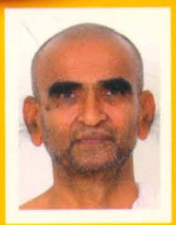

जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.

गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरीजी म.सा. व जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के सानिध्य में आयोजित

- कार्तिक शुक्ला 1 शुक्रवार दि. 5 नवम्बर 2021 श्री गौतम गणधर केवलज्ञान दिवस
- कार्तिक शुक्ला 2 शनिवार दि. 6 नवम्बर 2021 गुरुदेव श्रीमद् विजय यतिन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. जन्म जयंती
- कार्तिक शुक्ला 14 गुरुवार दि. 18 नवम्बर 2021 चातुर्मास चतुर्दशी
- कार्तिक शुक्ला 15 शुक्रवार दि. 19 नवम्बर 2021 चातुर्मास समाप्त श्री शत्रुंजय यात्रा प्रारंभ
- मार्गशीर्ष कृष्ण 13 गुरुवार दि. 2 दिसम्बर 2021 पुण्य सम्राट जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. का अवतरण दिवस ।

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंन्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. श्रीसंघ, नैनावा (गुजरात)
10. श्री जैन श्वे., त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
11. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
12. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला- जालोर (राज.)
13. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, सरसी, जिला- रतलाम (म.प्र.)
14. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा म.प्र.)
15. श्री अमराईवाड़ी श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक संघ, बलियावास, अहमदाबाद
16. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्र यतीन्द्र जयन्तसेन वाटिका पिपलौदा (रतलाम) म.प्र.)

कोबा (गांधीनगर) पि. ३८२००७

हमारे गौरव

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

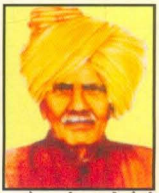

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा
दाधाल

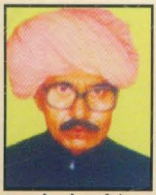

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

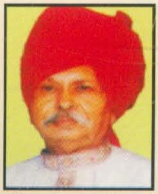

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

हमारे गौरव

3333

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणाबाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोतंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

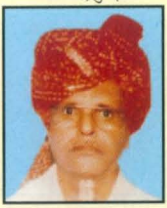
भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतड़ा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

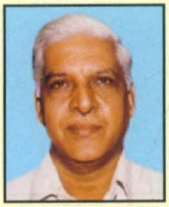
शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्दुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

36545

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

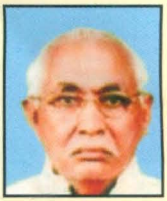

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वादीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

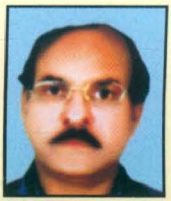

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

स्व.श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा–थलवाड़, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा वादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, घानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

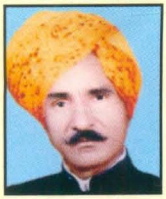

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

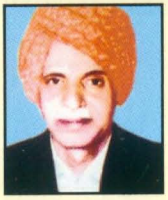

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

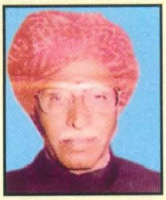

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

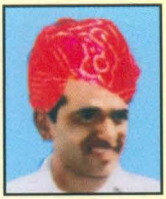

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

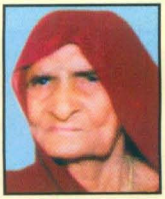

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

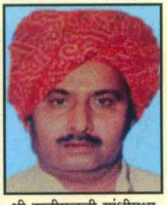

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

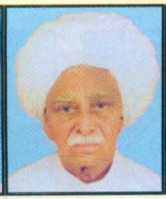

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

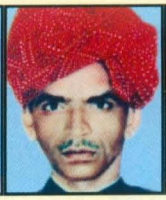

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

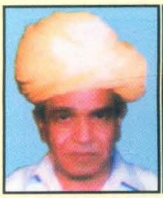

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तीलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

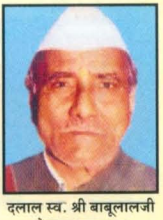

दलाल स्व. श्री बाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेवाजी
डामाणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. वगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सचु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

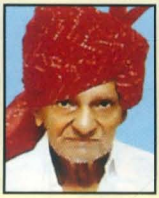
धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

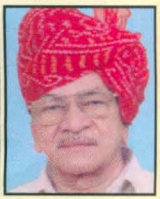
शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

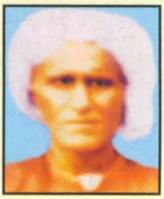
वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

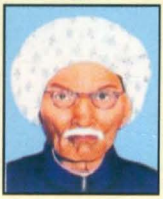
वेदनीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

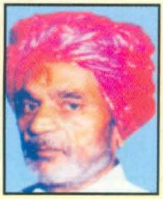
श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थराद

संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

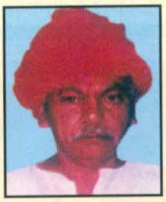
अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

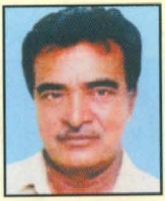
श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तळेरा कर्मडवाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

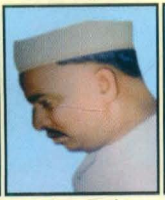
श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

श्री मानसिंहजी राजगढ़

स्व. श्री कालूरामजी औरा टोपीवाले, रतलाम

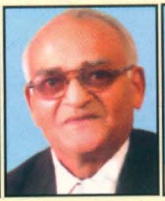
स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय खाचरौद

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी राठौर (बड़नगर)

हमारे गौरव

स्व. श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

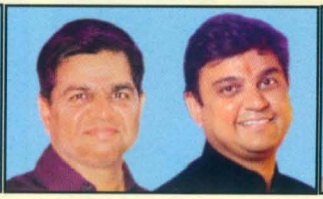

स्व. श्रीशांतिलालजी एवं पुत्र स्व.श्री रितेशकुमारजी
डूंगरवाल, इंदौर

स्व.श्री सागरमल भंडारी
(झाबुआ) इंदौर

स्व.श्रीमती चन्द्रकान्ता
सागरमलजी भंडारी
(झाबुआ) इंदौर

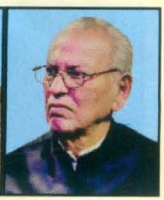

समाज गौरव
श्री शांतीलाल सकलेचा
रानापुर

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखवचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

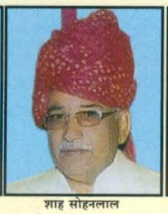

शाह सोहनलाल
मिश्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

ज्ञा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

॥ विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
नवम्बर 2021 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 69 अंक 11
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2078

इस अंक का मूल्य	-	15रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुधीर लोढ़ा	(महामंत्री)
श्री ओ.सी. जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)
आदि	

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

संचालक- अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

प्रेरक प्रसंग

वैराग्य का डंका बज उठा

मगध नरेश श्रेणिक के पुत्र नंदिषेण मुनि बने तथा त्याग के मार्ग का अवलम्बन किया। वे अद्भुत वीणावादक थे लेकिन दीक्षा लेकर तपस्वी बने ।

नंदिषेण मगध के विभिन्न क्षेत्रों में भिक्षा के लिये भ्रमण करते थे। एक दिन एक वैश्या के घर पहुंच गये तथा बोले- 'धर्मलाभ'

वैश्या ने व्यंग कसा -

'मुनिवर यहां धर्मलाभ नहीं वित्तलाभ चाहिये।'

नंदिषेण मुनि का अहं कंपित हो गया उनने लब्धि से सोने की वर्षा कर दी। वैश्या स्तब्ध रह गई और बोली- 'आप यहीं रहेंगे, चले गये तो मैं अपने प्राण त्याग दूंगी।'

मुनि ने कहा - 'मैं रहूंगा, एक शर्त पर । 'प्रतिदिन दस को दीक्षा की प्रेरणा देकर भोजन करूंगा। वैश्या मान गई।'

प्रतिदिन क्रम चला। साढ़े बारह वर्ष बाद एक दिन पूरे दिन में नंदिषेण नौ को ही दीक्षा के लिये तैयार कर पाये। परेशान वैश्या बोली

'कब तक माथाकूट करोगे? नौ ही मिल रहे हैं तो दसवें आप ।'

मुनि के हृदय में वैराग्य का डंका बज उठा, वे पुनः साधु बन गये।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

1.	साहस से डटे रहना उत्तम पुरुष की पहचान, श्री यतीन्द्र वचनामृत : आध्यात्मिक मंच	09
2.	प्रवचन - स्व. पुण्य सम्राट लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.	10
3.	प्राच्य संगीत - चालो सखी मुनिवर उद्याने आव्या रे (उपाध्याय श्री मोहनविजयजी म.)	12
4.	मंत्र विधान- विवाद विजय एवं अभीष्सित कार्य..... (विनय कुमार छिपानी)	13
5.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	14
6.	कल्पवृक्ष पुष्प के समान होती है- योग लब्धियाँ (शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)	16
7.	अध्यक्षीय पाती (श्री वाघजीभाई वोरा)	18
8.	अध्यक्षीय संदेश (श्री रमेशभाई धरू)	19
9.	चिन्तन का चित्रांकण (गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	20
10.	उत्तम आहार- शाकाहार (जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)	21
11.	अतिथि रचना (पं. मुक्तिचन्द्रविजयजी म., गणि मुनिचन्द्रविजय म.)	22
12.	तीर्थंकर- तारेश (मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)	24
13.	श्री नवकार कल्पद्रुम (मुनिराज श्री विद्वद्रत्नविजयजी म.सा.)	25
14.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)	27
15.	पूजा के दस त्रिक (मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा.)	28
16.	पांचवा स्थान- मोक्ष है (साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	29
17.	अहिंसा परमो धर्मः (साध्वी श्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	31
18.	वैराग्य सज्झाय (साध्वी श्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	34
19.	संकट नाशक , रस परित्याग तप आयंबिल (शांतिलाल सगरावत)	37
20.	क्रोध-मुक्ति से कषाय-मुक्ति (कविरत्न डॉ. दिलीप धींग)	38
21.	गुरु गुण सप्तपदी (श्री नेमिनिधिश्रीजी म.सा.)	42
22.	श्री राइंद गुम थई (श्री तपोनिधिश्रीजी म.सा.)	43
21.	गुजराती संभाग	45
22.	कुमकुम सने पगलिए	57
23.	परिषद प्रांगण से	60
24.	श्रीसंघ सौरभ	66
25.	जैन विश्व	70
26.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	71-72

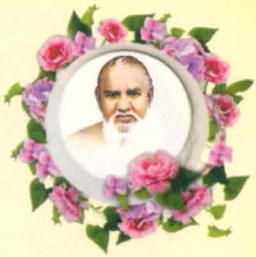

साहस से डटे रहना उत्तम पुरुष की पहचान

* जो पुरुष अपने दृढ़ संकल्प से किसी भी कार्य का आरम्भ कर देते हैं, उसमें यदि विघ्न बाधाएँ आ जाने पर भी साहस पूर्वक अंतिम पल तक डटे रहते हैं, उसे मध्य में नहीं छोड़ते, उनको उसमें अवश्य सफलता मिलती है। इस प्रकार के पुरुष उत्तम पुरुष या महापुरुष कहलाते हैं। जो पुरुष कार्य तो प्रारम्भ कर देते हैं, परन्तु उसमें विघ्न खड़े हो जाने पर उसे अधबीच में ही छोड़कर भाग निकलते हैं, उन लोगों के कार्य की रूपरेखा छिन्न-भिन्न हो जाती है। साथ ही उनको हताश होकर भी बैठना पड़ता है, ऐसे लोग जघन्य पुरुष कहलाते हैं और जो लोग विघ्नभय के कारण कार्य का आरम्भ ही नहीं करते, समझाने पर भी अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं, उनको अधमपुरुष समझना चाहिए, जो अपने किसी भी ध्येय को सफल नहीं बना सकते।

* भगिनीपुत्र, जमाई, दुर्जन, धूर्त, जुआँरी, अशिक्षित नट, मूर्ख परिवाजक, जड़ वैद्य, मंत्रीहीन राजा, पर पुरुषरता स्त्री, कामी मनुष्य, असत्यवादी, जल से भरी हुई नदी, बहुभाषी नर, अगाध जलाशय वैश्या, दूती, मूढ़ मंत्री, लोभप्रिय इनका कभी भी विश्वास नहीं करना चाहिए। इन पर विश्वास और इनकी संगति करने से महापरेशानी उठानी पड़ती है। इसी प्रकार अपना आयुष्य, धन वैभव, गृह छिद्र, गुप्त रहस्य, मंत्र, औषधि, तप, दान और अपमान इन नौ बातों को कभी प्रकाशित नहीं करना चाहिए। इनको प्रकाशित करने से संसार में अवहेलना के पिंजरे में घिरकर महादुःखी होना पड़ता है।

* संसार में तृष्णा आकाश के समान अनन्त व दुःखमूलक है। इसी कारण निधान मिलने की आशंका से मनुष्य पृथ्वी पटल को खोद देता है, भयंकर गुफाओं में भ्रमण करता है, समुद्र में झंपापात करता है और पर्वतों की टोंच पर चढ़ता है, लेकिन भाग्य के बिना उसकी तृष्णा तृप्त नहीं होती।

◆◆◆

प्रवचन

विनय अपनाने पर विजय

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

शिकार खेलने के लिए कुछ लोगों ने एक दल बनाया। उसमें शामिल होने के लिए उत्कण्ठित एक आदमी वहाँ आया। आदमी दल के कप्तान से मिला। कप्तान ने दल में शामिल करने से पहले उस आदमी से इंटरव्यू लेना उचित समझा और पूछा- 'क्या आपने कभी किसी जंगली पशु को मारा है?' आदमी ने उत्तर दिया- 'जी हाँ ! मैंने एक बार एक सिंह की गर्दन मरोड़ दी थी, एक हाथी की सूँड एक झटके में उखाड़ फेंकी थी, एक भालू के पाँव तोड़ दिये थे और एक अजगर के दो टुकड़े कर डाले थे।'

चकित कप्तान ने पूछा- 'फिर क्या हुआ ?'

आदमी ने कहा- 'फिर तो वही हुआ जिसके होने की संभावना थी। मेरी जान आफत में आ गई थी, बड़ी मुश्किल से बच पाई। खिलौने वाले ने धक्के दे- देकर मुझे अपनी दुकान से भगा दिया।'

कहने का आशय यह है कि अहंकारी अपने अहंकार को ऐसी झूठी सफलताओं से भरते हैं और फूले-फूले फिरते हैं, परन्तु क्या यह सब उचित है? कभी नहीं।

अभिमान का नशा छोड़कर जो विनय को अपनाते हैं वे ही निश्चित रूप से विजय प्राप्त करते हैं ।चरम तीर्थंकर महाश्रमण प्रभु महावीर स्वामी ने अपने समस्त शिष्यों के सामने 'उत्तराध्ययन सूत्र' के रूप में उसके प्रथम विनयाध्ययन की प्रथम गाथा का इस प्रकार उच्चारण किया-

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ।

संयोगों से मुक्त अनगार भिक्षु के लिए मैं विनय का स्वरूप प्रकट करूँगा। मेरी बात सुनिये।

आत्मा से संयुक्त होने वाली दूसरी कषाय अभिमान के विषय में यहाँ विचार चल रहा है। बुद्धिमान मनुष्य अभिमानी नहीं होता, इसलिए वह किसी का अपमान नहीं करता। सबके मत (विचार) सुनता है और बालक के मुँह से निकली हुई सार्थक बात को भी अपनाता है, उसका उपयोग कर लेता है।

न कञ्चिदवमन्येत, सर्वस्य शृणुयान्मतम् ।
बालस्याप्यर्थवद्वाक्यमुपयुञ्जीत पण्डितः ।।

महात्मा शेखसादी कहा करते थे कि चिथड़े का भी अपमान मत करो, क्योंकि उसने भी पहले किसी की लाज बचाई थी, किसी के नंगे बदन को ढँका था।

तिनके का भी अपमान किया जाये तो वह आँख में लगकर मनुष्य को परेशान कर देता है। धूल भी ठोकर खाकर ठोकर मारने वाले के मस्तक पर जा बैठती है, फिर यदि मनुष्य का अपमान किया जाय तो वह क्या नहीं करेगा ? रावण ने विभीषण को अपमानित किया था तो उसका कितना भयंकर दुष्परिणाम उसे भोगना पड़ा ? सो सब जानते हैं। घर के सारे भेद विपक्षी राम को बताकर उसने रावण को पराजित करवाया और उसके सिंहासन पर स्वयं बिराजमान हुआ।

जो लोग हमारी प्रशंसा करते हैं, उनसे हम प्रेम करते हैं, क्योंकि प्रशंसा से हम प्रसन्न होते हैं। प्रसन्नता का कारण यह होता है कि प्रशंसा से हमारे मन में छिपे अभिमान को खुराक मिल जाती है। प्रशंसा से अहंकार पुष्ट होता है। यदि यह प्रशंसा सच्ची हो, हमारे सत्यकार्यों को देखकर प्रशंसा की जा रही हो तो फिर भी कोई बुरी बात नहीं है, परन्तु प्रशंसा यदि झूठी हो तो वह चापलूसी कहलाती है, खुशामद कहलाती है। बुद्धिमान सदा चापलूसी से दूर रहते हैं, वे समझ जाते हैं कि अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए चापलूसी का सहारा लिया जा रहा है, इसलिए वे सावधान हो जाते हैं और कभी चापलूसी के चक्कर में नहीं फँसते ।

◆◆◆

प्राच्य संगीत

चालो सखी मुनिवर उद्याने आव्या रे

(उपाध्याय श्री मोहनविजयजी म.)

अहो प्राणि पुण्य उदय दशा जागी रे. ए राह–

चालो सखि मुनिवर उद्याने आव्या रे, साथे चेला चेली घणा लाव्या ।। चा. ।। टेर ।। मुनिमोहन दृष्टिये देखो रे, धन्य मरुधरे आहोर लेखो रे, गाम 'सांबूजो' प्रीतथी पैवो ।।चा. ।।1।। ज्ञाति 'ब्राह्मण' बहु बुद्धिशाली रे, रिद्धि राजगुरुनी रूपाली रे, थया संयमी संयम पाली ।।चा.।। 2।। बदीचंदजी तात छे तेना रे, माता 'लक्ष्मी' लायक एना रे, काका गोमाजी गुण मजेना ।।चा.।।3।। जन्म उगणीसे बावीश जाणुं रे, वदी भादरवानी वखाणुं रे, तिथी त्रीज गुरु शुभ टाणुं ।। चा।।4।। नाम 'मोहन' अर्भक आवे रे, खंते खूबजी आहोर लावे रे, 'सुरिप्रमोद' भावे भणावे ।। ।।चा.।। 5।। अब्द अग्यारना थया ज्यारे रे, गुरु 'सूरिराजेन्द्रने' धारे रे, सुदि बीज माह गुरुवारे ।। ।।चा.।।6।। देश मालव जावरा जाणुं रे, बड़ा जैनी दानाजी वखाणुं रे, करयो महोत्सव खरची नाणुं ।।चा।। 7।। सुदि पंचमी प्रतिष्ठा कीधी रे, साथे अंजनशलाका विधी रे, 'छोटुमलजीनी' छे रूडी रिद्धी ।।चा.।। 8।। आव्या उगुणसाठे सीयाणे रे, मुनिमो–हन जन सहु जाणे रे, लेख 'लल्लुनो' लोक वखाणे ।।चा.।।9।।

◆◆◆

विचार कण:

* अनाथालय और अस्पताल में जाकर सेवा करना सरल है, पर घर के बूढ़े लोगों की सेवा करना मुश्किल है। आप पहले अपने घर की आग बुझाइए फिर औरों के घर पर पानी छिड़किए, इसी में आपकी भलाई है। * बुढ़ापे को बेकार मत समझिए। इसे सार्थक दिशा दीजिए। तन में बुढ़ापा भले ही आ जाए, पर मन में इसे मत आने दीजिए। आप जब 21 के हुए थे तब आपने शादी की तैयारी की थी, अब अगर आप 51 के हो गए हैं तो शांति की तैयारी करना शुरू कर दीजिए। * सुखी बुढ़ापे का एक ही मंत्र है– दादा बन जाओ तो दादागिरी छोड़ दो और परदादा बन जाओ तो दुनियांदारी करना छोड़ दो। अगर आप जवान हैं तो गुस्से को मंद रखो, नहीं तो कैरियर चौपट हो जाएगा और बूढ़े हैं तो गुस्से पर काबू रखो, नहीं तो बुढ़ापा बिगड़ जाएगा।

विवाद विजय एवं अभीष्सित कार्य सिद्धिदायक मंत्र - विधान

(विनय कुमार छिपानी)

स्तोत्र- श्लोक

कल्याण मन्दिर मुदारमवद्यभेदि भीता भय प्रदम निन्दितमङ्घिपद्मम् ।
संसार सागर निमज्ज दशेष जन्तु पोतायमानमभिम्य जिनेश्वरस्य ।।1।।
यस्य स्वयं सुरगुरुगंरिमाम्बुराशे : स्त्रोतं सुविस्तृतमतिनं विभुर्विधातुम् ।
तीर्थेश्वरस्य कमठ स्मयधूमकेतो स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ।।2।।

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हणमो इट्ठकज्जसिद्धीपराणं जिणामं ॐ ह्रीं अर्हं णमो दव्धंकराणं ओहिजिणाणं ।

मंत्र – ॐ नमो भगवओ रिसहस्य तस्य पडिनिमित्तेण चरणपण्णत्ति इन्वेण भणामई यमेण उधाडिया जीहा कंठोठ्ठमूहतालुया खीलिया जो मं भसई जो मंहसई दुठ्ठदिठ्ठीऐ वज्जसिंखलाए अमुकस्य मणं हिययं कोहं जीहा खीलिया सेलखियाऐ ल ल ल ल ठ : ठः ठः स्वाहाः ।

टिप्पणी – उक्त मंत्र में जहां अमूकस्य शब्द आया है वहां साध्य व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

विधी – उक्त मंत्र श्रृद्धापूर्वक 108 बार जप करने के बाद प्रतिवादी से वाद-विवाद करने में विजय प्राप्त होती है अर्थात वाद-विवाद में प्रतिवादी पराजित होता है।

ॐ ह्रीं कमठस्य य धूमकेतुपमाय श्री जिनाय नमः ।

यंत्र-विधान

सम्पादकीय

संल्लेखना नामक व्रत

(सुरेन्द्र लोढ़ा)

संल्लेखना नामक व्रत ही एक ऐसा व्रत है जिसको धारण करने पर हम धर्मरूपी धन को अगले भव में ले जा सकते हैं। यह व्रत जीवन के अन्त में लिया जाता है लेकिन संल्लेखना के माध्यम से मृत्यु का वरण किये जाने की भावना जीवन में किसी क्षण में की जा सकती है। यह संकल्प की परिपक्वता का प्रतीक है। व्यक्ति परिपक्व स्थिति में ही किसी भी व्रत, पच्चक्खाण अथवा त्याग की मूल भावना को स्पर्श कर सकता है। जैन दर्शन ने संल्लेखना की जो अवधारणा दी है, वह आध्यात्म की चरमोत्कर्ष स्थिति तो है, एक अलौकिक, अद्वितीय मार्ग का प्रतिपादन भी है। संल्लेखना का अर्थ कृश करना ही नहीं है बल्कि शरीर के साथ कषायों को कृश करना भी है।

संल्लेखना का भाव व्यक्ति को भेद विज्ञान की ओर पूर्णतः अग्रसर करता है। व्यक्ति के भावों में यह स्पष्ट आस्था होना चाहिये कि जो कुछ दृश्य है, हमें दिखाई देता है तथा जिसे हम अपना मानते हैं, पुद्गल है। वह नष्ट होने वाला है। समय आने पर पुद्गल परमाणु यहीं बिखर जायेंगे, उनके विनष्ट होने पर 'मैं' तो रहूंगा। मैं अगले भव की यात्रा करूंगा। अनादि काल से चौरासी लाख जीव योनियों में मैं भटक रहा हूँ। मैं एक भाव से दूसरे भाव, एक भाव से दूसरे भाव, एक आकार से दूसरे आकार में संसरण कर रहा हूँ। मैं कहाँ नष्ट होने वाला हूँ ? मैं तो अनादि- अनन्त आत्मा हूँ, मैं अजर अमर हूँ। जो मेरा नहीं है, वह नष्ट होने वाला है। देह मेरी नहीं है, मैं इससे भिन्न हूँ। जब व्यक्ति ऐसे विचारों में अग्रशील होता है तब वह देह की, उसकी इन्द्रियों की, मन की चिन्ता त्याग कर चेतन की प्राप्ति का उपक्रम करता है। चेतन तथा अचेतन के मध्य भेद को समझ पाना ही भेद विज्ञान है।

संल्लेखना की सभी क्रियाओं में परिणामों की विशुद्धि पर बल दिया है। भाव विशुद्धि के बिना संल्लेखना को संल्लेखना मानना उपयुक्त नहीं है। शास्त्रकारों ने भाव विशुद्धिपूर्वक ही संल्लेखना धारण करने का विधान किया है। संल्लेखना धारण करने की विधि को तीर्थंकर की आत्माएँ तक अपनाती हैं। ऋषि-महर्षि तथा संत-

शिरामणी भी संल्लेखना के द्वारा ही देह त्याग करते हैं। दिगम्बर आचार्य समन्तभद्र ने संल्लेखना की परिभाषा इस प्रकार की है- देव, मनुष्य, तिर्यंचादि कृत किसी उपसर्ग के आने पर, अकाल पड़ने पर, बुढ़ापा आने पर और असाध्य रोग हो जाने पर धर्म के लिये शरीर का त्याग करने को संल्लेखना कहते हैं। कुछ शास्त्रकारों ने संल्लेखना के दो भेद किये हैं- अभ्यंतर तथा बाह्य। क्रोध, मान, माया और लोभ जैसे कषायों को कृश करना अभ्यंतर संल्लेखना है। अनशन आदि तप के द्वारा शरीर को कृश करना बाह्य संल्लेखना है। एक टीकाकार ने द्रव्य संल्लेखना तथा भाव संल्लेखना ये दो प्रकार किये हैं। आत्मा में लीन होकर रोगादि विकल्पों को कृश करना भाव संल्लेखना है जबकि भोजन आदि का त्याग करके कायक्लेश रूप तप का अनुष्ठान करके शरीर कृश करना द्रव्य संल्लेखना है।

संल्लेखना शब्द दो पदों से मिलकर बना है सत् तथा लेखना। सत् पद से तात्पर्य है अच्छी तरह से और लेखना का अर्थ है शरीर एवं क्रोध, मान, माया, लोभ इन चार कषायों को कृश करना। संल्लेखना का मतलब काय तथा कषायों को कृश करने का धर्म सम्मत उपाय जिसके द्वारा श्रमण या श्रावक अपने भावीकालिन पारलौकिक जीवन को उन्नत बनाते हुए मोक्ष मार्ग को प्रशस्त करता है।

जैन आचार्यों ने पांच प्रकार के मरणों का उल्लेख किया है-

(1) बाल - बाल मरण (2) बाल मरण (3) बाल पंडित मरण (4) पंडित मरण तथा (5) पंडित पण्डित मरण। इनका विस्तार से विवेचन इस प्रकार किया गया है - मिथ्यादृष्टियों के मरण को बाल-बाल मरण कहते हैं। अविरत सम्यग्दृष्टियों के मरण को बाल मरण कहते हैं। प्रतिमाधारियों के मरण को बाल पंडित मरण कहते हैं। मुनिगणों के मरण को पंडित मरण कहते हैं तथा अरिहंतों के निर्वाण को पंडित-पंडित मरण कहा जाता है। गुणस्थानकों के आधार पर विवेचन करें तो प्रथम गुणस्थानकवालों का मरण बाल-बाल मरण है। चतुर्थ गुणस्थानक वालों के मरण को बाल मरण कहा जाता है। पंचम गुणस्थानक वालों का मरण बाल-पंडित मरण है। छठे से ग्यारहवें गुणस्थानक वालों का मरण पंडित मरण है एवं तेरहवें - चौदहवें वालों का मरण पंडित-पंडित मरण है। सभी भव्य जीव मंगलमय समाधिमरण को धारण कर अपने जीवन में की गई आत्मा की आराधना तथा धर्म की साधना को सफल करते हुए शुभ गति प्राप्त कर सकते हैं।

◆◆◆

कल्पवृक्ष पुष्प के समान होती है - योग लब्धियाँ

(शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)

चारणाशीर्विषावधि- मनः- पर्यायसम्पदः ।
योगकल्पद्रुमस्यैताः विकासिकुसुमश्रियः ।।

चारण विद्या, आशीविषलब्धि, अवधिज्ञान और मनः पर्यायज्ञान की सम्पदाएं, ये सभी योग रूपी कल्पवृक्ष की ही विकसित पुष्पश्री हैं।

जिस लब्धि के प्रभाव से जल, स्थल या नभ में निराबाधगति हो सके, उस अतिशय शक्ति को चारण लब्धि कहते हैं। जिस लब्धि के प्रभार से साधक दूसरे पर अपकार (शाप) या उपकार (वरदान) करने में समर्थ हो, वह आशीविषलब्धि कहलाती है। जिस लब्धि के प्रभाव से इंद्रियों से अज्ञेय परोक्ष रूपी द्रव्य का ज्ञान इन्द्रियों की सहायता के बिना ही प्रत्यक्ष किया जा सके, उसे अवधिज्ञानलब्धि कहते हैं। दूसरे के मनोद्रव्य पर्यायों को प्रत्यक्ष देखने की शक्ति जिस लब्धि के प्रभाव से हो, उसे मनः पर्यायज्ञान लब्धि कहते हैं। ये सारी लब्धि के प्रभाव से हो, उसे मनः पर्यायज्ञान लब्धि कहते हैं। ये सारी लब्धियाँ योग रूप कल्पवृक्ष के ही पुष्प समान है। इसके फल की प्राप्ति हो तो केवलज्ञान या मोक्षप्राप्ति होती है। भरत क्षेत्र के अधिपति श्री भरत चक्रवर्ती और मरूदेवी माता ने केवलज्ञान और मोक्ष प्राप्त किया था।

चारणलब्धि दो प्रकार की होती है- अंधाचारणलब्धि और विद्याचारणलब्धि। ये दोनों लब्धियाँ मुनियों को ही प्राप्त होती है। कई चारणलब्धि धर मुनि तिर्यगगति में भी उसी क्रम से ऊर्ध्व गमनागमन कर सकते हैं। जीवों की विराधना किये बिना जमीन की तरह ही पानी में पैरों को ऊँचे-नीचे चार अंगुलि-प्रमाण ऊपर आकाश में चलकर पैरों को ऊपर नीचे करने में कुशल होते हैं वे जंघाचारण लब्धिमान मुनि कहलाते हैं। जीवों को पीड़ा पहुँचाये बगैर फल के तल पर ऊपर - नीचे पैरों को करने में कुशल मुनि फलचारणलब्धिधारी मुनि कहलाते हैं। बिना अवम्बन के विभिन्न पेड़ों को पकड़कर जीवों की विराधना किये बगैर गति करने वाले पुष्पचारणलब्धिधर मुनि कहलाते हैं। नवपल्लवों पर गति करने वाले मुनियों को पत्रचारणलब्धिधर मुनि कहते हैं। नीलपर्वत की शिखर-श्रेणी का अवलेबन लेकर ऊपर उतरने-चढ़ने में निपुण मुनि श्रेणीचारणलब्धिमान मुनि

होते हैं। अग्निज्वाला की शिखाग्रहण करके बिना जले और बिना किसी जीव की आराधना किये विचरण करने वाले अग्निशिखाचारण लब्धियुक्त मुनि कहलाते हैं। इसी तरह धुएं की श्रेणियों में विचरण करने वाले धूमचारलब्धि प्राप्त मुनि बर्फ का सहारा लेकर विचरण करने वाले नीहारचारण लब्धिमान मुनि, कोहरे में विचरण करने वाले अवश्यायचारण लब्धिमान मुनि, मेघ समूह में विचरण करने वाले मेघचारणलब्धिवंत मुनि, वर्षा की जलधाराओं में विचरण करने वाले वारिधाराचारण लब्धिवंत मुनि, वृक्षों की कोटर में बने मकड़ी के जालों के तंतुओं का आलंबन में लेकर चलने में कुशल मरकटकतंतुचारण लब्धिधारी मुनि, चन्द्र, सूर्य, ग्रह नक्षत्रादि की ज्योतिकिरणों का आश्रय लेकर नभस्थल पर विचरण करने वाले ज्योतिरश्मिचारणलब्धिवंत मुनि, अनेक दिशाओं में अनुकूल या प्रतिकूल तेज हवा में अस्खलित गति से पैर रखकर चलने वाले वायुचारणलब्धि प्राप्त मुनि कहलाते हैं।

आशीविषलब्धि वाला उपकार या अपकार करने में समर्थ होता है। इन्द्रियपरोक्ष द्रव्यों का हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने की लब्धि अवधिज्ञान लब्धि होती है और मनुष्यक्षेत्रवृर्त्ति ढ़ाईद्विप में स्थित जीवों के मनोगत द्रव्यों को प्रकाशित करने वाली मनः पर्यायज्ञानलब्धि कहलाती है। इसके दो भेद -1. ऋजुमति कम विशुद्ध 2. विशुद्धतरविपुलमति।

◆◆◆

क्या करें वृद्धावस्था में

* बुढ़ापे को स्वस्थ, सक्रिय और सुरक्षित रखिए। स्वस्थ बुढ़ापे के लिए खानपान को सात्विक और संयमित कीजिए, सक्रिय बुढ़ापे के लिए घर के छोटे-मोटे काम करते रहिए और सुरक्षित बुढ़ापे के लिए सारा धन बेटों में बाँटने की बजाय एक हिस्सा खुद व खुद की पत्नी के नाम भी रखिए * दवाओं पर ज्यादा भरोसा मत कीजिए। भोजन में हल्दी, मैथी और अजवायन का उचित मात्रा में सेवन करते रहिए, हल्के-फुल्के व्यायाम अवश्य कीजिए अथवा आधा घंटा टहल लीजिए। घरवालों पर हम भार न लगें और शरीर भी भारी न लगे इसलिए कुछ - न - कुछ करते रहिए। * समय- समय पर स्वास्थ्य की जाँच भी करवा लीजिए ताकि कोई बड़ी बीमारी हम पर अचानक हमला न कर बैठे और पचास की उम्र में ही शेष बुढ़ापे की आर्थिक व्यवस्था सुदृढ़ कर लीजिए ताकि बच्चों के सामने हाथ फैलाने की नौबत न आए * घर में ज्यादा दखलंदाजी न करें क्योंकि बार - बार की गई टोकाटोकी बेटे-बहुओं को अलग घर बसाने के लिए मजबूर कर देगी * कमल के फूल की तरह घर में रहते हुए भी अनासक्त रहिए, थोड़ा समय प्रभुभक्ति, सत्संग, स्वाध्याय और ध्यान में बिताइए। हो सके तो साल में कम से कम एक बार संबोधि सक्रिय योग शिविर में अवश्य भाग लीजिए। इससे आपको मिलेगी जीवन की नई ऊर्जा, नया विश्वास और अद्भुत

अध्यक्षीय पाती

श्री वाघजीभाई वोरा

धार्मिक शिक्षा प्रचार प्रबल बनाएँ

तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के समय से इतिहास के पृष्ठों पर अब छब्बीस सौ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। उनका युग भी वैसे भारत/आर्यावर्त में धार्मिक क्रांति का ही था। जनकल्याण के उद्देश्य से एक से अधिक चिंतक अपने ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिए आत्म प्रेरित, संकल्पित और सक्रिय थे। सभी के अनुयायी थे।

लेकिन आज तीर्थंकर महावीर स्वामी का जैन धर्म ही फलती-फूलती स्थिति में है। हालांकि जैन धर्म के अनुयायियों की संख्या एकदम कम हो रही है। कुछ शताब्दी पूर्व तक भारत में जैन अनुयायी जितने करोड़ की संख्या में थे, आज उनकी गणना लाख में भी करना कठिन हो गई है। बौद्ध धर्म के अस्तित्व तथा महात्मा गौतम बुद्ध का नाम भी लिया जाता है, लेकिन उस धर्म का ठोस स्वरूप नहीं है। विदेशों में भी कई बौद्ध देश हैं जो धार्मिक दृष्टि से नाम मात्र के हैं।

इतने अंतराल के पश्चात् भी जैन धर्म के अनुयायियों की संख्या से चाहे न्यूनता दर्शित होती हो, लेकिन प्रभाव की दृष्टि से कहीं न्यूनता नहीं आई है। इसका कारण इसकी शिक्षाओं, ग्रंथों तथा सूत्रों का जीवन्त रहना है। आज भी इस वातावरण में जबकि व्यावहारिक शिक्षा के नाम पर नई शाखाओं तथा विज्ञान व तकनीक के विस्तार ने छात्र वर्ग को पूरी तरह में घेर रखा है एक जैन बालक का धार्मिक ज्ञान प्रबल है तथा उसकी आस्था प्रगाढ़ है। इसका कारण हमारे परिवारों में बच्चों (छात्र-छात्रा दोनों) को धार्मिक ज्ञान प्रारंभ से ही दिया जाना है। उसका छोटी उम्र से ही पाठशालों में लगातार जाते रहना हमारी धार्मिक पुस्तकों का प्रत्येक घर में होना, उनसे सूत्रों की रटन्त करवाई जाना, माता द्वारा धार्मिक सूत्र याद करने पर जोर देते रहना जारी रहता है। यदि यह स्थिति कमजोर पड़ती है तो भविष्य की अगली पीढ़ी धार्मिक क्षेत्र में जीवन में संस्कारों की दृष्टि से नाम मात्र ही रह जाएगी।

हमारा यानी सम्पूर्ण समाज का दायित्व है कि वह अपने परिवारों में धार्मिक संस्कारों का वातावरण बनाये। लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. हमेशा धार्मिक शिक्षा के प्रसार पर बल देते रहे थे। पूर्व में भी धार्मिक शिविरों, धार्मिक संस्कार ज्ञानायतनों के माध्यम के साथ भी यतीन्द्रजयंत ज्ञानपीठ के द्वारा छात्रों को धार्मिक शिक्षण से बराबर जोड़ा जाता रहा था। समाज का कर्त्तव्य है कि वह प्रचार की दिशा में सक्रिय रहकर सकारात्मक परिणाम प्राप्त करने का प्रयास करें।

राष्ट्रीय अध्यक्ष, त्रिस्तुतिक श्रीसंघ

◆◆◆

अध्यक्षीय संदेश

श्री रमेशभाई धरू

घर-घर पहुंचाएं 'शाश्वत धर्म'

समग्र त्रिस्तुतिक समाज के वैचारिक ललाट पर मुकुट की भाँति सजा है मासिक 'शाश्वत धर्म।' इसकी स्थापना स्व. गुरुदेव जैनाचार्य श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने उस समय की थी जबकि समाज का कोई पत्र या पत्रिका प्रकाशन के द्वार से बाहर नहीं आता था। उनकी भावना जैन संस्कृति प्रज्वलित करने वाला ईंधन तैयार किए जाने की थी। इस रूप में 'शाश्वत धर्म' आज 57 वर्षों से निरंतर पाठकों के हाथों तक पहुंच रहा है। स्व. गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने इसे सशक्त वाणी दी। उन्हें स्व. गुरुदेव संस्थापक श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का इसे निरंतर बनाये रखने के लिए परिपोषित करने का आदेश था। आज 'शाश्वत धर्म' इन्हीं की कृपा से सुदृढ़ पैरों पर खड़ा होने के प्रयास में है। वर्तमान गच्छाधिपतिश्री का अन्तर्मन समाज के प्रत्येक परिवार के प्रति यह इच्छा संजोये हुए है कि वह 'शाश्वत धर्म' को अपने परिवार का सदस्य बनाये। प्रतिमाह 'शाश्वत धर्म' उनके यहाँ पहुंचे तथा परिवार के सभी सदस्य रूचि, चाव तथा आस्था के साथ इसे पढ़ें। प्रसन्नता है कि कई परिवारों में इसका पाठन सामायिक में किया जाता है। 'शाश्वत धर्म' का प्रयास भी ऐसी सामग्री को प्राथमिकता देना है जो आत्म-सुधार, जीवन- उन्नयन एवं मूल्यों के संरक्षण की प्रेरणा देता है साथ ही गच्छाधिपतिश्री, पूज्य मुनिराज, पूज्य साध्वीजीगणों के उपदेशों, विचारों उनके द्वारा दी जाने वाली परिभाषाओं तथा व्याख्याओं को भी प्रस्तुत करता है। पूज्य श्रमण-श्रमणी वर्गों की प्रेरणाओं से होने वाली गतिविधियों तथा गच्छाधिपतिश्री तथा जैनाचार्यश्री के सान्निध्य में होने वाले अनुष्ठानों, प्रतिष्ठानों, प्रवृत्तियों का सिंहावलोकन भी 'शाश्वत धर्म' द्वारा पाठकों तक प्रेषित किया जाता है। पूर्व वर्षों में इसके महत्वपूर्ण विशेषांक प्रकाशित हुए हैं। अब यह आवश्यक कर्त्तव्य हो गया है कि प्रत्येक परिवार 'शाश्वत धर्म' से जुड़ जाए। वह इसका ग्राहक बने। जिन परिवारों में वर्तमान में यह नहीं पहुंचता है, वे परिवार शुल्क भेज कर विशाल 'शाश्वत धर्म' परिवार में अपना प्रवेश ले लें। पूज्य गच्छाधिपति जैनाचार्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की भावनानुसार 'शाश्वत धर्म' प्रत्येक परिवार तक अभियान प्रारंभ किया जा रहा है। प्रत्येक परिषद शाखा इस अभियान को सफल बनाने के लिए जुट जाए तथा जितने समाज के परिवार उसके ग्राम/नगर में हैं, उतने सदस्य बनाकर ही चैन लें।

जय जिनेन्द्र ! जय राजेन्द्र !

राष्ट्रीय अध्यक्ष
परिषद् परिवार

◆◆◆

चिन्तन का चित्रांकण

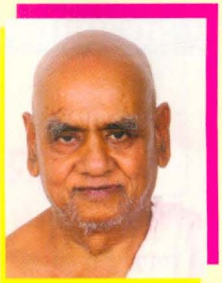

आत्म ध्यान में रमा करो

गच्छाधिपति धर्म दिवाकर
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

दिनांक 26.02.2017

नमन में विकार आये तो विचलित होकर मन में अनेक विचारों के अश्व दौड़ने लगते हैं। जहाँ विचारों के घोड़े दौड़ते हैं, वह आत्मा भी निर्णय करने में डगमगा जाती है। नयनों में विकार नहीं चाहिए। वृत्ति-प्रवृत्ति के फेर में न आयें। वृत्ति-प्रवृत्ति ही रखें।

दिनांक 27.02.2017

जिन आत्मा में रमण करे, अन्य वृत्ति प्रवृत्ति से परे रहकर स्वयं ध्यान में लीन रहने वाली आत्मा जीवन का सच्चा आनन्द पाती है, स्वयं में रमण करे वो रमा, स्वयं के चिंतन में लीन रहे वो आत्म रमा ! रमा रमण करे स्वयं के भावों में और परभाव से विरक्त होकर वो रमा निश्चय से श्रेय पथगामी आत्मा मानी गई है।

दिनांक 28.02.2017

जो-जो भी महापुरुष, ज्ञानी, भगवंत महन्त हुए वे सभी इष्ट भक्ति में रमण करते, आत्म ध्यान में लीन रहते, शुक्ल ध्यान की श्रेणी में नित्य रमा करते हैं अन्य सर्व संसार ध्यान का विसर्जन करते हैं इसीलिये उच्च स्थान के अधिकार को पाते हैं। आत्म ध्यान में रमा करो, धर्म ध्यान में रमा करो, जीवन का उद्धार करो

दिनांक 01.03.2017

विश्व की अजोड़ विभूति, अद्‌भुत ज्योतिवंत प्रकाश पूंज त्रिलोकीनाथ ही संसार के सबसे बड़े सर्व श्रेष्ठ महापुरुष माने गये हैं। सर्व श्रेष्ठ महापुरुष का संग ही जीवन का ढंग सच्चा बना देगा सच्चा स्वच्छ निर्मल जीवन ऐसे महापुरुषों के सतसंग से ही बनता है। सोच लें अपने आपको क्या करना चाहते हैं ?

दिनांक 02.03.2011

रेखा ऐसी खींचों, जिसे बाहर का देव भी इसे लांघ नहीं सके। रेखा वही मर्यादा है, सीमा है, हद है मानव जीवन में ऐसी रेखा खीच दो जिससे जीवन घातक चारों कषाय, ईर्ष्या, द्वेष, रूपी तस्कर कहीं से कहीं तक भी आत्म प्रदेश में घूम ही न पाये और जीवन निर्मल बनकर आत्म साधना में सफलता को पा सके। ◆◆◆

उत्तम आहार-शाकाहार-41

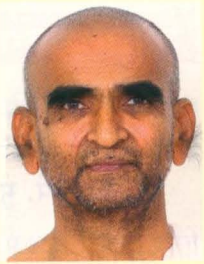

शाकाहार फैशन की तरह अपनाया जा रहा है

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

शाकाहार उत्कृष्ट जीवन शैली है। स्पष्टतः शाकाहार शरीर के स्वास्थ्य की दृष्टि से उसे सहायक है जबकि मांसाहार से कई बीमारियों का खतरा मंडराता रहता है। मांसाहार विकृतियों का घर है, अतएव शरीर को अपने चुंगुल में फंसा कर उसे बीमारियों से ग्रस्त कर देता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कथन है कि शाकाहार में कोलेस्ट्रॉल कम और वसा की मात्रा अधिक होती है। मांसाहार में इसकी ठीक विपरीत स्थिति पाई जाती है अर्थात कोलेस्ट्रॉल की मात्रा अधिक तथा वसा न्यून है। वसा तो किसी-किसी शाक में शुन्य ही रहता है। अण्डे की स्थिति भी ऐसी ही है, उसमें कोलेस्ट्रॉल बहुत अधिक होती है। अण्डे का भारत में विकृत मस्तिष्कवाले चाहे जितना गुणगान करें लेकिन हकीकत यह है कि अण्डा शरीर में दोष उत्पन्न कर देता है। यही कारण है कि जहां भारत में अण्डे के सेवन को टी.वी. पर विज्ञापन में मनुष्य के लिये लाभप्रद बताने की झूठी धृष्टता करते हैं, बी.बी.सी. लंदन अपने श्रोताओं को सलाह देता है कि वे एक सप्ताह में एक अण्डे से अधिक का सेवन नहीं करें। अमेरिका तथा यूरोप में शाकाहार का प्रचार एक आंदोलन की भांति किया जा रहा है। इस सुदृढ़ आंदोलन का फल यह हुआ कि अमेरिका में डेढ़ करोड़ से अधिक लोगों ने शाकाहार को फैशन की तरह अपना लिया है। इंग्लैण्ड के सर्वाधिक प्रचलित समाचार पत्र गार्जियन कई बार शाकाहार का समर्थन करता रहता है। उसने यहाँ तक अंकित कर दिया है कि सन् 2030 तक अमेरिका की आधी आबादी शाकाहारी बन जायेगी । अमेरिका के ही लेखक जॉन राबिन्स ने मांसाहार के विरुद्ध अपने देश के निवासियों को चेतावनी देते हुए यह लिख दिया है कि किसी देश की सभ्यता के विनाश के मूल में वहाँ के निवासियों द्वारा मांसाहार भोजन ग्रहण करना है। अधिकांश आधुनिक वैज्ञानिकों का मानना है कि विश्व जिन विशिष्ट समस्याओं का सामना कर रहा है, उनका हल शाकाहार के पास है। वैज्ञानिक वी. विश्वनाथ का कथन है कि स्वास्थ्य तथा पर्यावरण की दृष्टि से शाकाहार अधिक बेहतर तथा आदर्श आहार है।

(क्रमशः)

◆◆◆

अतिथि रचना

भक्ति

(पं. मुक्तिचन्द्रविजयजी म. / गणि मुनिचन्द्रविजय म.)

इस विषमकाल में यदि प्रभु भक्ति मिल गई तो समझना कि भव सागर का किनारा आ गया। 'एक बार प्रभु वन्दना रे, आगम रीति थाय', इक्को वि नमुक्कारो एक बार प्रभु की झलक दिख जाये तो जीवन सफल। भगवान के दर्शन भी उसे ही प्राप्त होते हैं, जिसको विरहाग्नि हो। विरह जितना उत्कट होगा, मिलन उतना ही मधुर होगा। प्यास जितनी उत्कट होगी, जल उतना ही मधुर लगेगा। भूख जितनी उत्कट होगी, भोजन उतना ही मधुर एवं स्वादिष्ट लगेगा।

'दरिसण दरिसण रटतो जो फि रूं, तो रणरोझ समान' आनन्दधनजी की उपर्युक्त पंक्ति में प्रभु - विरह कितना उत्कट दिख रहा है ? हम प्रभु- विरह के बिना प्रभु-दर्शन पाना चाहते हैं। गर्मी के बिना बादल भी नहीं बरसता तो प्रभु कैसे बरसे ? इस समय शीतल वातावरण है, थोड़ी भी गर्मी नहीं है तो बादल कहां बरसता है ?

प्रभु मिलन (केवलज्ञान - प्राप्ति) तो क्षणभर में ही, अन्तर्मुहूर्त में ही होने वाला है, परन्तु उसके लिये जन्म-जन्म की साधना चाहिये, प्रभु-विरह की उत्कट तड़पन चाहिये।

* यथाप्रवृत्तिकरण यों असंख्य प्रकार से है, परन्तु मुख्य दो प्रकार हैं- चरम यथाप्रवृत्तिकरण एवं अचरम यथा प्रवृत्तिकरण। असंख्य यथाप्रवृत्तिकरण होने के बाद अंतिम ऐसा यथाप्रवृत्तिकरण आता है जो उसे अपूर्वकरण में ले जाता है। अपूर्वकरण ऐसा वज्र है, जो राग-द्वेष की तीव्र गांठ को छेद डालता है। राग-द्वेष की गांठ के भेदन के बाद प्रभु के दर्शन होते हैं।

* हरिभद्रसूरि का वचन अर्थात् आगम-वाचन। हरिभद्रसूरि के बाद हुए प्रत्येक आचार्य ने ऐसी मुहर लगा दी है वे कैसे गीतार्थ एवं शासन समर्पित महापुरुष होंगे? उनके ग्रंथ पढ़ो। आपको उनका हृदय पढ़ने को मिलेगा।

* श्रावक की समग्र प्रवृत्ति चारित्रावरणीय कर्म के क्षय के लिये ही होनी चाहिये। कभी प्रसंग आने पर वह दीक्षा अंगीकार करने के लिये तैयार हो जाये। प्रवज्या के बाद प्रतिदिन साधु की दिनचर्या कैसी हो,यह जानने का श्रावक का अधिकार है।

* **पड़िलेहन :** साधु कोई भी वस्तु पडिलेहन किये बिना काम में नहीं लें। गोचरी के लिये जाते समय भी वह दृष्टि-पड़िलेहन करे। एक बार गुरु ने शिष्य

को इस संबंध में थोड़ा सचेत किया। शिष्य को हुआ कि बार-बार क्या देखना है ? अभी तो मैंने देखा है। झोली खोली तो भीतर बिच्छु था। कई बार देखे बिना तरपणी ले जाते समय भीतर डोरा, पूंजणी आदि पड़े रहते हैं। अनेक बार ऐसा होता है। अतः देखना आवश्यक है। मैं छोटा था। स्थंडिल जाने की उतावल थी। गंजी उतार कर कील पर टांग दिया। पाँच - दस मिनिट के बाद वैसे ही पहन लिया। देखा तो छः इंच लम्बा बिच्छू था परन्तु उसने डंक नहीं लगाया। हमारा घर बिच्छुओं का घर था। सफाई करते समय 10-15 बिच्छु तो निकलते ही परन्तु मुझे कभी बिच्छु ने काटा नहीं। 'धर्मो रक्षति रक्षकः।'

प्रत्येक क्रिया जयणापूर्वक की जानी चाहिये। जयणा न रखी तो हमें तो दोष लगा ही समझो। फिर चाहे जीव-हिंसा नहीं भी हुई हो। साधु के लिये प्रमाद ही हिंसा है। जिसके हृदय में प्रभु हो उसे क्या प्रमाद होगा? प्रमाद नहीं, प्रमोद होगा। प्रभु-भक्ति आते ही प्रमाद प्रमोद में बदल जाता है।

* मद्रास में बड़े-बड़े डॉक्टरों से मिलना हुआ है। उनमें भगवान की भक्ति देखने को मिली। वे कहते- 'हम तो निमित्त हैं। भगवान करेंगे तो अच्छा होगा। ईश्वर की प्रेरणा से हुआ। ईश्वर ने किया। हम कौन हैं ? हम तो केवल निमित्त हैं। ऐसे उद्‌गार सुने जाते हैं। हम होते तो क्या कहते? कहने के खातिर 'देव-गुरु-पसाय' कहते हैं, परन्तु भीतर अभिमान भरा हुआ ही होता है।

* पड़िलेहन - विधि जैसी इस समय करते हैं, वैसी यहाँ 'पंचवस्तुक' में बताई गई है।

पड़िलेहन आदि हम बहुत जल्दी करते हैं। हमें शीघ्रता की पड़ी है। ज्ञानियों को जीवों की पड़ी है। पड़िलेहन शीघ्र करने से मोक्ष-मार्ग पर धीरे-धीरे पहुंचते हैं, धीरे करने से शीघ्र पहुंचते हैं। इसमें समय बिगड़ता नहीं है। सफल होता है। स्वाध्याय करके आखिर क्या करना है? 'ज्ञानस्य फलं विरति।'

पड़िलेहन भी आज्ञा रूप एक भक्ति ही है। अनन्त खजाना हमारे पास होते हुए भी हम प्रमाद में हैं,नींद में हैं, भगवान कहते हैं- थोड़ा तो जाग कर देखो। अनन्त का खजाना आपके पास ही है। आप इन्द्रियों के सुख में मूढ़ बनकर पड़े रहो, यह मोह को अत्यन्त प्रिय लगता है, क्योंकि यदि आपकी मूढ़ता चली जाये तो मोह की पकड़ छूट जाये और आप अनन्त की ओर झांक सको। मोह की अधीनता से कर्म बंधते हैं। भगवान की अधीनता से कर्म टूटते हैं। प्रभु ही मोह - जाल में से हमें मुक्त कर सकते हैं। पुद्‌गल के प्रेम से मुक्त होने के लिए प्रभु का प्रेम चाहिये। प्रेम आत्मा का स्वभाव है, उसे छोड़ा नहीं जा सकता है परन्तु उसका रूपान्तर किया जा सकता है।

पुद्‌गल का प्रेम प्रभु में जोड़ा जा सकता है।

◆◆◆

कसाई-पुत्र सुलस बना श्रावक

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.)

समाज के ठेकेदारों की सलाह सुनते ही कसाई-पुत्र सुलस भड़क उठा। उस पर अभयकुमार का पूरा प्रभाव हो चुका था। वह अपने पिता की दुर्दशा से हिंसा-अहिंसा, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नर्क सभी को समझ गया था। उसने ललकार लगाई- 'ऐसा नहीं हो सकता। जैसा मुझे अपना प्राण प्यारा है, उसी प्रकार प्रत्येक जीव के अपने प्राण हैं। मैं कौन होता हूँ- उनके प्राण लेने वाला। और इन पाप कर्मों के जो फल अगले जन्मों तक मुझे भुगतना पड़ेंगे, उनकी कल्पना कर मैं कांप उठता हूँ। मैं कभी ऐसे घोर हिंसक कृत्य नहीं कर सकता।' सुलस की बात सुनकर उसके जातिवाले लोगों ने कहा- 'अभयकुमार ने इसे भड़का दिया है। इसका दिमाग खराब हो गया है। यह अपना नहीं रहा, अपने हाथों नहीं रहा, यह तो गया अपनों से हम क्या कहें फिर भी परीक्षा करते हैं।'जातिवालों ने एक भैंसा मंगवाया तथा सुलस को तलवार देकर कहा लो इस तलवार से भैंसे का काम तमाम करो। यही अपने कुल की मर्यादा है, अरे मर्यादा क्या धर्म है। कई पीढ़ियों से हमारी बिरादरी यह धंधा करती आ रही है। हमारे बाल बच्चों का भविष्य ही यही है।' दूसरे ने बात को वजन देते हुए कहा- 'यह धंधा हमारा आज का नहीं है, प्राचीन काल से चला आ रहा है। भगवान ने हमें जन्म ही इस धंधे के लिये ही दिया है। आज तक इतने अवतार हो गये, धर्म-संत का आगमन हो गया, कभी किसी ने रोका नहीं। हमारे पूर्वज भी यही व्यवसाय करते थे, हम भी कर रहे हैं, हमारी आने वाली पीढ़ी भी करेगी।' तीसरे ने पुष्टी करते हुए कहा- 'जिसका जो व्यवसाय है, उसे वही करना है। हम कसई हैं, हमारा कर्त्तव्य यही है, तब हम जो हिंसा करते हैं, वह अन्य के लिये अधर्म और पाप हो सकता है, हमारे लिये नहीं है। जिस जाति को जो कार्य मिला है, वह वैसा करेगा, वैसा करना उसका कर्त्तव्य है। कर्त्तव्य निभाने से नर्क थोड़े मिलता है, यह तो उसके लिये स्वर्ग का मार्ग है। उसने सुलस की ओर मुखातिब होकर कहा-'ले सुलस ले ! डर मत, घबरा मत, अभय कुमार की बातों में मत आ ! चल जल्दी से तलवार चलाकर अपनी जाति वाले भाइयों को खुश कर दे।' सुलस ने कहा कि- 'मैं इस पाप को बांध कर क्या करूं ।' सभी एक साथ बोले- 'यदि यह पाप है तो हम सभी मिलकर पाप का बंटवारा कर लेंगे, तू तो हमारी बात मान ले, जाति के रिवाज को जिन्दा कर दे।' सुलस ने तलवार हाथ में ली तथा उसने प्रहार भैंसे पर नहीं, अपनी जांघ पर कर दिया।

(क्रमशः)

◆◆◆

श्री नवकार कल्पद्रुम

(मुनिराज श्री विद्वद्रत्नविजयजी म.सा.)

दुर्लभावसर

रे ! रे ! नर ! तू अहर्निश, भजो भाव भगवन्त ।
क्षण-क्षण अवसर जा रहा, नदी वेग सम पंथ ।।178।।

परीक्षा

रे ! रे ! मानव कष्ट ही, कठिन परीक्षा काल ।
जिनशासन नवकार को, विस्मृत मत हर हाल ।।179।।

सर्व विहीन

बिन वारिधर भाद्रपद, बिन परिचय महमान ।
बिन अर्हत् आराधना, निष्फल जीवन जान ।।180।।

नवकार- स्वाध्याय

जिनशासन नवकार का, अति वर्णन सद्ग्रन्थ ।
करे सतत स्वाध्याय ही, बनकर समतावन्त ।।181।।

अनन्त

जिनशासन नवकार से, उपमा कथन न कोय ।
जैसे सागर मुष्ठि में, भरा न जाता कोय ।।182।।

कृष्ण-कीट

विविधतया ले स्वाद मुख, भजे न मुँह नवकार ।
कृष्ण मुखी का कीट हो, गोबर कीच विचार ।।183।।

भावालय

मानव कलियुग जन्म में, बस इतना है सार ।
हो प्रतिष्ठा भावालय, जिनशासन नवकार ।।184।।

यौवन-सुरक्षा

गया समय जल वेग सम, यौवन दुग्ध उफान ।
यथा समय भज लीजिए, जिनशासन भगवान ।।185।।

आबद्ध

अन्त भस्म हो एक दिन , सुन्दर दृढ़ शरीर ।
जिनशासन नवकार में, रखना चित्र समीर ।।186।।

कर्म-निरोध

प्यास शीघ्र उपशांत हो, अगर करे जल-पान ।
वैसे नवपद ध्यान से, नाशक कर्म म्लान ।।187।।

सुख समुद्र

रे मन ! तारक एक है, अहो ! दिव्य उद्घोष ।
जिनशासन नवकार भज, सभी सुखों का कोष ।।188।।

असीम-सुख

तुला पात्र पर रख रहा, सब कुछ सुख संसार ।
तुला न जाता जाप सुख, जिनशासन नवकार ।।189।।

आत्मानन्द

विषय विरति होगी सहज, तथा पुण्य का बन्ध।
जिनशासन नवकार जप, भव-भव में आनन्द ।।190।।

दुःख दलन

करे दलन दारूण दुःखद, सुख का हो संचार ।
भज ले मन-तन-वचन से, जिनशासन नवकार ।।191।।

अलिंगता

जिनशासन नवकार ही, भजे भाव भव पार ।
चाहे नर हो नपुंसक, चाहे वृद्धा नार ।।192।।

शीघ्र वेग

पावक पर पद गिर पड़ा, दग्ध देह तत्काल ।
वैसे जिनवर जाप से, सौख्य सिन्धु हित हाल ।।193।।

अवरोधक

जब तक रहे गृहासक्त, हो कब जप नवकार ।
गवां रहा तू जिन्दगी, हा ! हा! मूढ़ लबार ।।194।।

अन्याय

जिनशासन नवकार बिन, अवनी पर अन्याय ।
देख रहा प्रत्यक्ष में, हा ! हा ! कहा न जाय ।।195।।

(क्रमशः)

◆◆◆

गतांक के आगे

झांझड़ के बेटे बने संघपति, सुल्तान की इजाजत

संशोधक– मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.

होशंगशाह झांझड़ तथा जैन धर्म के प्रति इतना खुश हो गया था कि उसने झांझड़ के परिवार के प्रत्येक सदस्य को संघ यात्रा निकालने की अनुमति दे दी थी। झांझड़ के चौथे पुत्र पद्मसिंह ने श्री शंखेश्वर तीर्थ के लिये संघ यात्रा का आयोजन किया। यह यात्रा बहुत धूमधाम तथा समारोहपूर्वक सम्पन्न हुई। पद्मसिंह को उत्साहपूर्वक संघपति/संघवी या सिंघई की उपाधि दी गई। आल्हू झांझड़ का पांचवा बेटा था जिसने मंगलापुर तथा जीरापल्ली तीर्थ की यात्राएँ की। इसने सद्व्यय कर जीरापल्ली में एक सभा मण्डप का भी निर्माण करवाया था। झांझड़ परिवार के सत्कार्य यहीं तक सीमित नहीं रहे। उसके छठे पुत्र पाल्हू ने भी अपने आपको किसी से कम साबित नहीं किया। वह भी धर्म कार्यों के लिये खूब योगदान देता था। समाज में सर्वत्र उसके सद्कार्यों की चर्चा होती थी। इसने भी अर्बुदगिरि तथा जीरापल्ली तीर्थ की संघ यात्राएँ आयोजित की तथा आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरिजी के सान्निध्य में इनको ऐतिहासिक सफलता से युक्त बनाया। इन संघ यात्राओं पर पाल्दू ने विपुल धन खर्च किया। झांझड़ के छहों पुत्रों के प्रति होशंगशाह के मन में बड़ी इज्जत थी। वह दुविधा तथा मानसिक तनाव के समय इनसे सलाह मशविरा भी करता था। ये सुल्तान को समझते थे। अपनी मित्रता का लाभ कई हिन्दू राजाओं को बंदीगृह से राहत दिलाने के लिये करते थे। इन्हीं के कहने से सुल्तान होशंगशाह ने राजा केसीदास, बाहड़, लूनार, राजा अगरदास, वारात, राजा हरिराज तथा अन्य कुछ को कैदखाने से स्वतंत्र कर दिया था। ये सभी ब्राह्मण थे लेकिन इतने कट्टर थे कि सुल्तान के सामने झुकने को तैयार नहीं होते थे। झांझड़ के सुपुत्रों ने समझाबुझा कर सुलह का मार्ग बनाया। होशंगशाह के पुत्र का नाम गजनी खाँ था। गजनी खाँ तथा होशंगशाह के मध्य मतभेद उत्पन्न हो गये। गजनी खाँ माण्डवगढ़ से अपने मित्रों के साथ नान्दियाँ ग्राम आ गया। यहाँ गजनी खाँ का एक धनी सेठ से सम्पर्क हो गया। इसका नाम संघरणा था तथा यह भी जैन धर्म का पालन करता था। गजनी खाँ को धन की आवश्यकता थी। उसने संघरणा से धन मांगा। संघरणा ने तीन लाख रुपये (उस समय के मान से, आज कितना मूल्य होता है ?) देना मंजूर किये। दोनों में यह शर्त तय हुई कि जब गजनी खाँ मांडवगढ़ का शासक बनेगा तब यह कर्ज वापस कर देगा। कुछ समय पश्चात् संघरणा ने गजनी खाँ को समझाबुआ कर वापस अपने पिता होशंगशाह के पास भेजा। सेठ ने पिता पुत्र को मिला दिया। इस पर होशंगशाह बहुत खुश हुआ।

◆◆◆

पूजा के दस त्रिक (2)

(मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा.)

प्रणाम त्रिक के तीन प्रकार :–

(1) चाहे जितने दूर से प्रतिमाजी भगवान के दर्शन होवें वहाँ से तुरन्त ही बहुमान पूर्वक दोनों हाथ जोड़कर के नमस्कार करना चाहिये। यह अजंली बद्ध प्रणाम नामक प्रथम भेद है।

(2) तीन प्रदक्षिणा देने के बाद मूल गभारे के पास प्रभुजी के सामने आकर के निसीहि कहने से पूर्व आधा शरीर झुकाकर नमोजिणाणं कहने के बाद द्रव्य पूजा, केशर, पुष्प पूजा करने के लिये गभारे में जाना यह अर्द्धावनन प्रणाम नामक दूसरा भेद है।

(3) जल चंदनादि से विधिपूर्वक द्रव्य पूजा करने के बाद मूल गभारे से बाहर आकर के चैत्यवंदन करने के स्थान में दो हाथ दो, जानु और एक मस्तक ये पांच अंग भूमि के साथ लगाते समय 'इच्छामि खमासमणो वंदिऊं जावणिज्जाए निसीहि आये मत्थएण वदांमि' यह पाठ बोलना चाहिए। यह पंचाग प्रणाम नामक तीसरा भेद है। पूजा त्रिक के तीन प्रकार । श्रावक को तीन 1. प्रभात 2. मध्यान्ह और सायंकाल पूजा करने की शास्त्रों में विधि बतलाई गई है। जैसे प्रभात में शरीर, हाथ, पांव और वस्त्रादि की शुद्धि पूर्वक वासक्षेप की पूजा, मध्यान्ह में सुगंधि जलादिक की अष्टप्रकारी पूजा और सायंकाल धूप, दीपक, आरती से पूजा करने की कही है।

प्रथम– जल, चंदन, कुसुम वगैरह जो प्रभुजी के अंग पर चढ़ाया जाता है यह अंग पूजा नामक पूजा त्रिक का प्रथम भेद है।

दूसरा – धूप दीपक, अक्षत, नैवेद्य, फल वगैरह प्रभुजी के सामने रखकर के भावनाभाई जाती है यह अग्रपूजा नामक पूजात्रिक का दूसरा भेद है।

तीसरी – अंग पूजा और अग्र पूजा किए बाद में अंतःकरण से उल्लासपूर्वक प्रभुजी की गुण स्तवना रूप चैत्यवंदन करना यह भावपूजा नामक पूजात्रिक का तीसरा भेद है।

पूज्य का पूजन करने वाले स्वयं खुद ही पूज्य होते हैं और परम पद को प्राप्त कर सकते हैं। इसलिये परमोपकारी वीतराग प्रभु की पूर्ण श्रद्धा, आस्था एवं शास्त्राज्ञा अनुसार पूजा करनी चाहिए।

◆◆◆

पांचवां स्थान - मोक्ष है

(साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

कभी किसी को ऐसी शंका भी हो जाती है कि मोक्ष नहीं है। जीवकर्ता और भोक्ता हो इससे उसका मोक्ष होना संभव नहीं है, क्योंकि अनंतकाल बीत जाने पर भी कर्म करने रूप दोष आज भी उसमें वर्तमान ही है। शुभ कर्म करे तो उससे देवादि गति में उसका शुभ फल भोगता है और अशुभ कर्म करे तो नरकादि गति में उसका अशुभ फल भोगता है, परन्तु जीव कर्म रहित कहीं भी नहीं हो सकता।

कर्म सहित अनंतकाल बीता, वह तो शुभाशुभ कर्म के प्रति जीव की आसक्ति के कारण बीता, परन्तु उसके प्रति उदासीन होने से उस कर्मफल का छेदन होता है और उससे मोक्ष स्वभाव प्रगट होता है।

देहादि संयोग का अनुक्रम से वियोग तो हुआ करता है, परन्तु उनका फिर से ग्रहण न हो इस तरह वियोग किया जाय, तो सिद्ध स्वरूप मोक्ष स्वभाव प्रगट होता है, और शाश्वत पद में अनंत आत्मानंद भोगा जाता है।

जैनशासन के मूल पाये रूप छह स्थानों में से पाँचवा स्थान 'मोक्ष है।' मोक्ष को सिद्ध करना जितना सरल है, उतना ही कठिन है, मोक्ष को प्राप्त करना।

कितने ही लोगों को यह शंका होती है कि क्या मोक्ष है ? क्योंकि कहा जाता है कि मोक्ष में सुख ही सुख है किन्तु वहाँ कोई भी भौतिक पदार्थ नहीं है। गाड़ी, बंगला, टी.वी., फ्रिज, पैसा आदि कुछ भी नहीं है तो, फिर सुख कैसा?

सुख और दुख जीवन के दो तटवर्ती छोर हैं। एक छोर पर सुविधाओं का अम्बार लगा है, आकाशीय ऊँचाइयों को छूने का प्रयास करती हुई इमारतें हैं, तो दूसरे छोर पर भूख से तड़पते जीवन और मौत के बीच झूलते प्राणियों का बड़ा वर्ग है। झोपड़ियाँ भी जिनके नसीब में नहीं हैं। सामान्यतया इन्हीं दो छोरों के आधार पर सुख और दुख का मापदण्ड किया जाता है। क्या वह व्यक्ति सुखी है जिसके पास सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं?

प्रश्न उभरता है कि क्या सुख की कोई सीमा रेखा है अथवा आकाश की तरह सुख भी अनन्त है। यदि सुख की कोई सीमा नहीं है तो जीवन में सुख के क्षण समाप्त क्यों हो जाते हैं? पूर्णतया सुखी दिखाई देने वाला व्यक्ति भी भीतर से दुखी, तनावग्रस्त एवं बेचैनी का अनुभव करता हुआ क्यों नजर आता है ? इन प्रश्नों पर गहराई से विचार करने पर एक नया चिंतन सामने आता है।

दर्शनशास्त्र का नियम है - जिसमें तारतम्य या मात्रभेद होता है उसका चरम प्रकर्ष भी होता है। सुख-सुविधाओं का तारतम्य देख यह कल्पना की जा सकती है कि अवश्य ही एक सुख ऐसा होना चाहिए जिसका कभी अंत नहीं आता। जिसे प्राप्त कर व्यक्ति कृतार्थ हो जाता है और वह सुख है मोक्ष सुख।

यहाँ हमें सुखों को दो भागों में विभक्त करना होगा। एक है पदार्थ की उपलब्धि से होने वाला सुख और दूसरा है आत्मानुभूति से होने वाला सुख। ज्ञानी भगवन्तों ने भौतिक सुखों को अहितकर, दुःखों की परंपरा बढ़ाने वाले और भयप्रद बताया है। सामान्य सुखों की बात छोड़ भी दें इन्द्र और चक्रवर्ती के

असाधारण सुखों को भी ज्ञानी ने अनित्य और सारहीन बताया है। भौतिक सुविधाओं में आसक्त व्यक्ति इन्द्रियों की सीमा में जीता है। इन्द्रियातीत सुख की वह कल्पना भी नहीं कर सकता है। वह उन सारे तत्वों को सुख की संज्ञा देता है जो इन्द्रियों को तृप्ति प्रदान करे।

किन्तु वह तृप्ति तो क्षणिक होती है। अतृप्ति निरंतर उसकी पृष्ठभूमि पर चल ही रही है।

जैसे अभी भोजन किया और तृप्ति हो गई। व्यक्ति कहता है - खूब खालिया तृप्त हो गया। यदि सचमुच तृप्त हो गया तो फिर खाने की कोई आवश्यकता नहीं है। किन्तु 4-5 घंटे बाद फिर खाएगा। हमें विमर्श करना होगा कि भूख कब लगी ? अतृप्ति का बिंदु कहां है। क्या 5 घंटे बाद खाने की इच्छा पैदा हुई ? बिल्कुल नहीं यदि 5 घंटे तक इच्छा नहीं हुई तो एकदम से कैसे हो गई? जिस क्षण खाना बंद किया उसी क्षण से फिर खाने की इच्छा शुरू हो गई। धीरे-धीरे एक समय ऐसा आया कि फिर से खाने की आवश्यकता हुई। जहाँ तृप्ति हुई वहाँ उसके नीचे अतृप्ति भी चल रही है। जैसे-जैसे सेवन अधिक होगा, अतृप्ति और बढ़ती चली जाएगी।

आदमी बूढ़ा हो गया क्या धन का लोभ मिट गया ? खूब भोगा अब तो मिट गया होगा ? मिटा नहीं और बढ़ गया। युवक को जितना धन का लोभ नहीं होता उतना बूढ़े व्यक्ति में होता है। अतः विषयभोगों से तृप्ति में से तेल निकालने जैसी बात है। पूरी जिन्दगी व्यक्ति सुखों के साधन जुटाने में लगा देता है, किन्तु अफसोस साधन तो यहीं रहते हैं और व्यक्ति परलोक सिधार जाता है।

प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है, प्रत्येक प्राणी हर क्रिया सुख प्राप्ति के लिए करता है। किन्तु संपूर्ण सुख शाश्वत सुख, दुख रहित सुख, अव्याबाध सुख, सर्वश्रेष्ठ सुख तो मोक्ष में ही है। अतः मोक्ष का स्वरूप समझने के पहले, संसार दुःख रूप है यह समझना आवश्यक है। संसार का सुख भी दुख रूप ही है यह मान्यता फिट होने के पश्चात् ही मोक्ष में सुख है यह समझ में आएगा।

पदार्थों के संयोग में सुख मिलता है यह बड़ी भ्रमणा है रात्रि में गहरी नींद में होते हैं तब एक भी भौतिक पदार्थ के संयोग का अनुभव नहीं होता फिर भी सुख का अनुभव होता है कोई उठावे तो उठना अच्छा नहीं लगता। पदार्थों के संयोग के बिना नींद से मिलने वाला सुख तो सामान्य है । मोक्ष में तो असामान्य कोटी का सुख है। नींद तो दर्शनावरणीय कर्म के उदय से होती है, जबकि मोक्ष सर्व कर्म के क्षय से प्राप्त होता है।

मोक्ष के आंशिक सुख की अनुभूति तो अपने को यहाँ भी होती ही है। मोक्ष अर्थात आत्मा के सर्वगुण प्रगट होना। जब क्रोध से आवेषित होते हैं तब सुख का अनुभव करते हैं तो क्षमाशील होते हैं तब?जब अतिकामांध होते हैं तब शांति का अनुभव करते हैं कि निर्विकारी होते हैं तब ? थोड़े भी गुण अंश मात्र प्रगट होते हैं तो आनंद की अनुभूति होती है और वह मोक्ष सुख की आंशिक अनुभूति है। जब अनन्तगुण संपूर्णरूप से प्रगट होते हैं, तब मोक्ष सुख की संपूर्ण अनुभूति होती है। इस प्रकार मोक्ष का सुख मात्र कल्पना का विषय नहीं है। आंशिक रूप से तो अपनी अनुभूति का विषय भी बनता है।

(क्रमशः)

◆◆◆

अहिंसा परमो धर्मः

साध्वी श्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा.

इस संसार में जो भी बुराई है अशांति है, मारकाट है, जहर है, मृत्यु है, वे सभी हिंसा के रूप हैं तथा जहाँ शांति है, प्रेमभाव है जीवनदान है, सहअस्तित्व की बात है वहाँ अहिंसा है। अहिंसा के अन्तर्गत छोटे-बड़े जीवों का भेद नहीं किया जाता है। समस्त जीवराशि के प्रति सम्मान भाव होता है । सभी जीव में एक ही संवेदना अनुभव की जाती है। अहिंसा मानव जीवन के विकास का सर्वोत्कृष्ट साधन है। आज हमारा अस्तित्व अहिंसा की धुरी पर टीका हुआ है। अहिंसा से ही सृष्टि का अस्तित्व रहा हुआ है। इसीलिए सभी प्रकार के दानों में अभयदान का विशेष महत्व रहा हुआ है। सभी धर्मों में अहिंसा को किसी न किसी रूप में स्वीकार किया गया है। जैन धर्म में अहिंसा का अत्यंत सूक्ष्म रूप प्रतिपादित है। अहिंसा परमो धर्मः का नारा दिया गया है। जैनागमों में आचारांग प्रथम आगम ग्रंथ है आचारांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध के प्रथम अध्ययन के प्रथम उद्देशक का नाम शस्त्र परीक्षा है जिसके अन्तर्गत षट्काय जीवों की रक्षा की बात कही गई है। हमें हमारे प्राण अत्यंत प्रिय हैं वैसे ही सभी जीवों को अपने प्राण प्रिय हैं। जैसे हम ही प्राणों का नाश नहीं चाहते हैं। जो व्यवहार हम हमारे लिए नहीं चाहते हैं, वैसा व्यवहार दूसरों के लिए नहीं करना चाहिए। दूसरों को दुख देकर हम कभी सुखी नहीं हो सकते हैं। इसलिए अहिंसा सुख का मार्ग है।

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। यह निरंतर गतिमान है। परिवर्तन की सत्यता में कोई बाधक नहीं बन सकता है। एक समय था जब कल्पवृक्ष से ही व्यक्ति की सारी आवश्यकता की पूर्ति हो जाती थी। व्यक्ति को कोई आरंभ समारंभ नहीं करना पड़ता था। फिर उसमें परिवर्तन आया कल्पवृक्ष समाप्त होने लगे असि - मसि - कृषि का व्यवहार प्रारंभ हुआ। किन्तु पूर्व के लोग संतोषी थे जितनी आवश्यकता होती उतना ही अर्जन करते थे। युग बदलता रहा लोगों की मनोवृत्ति में भी परिवर्तन होता रहा। धन के प्रति लोगों की लालसा अत्यंत उग्र बनी है। आज हिंसा, अहिंसा का कोई विवेक नहीं बचा है। वर्तमान युग तो हिंसा का युग बन गया है। सम्पूर्ण प्रकृति तहस-नहस हो रही है। लोग जंगल काट रहे हैं, नदियां प्रदूषित कर रहे हैं, अपने सहवर्ती प्राणियों के लिए ढेरों से कत्लखाने खोल दिये हैं। निरीह पशुओं की करुण चित्कार से युक्त सौन्दर्य प्रसाधन, चमड़े की वस्तुएँ, यहाँ तक की हमारी रसोई भी निर्दोष नहीं रही है। डिब्बों की सीलबंद तैयार वस्तुओं को शुद्ध शाकाहारी मानना हमारा एक

भ्रम है।

इस हिंसात्मक वातावरण में अपने व्यक्तिगत जीवन में अहिंसा का प्रयोग एक चुनौति बनता जा रहा है। फिर भी एक बात निश्चित है जितनी हिंसा का प्रयोग हम अपने वर्तमान जीवन में करते हैं भविष्य में वह सब ऋण चुकाना होगा। हमारे ग्रन्थों में एक दृष्टान्त आता है। जब कालसौरिक कसाय का देहान्त हो गया तब परिजन उसके पुत्र सुलस को वह हिंसा का व्यापार एवं तलवार सौंपते हैं। सुलस अभयकुमार का मित्र होने के कारण अहिंसा के संस्कारों से अभिषिक्त था। उसने कहा मैं यह हिंसा का कार्य नहीं करूंगा। यह नरकादि दुर्गति एवं अनेक दुःखों का कारण है। परिजन ने कहा उन दुखों में हम भी भागीदार बनेंगे तुम्हें यह कार्य करना होगा। सुलस ने उसी तलवार से अपनी उंगली काट ली और जोर से चिल्लाने लगा कि मुझे बहुत पीड़ा हो रही मेरी थोड़ी पीड़ा आप लोग ले लीजिए। कोई पीड़ा नहीं ले सका। सुलस कहता है यदि आप मेरी पीड़ा नहीं ले सकते हो तो मेरे द्वारा की गई हिंसा के भागीदार भी नहीं बन सकते हो। कहने का अर्थ है कि व्यक्ति अपने जीवन में जितनी अहिंसा का उपयोग करता है वह ऋण उसे ही चुकाना पड़ता है। सभी जीवों के जीवन का हम जितना अधिक सम्मान करेंगे उतना ही सुखद जीवन जीने में सफल हो सकेंगे। हम बिल्कुल ही हिंसा नहीं करें एक भी जीव को नहीं मारें यह संभव नहीं है। जीवन यापन करने हेतु हिंसा अपरिहार्य है। एक कप चाय भी यदि पीना है तो उसको बनाने में छः काय जीव की हिंसा होती है। इसलिए पूर्ण अहिंसात्मक जीवन तो कैसे जी सकते हैं? हम इतना प्रयत्न अवश्य कर सकते हैं कि, अपनी जीवन शैली के अन्तर्गत अनावश्यक हिंसा का त्याग करें। अग्नि, पानी, वनस्पति इलेक्ट्रिक साधनों आदि का प्रयोग विवेकपूर्वक करें। भक्ष्य-अभक्ष्य का विवेक रखें। अपरिग्रह के सिद्धान्त का अधिक से अधिक प्रयोग करें क्योंकि परिग्रह के मूल में हिंसा रही हुई है। पूर्ण अहिंसात्मक स्थिति तो मुक्तावस्था में ही प्राप्त होती है। जब अहिंसक मानसिकता का उत्तरोत्तर विकास होने लगता है तब व्यक्ति को हिंसा खटकने लगती है। तब व्यक्ति संसार के समस्त प्राणियों को अभयदान देने के लिए संयम मार्ग को अपनाता है। संयम जीवन में सूक्ष्म हिंसा का भी त्याग होता है एवं पूर्ण अहिंसा की प्राप्ति का प्रयत्न करता है। संयम जीवन के अन्तर्गत पाँच समिति का विधान है। जिसमें अहिंसा की ही प्रधानता है। प्रथम इर्यासमिति अर्थात नीचे देखकर चलना। चलते वक्त कोई भी जीव जन्तु हमारे पैर के नीचे न आ जाए उसकी हिंसा न हो जाए उसका ध्यान रखना । दूसरी भाषा समिति है इसमें मुनि हित-मित - सत्य शब्दों का ही

प्रयोग करता है। किसी के प्रति कटुवचन का प्रयोग नहीं करता है। कठोर वचनों के प्रयोग से सामने वाले के हृदय को आघात पहुँचता है यह वाचिक हिंसा है। एषणा समिति के अन्तर्गत साधु ऐसे ही आहार पानी को ग्रहण करता है जो उनके निमित्त नहीं बनाया गया है। यदि साधु के निमित्त आहारादि निर्मित किया जाता है तो उसमें होने वाली हिंसा की भागीदारी भी साधु की होती है। अतः साधु घर-घर जाकर गृहस्थ के लिए बने आहार में से थोड़ा-थोड़ा आहार गृहण करते हैं। चौथी है आदानभंड निक्षेपणा समिति जिसमें मुनि कोई वस्तु उठाते हैं या रखते हैं तो पहले भलि प्रकार से देखते हैं कि कोई जीव तो नहीं है तथा रजोहरण से प्रमार्जन करके ही वस्तु को उठाते और रखते हैं जिससे किसी जीव की हिंसा न हो। पांचवीं समिति है पारिष्ठापनिका समिति जिसके अन्तर्गत बाहर डालने योग्य वस्तु को बाहर डालने से पूर्व निर्जीव भूमि का चयन करते हैं जिससे किसी भी जीव की हिंसा न हो। हमारा सम्पूर्ण आचार मार्ग अहिंसा की नींव पर टिका हुआ है। मुनि हो अथवा श्रावक हो उनके लिए जितने भी आचारों का विधान किया गया है उनमें अहिंसा की प्रमुखता रही है।

जिनशासन में अहिंसा का अत्यंत ही सूक्ष्म स्वरूप चित्रित किया गया है। प्राणवध नहीं करना यही मात्र अहिंसा है ऐसा नहीं है। अहिंसा का विस्तार इससे कहीं आगे है। हम अपने बाह्य व्यवहार में अहिंसा का प्रयोग कर भी लें किन्तु मानसिक स्तर पर हम अहिंसक नहीं बन पाते हैं। व्यवहार तो कभी-कभी होता है किन्तु भाव निरन्तर चलते रहते हैं। भावों के स्तर पर एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के प्रति अत्यंत हिंसक बन जाता है। किसी व्यक्ति के साथ झगड़ा हो जाता है। झगड़ा तो कुछ देर के लिए होता है किन्तु यदि द्वेष का संबंध बन जाता है तो भावों में हिंसा निरन्तर चलती रहती है क्योंकि किसी के प्रति राग-द्वेष के भाव रखना किसी का अनिष्ट चिंतन करना यह भी हिंसा है।

रागादीणमणुप्पा अहिंसगत्तं ति देसिदं समये ।
तेसिं च उत्पत्ति हिंसेत्ति जिणेहि णिद्दिट्ठा।।

आत्मा में रागादि भावों का उत्पन्न होना ही हिंसा है और रागादि भावों की उत्पत्ति नहीं होना ही अहिंसा है। हिंसा का परिणाम अशुभ परिणाम है जिससे अशुभ कर्म का बंध होता है अशुभ भाव करने से व्यक्ति का चित्त वर्तमान में भी अशांत रहता है और वह भविष्य में भी दुख पाता है। अहिंसा का भाव शुभ भाव है। शुभ भाव से शुभ कर्म का बंध होता है। अहिंसा का भाव सभी जीवों के प्रति मैत्री का भाव है, इसमें सभी जीवों के प्रति सद्भाव है। अहिंसा के भावों से व्यक्ति वर्तमान में भी चित्त की प्रसन्नता एवं शांति का अनुभव करता है तथा भविष्य में भी सुखद बनता है।

◆◆◆

वैराग्य सज्झाय (2)

साध्वी श्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.

सांज पडे सौ पंखी तरुवर, आवी भेगा थाय -2
सवार पड़ता पोत पोताना, मारग चाल्या जाय-2
चेतन रे ! एक बीजा सौ कर्म संयोगे मलता आ संसार ।।4।।

अर्थात- जिस प्रकार सायंकाल को सभी पक्षी वृक्ष पर आकर इकट्ठे हो जाते हैं और प्रातः काल होते ही सब अपनी-अपनी दिशा में उड़ जाते हैं। उसी प्रकार अन्य-अन्य जगह पैदा हुए लड़के और लड़की का पूर्व ऋणानुबंध के उदय से संयोग हो जाता है। पति - पत्नी बन जाते हैं। पैदा अलग-अलग जगह हुए, मरेंगे भी अलग-अलग स्थान पर और मरकर जाएंगे भी भिन्न-भिन्न स्थान पर लेकिन यह जीव मानता क्या है ? कि यह सब मेरे ही हैं इस प्रकार का भ्रम रहता है। 80-100 वर्ष की जिन्दगी में जब तक कर्म संयोग है जब तक स्वजनादि का साथ रहेगा, जैसे ही आँखें बंद हो जाएंगी अपनी-अपनी दिशा में उड़ जाएंगे।

शान्त सुधारस ग्रंथ में बताते हैं -

पथि पथि विविध पथैः पथिकै : सह कुरुते कः प्रतिबन्धम् ।
निज निज कर्मवशैः स्वजनै सह, किं कुरूवे ममता बन्धम् ।।

हे चेतन !!! जिस प्रकार भिन्न-भिन्न मार्गों में जाने वाले यात्रियों के साथ प्रत्येक मार्ग में कोई भी ज्ञानी पुरुष राग व आसक्ति नहीं करता है ? वैसे ही अपने-अपने शुभ और अशुभ कर्मों के अनुसार यह पुत्र कलत्र आदि कुटुम्बिजनों का संयोग तुझे मिला है उसमें यह सब पुत्र आदि स्वजन मेरे हैं इस प्रकार तुझे मिथ्या विचार नहीं करना चाहिए क्योंकि इस संसार में जितने भी चेतन और जड़ पदार्थ हैं। पुत्र-मित्र-धनादि का संयोग वे सभी समुद्र की लहरों के समान बार-बार उत्पन्न होते हैं और नष्ट होते हैं। यह पदार्थ और तुम्हारे कुटुम्बी अपने-अपने कर्मानुसार भिन्न-भिन्न गतियों में जाएंगे फिर भले ही छः खण्ड वाली पृथ्वी को जीतने वाला चक्रवर्ती क्यूं न हो अत्यंत वैभवशाली और सुख को भोगने वाला राजा भी क्यूं न हो ??? विषय सुख में लीन ऐसा ऐश्वर्य युक्त करोड़पति भी क्यूं न

हों ?? रूप हो या कुरूप हो !! पट्टधारी हो या सामान्य लेकिन यमराज बलपूर्वक अपने वश में कर लेता है, काल अपना कवल बना लेता है, तब उस प्राणी का प्रताप नष्ट हो जाता है उसका चमकता हुआ सितारा अस्त हो जाता है यह संसार ऐसा है कि जहाँ सुख की अवधि इन्टरवल जितनी है और दुख की अवधि पूरे समय जितनी है इसलिए ज्ञानीजन कहते हैं कि इस संसार में सब एक संयुक्त परिवार के रूप में इकट्ठे हुए। सब अपने-अपने रूप बदलते हैं।

शान्त सुधारस ग्रन्थ की संसार भावना में कहते हैं -

अनन्तान् पुद्गलावर्ता- ननन्ताड नंतरूप भृत्।
अनन्तशो भ्रमत्येव, जीवोऽनादि भर्वाणवे ।।5।।

अर्थात- इस अनादि संसार रूपी समुद्र में अनन्तानन्त रूपों को धारण करने वाला यह जीवात्मा अनन्त पुद्गल परावर्तन काल पर्यन्त अनेक बार घूमता ही रहता है।

अंतः हे चेतन !!! किसी भी जड़ चेतन पदार्थ में तू राग-द्वेष मत कर !! व्यर्थ में किसी से मोहित मत हो.... क्योंकि वास्तव में तन-धन-स्वजन आदि को छोड़कर मुझे अकेले ही जाना है, मेरे साथ कोई नहीं आएगा न मैं किसी के साथ जाऊँगा- इस प्रकार हमें बार-बार चिन्तन करना चाहिए।

कुडकपट करी माया जोड़ी, पापनी पोटली बांधी।
भेगु करेलु खूब संभाल्यु, आवी काल नी आंधी ।।
चेतन रे !!! रड़ता-रड़ता जावुं पढशे, कोई नहीं आधार- छोडी जवानु

अर्थात- हे चेतन !अनीति से धन कमरकर, झूठ बोलकर, चोरी करके, माया करके तूने पाप की पोटली बांधी। धन - अलंकार, वस्त्रादि को खूब संभाला, लेकिन काल रूपी तूफान आने पर सब कुछ यहाँ छोड़कर रोते-रोते जाना पड़ेगा फिर किसी का सहारा नहीं, किसी का आधार नहीं ।

मम्मण सेठ के पास में दो बैल थे। दोनों बैल सोने के थे और सींग हीरा-माणेक रत्नों से जड़ित थे। एक बैल का सींग अधूरा रह गया था। इसलिए उस बैल के सींग को पूर्ण करने के लिए गधे के समान मजदूरी करता था। बेटे को भी धन कमाने हेतु परदेश भेजा। पूरी जिंदगी फूटे-टूटे कपड़े पहने, तेल और चोले का भोजन किया। अढ़लक धन संपत्ति होने

पर भी ना खुद के लिए भोगी, ना धर्मकार्य हेतु खर्च करी, लोभ-लालच, छल-कपट करके इतना धन इकट्ठा ही नहीं किया किन्तु उनमें अतिशय मूच्छा और आसक्ति रखी उस कारण से मरकर सालवी नरक में गया। क्या मरण के समय मम्मण सेठ धन संपत्ति साथ में ले गया। इतनी मेहनत करके कमाई, धर्म के लिए भी समय नहीं निकाला उस धन सम्पत्ति को नहीं चाहते हुए भी छोड़कर जाना पड़ेगा। क्योंकि इस संसार में कोई भी अमर होकर नहीं आया है, कोई भी मृत्यु के साथ मित्रता नहीं कर सकता है।

वैराग्य शतक में कहा है-

गयकण्ण चंचलाओ, तिअसचाव सारिच्छं।

विसय सुहं जीवाणुं, बुज्झसु रे जीव ।। मा मुज्झ।।

अर्थात- हे जीव !!! लक्ष्मी हाथी के कान के समान चंचल है और विषयसुख इन्द्र धनुष के समान क्षण भंगुर है। अतः हे मूर्ख प्राणी ।। बोध को प्राप्त कर, अनित्य लक्ष्मी एवं विषय सुख में मोह मत कर/ नहीं तो तुझे इन चारों गति में जन्म - मरण के चक्कर लगाने पड़ेंगे, नरक- तिर्यंच आदि के दुःखों को सहन करना पड़ेगा जिस दुःखों का वर्णन सुनकर आप काँप जाओगे ! परमाधामी देवों के द्वारा आपको भुख-प्यास, ठंडी-गर्मी आदि 10 प्रकार की वेदना को निरंतर भोगना पड़ेगी। अगर तू तिर्यंच गति में जाएगा तो तुझे बोझ उठाना पड़ेगा, पराधीन रहना पड़ेगा, डंडे खाने पड़ेंगे, न खाने का मिलेगा, न रहने को मिलेगा, कभी सुअर बनेगा तो कभी कुत्ता, तो कभी गधा, भैंस, बिल्ली आदि के भवों में अनंत बार अनंत प्रकार की वेदना को तूने सहन किया।

वैराग्य शतक ग्रंथ में बताया है -

तिर्यंचभाव में महाभयंकर अटवी में शिविर ऋतु में शीतल वायु की हजारों लहरियों में पीड़ित हुआ। ग्रीष्म ऋतु में ताप से अत्यन्त तपा हुआ बहुत क्षुधा तृषा से खेद को पाया। वर्षा ऋतु में पर्वतों के झरणों के पानी से बहता हुआ और शीतल वायु से दुग्ध हुआ। इस प्रकार लाखों दुखों से क्लेश को पाते हुए जीव ने अनंत बार मरण के दुःख को प्राप्त किया। हे जीव !!! कई भवों की पुण्यराशि इकट्ठी हुई तब जाकर तूने ।

महामूल्यवान जिनधर्म प्राप्त किया है।

◆◆◆

संकट नाशक, रस परित्याग तप आयंबिल

शान्तिलाल सगरावत, मन्दसौर

रस परित्याग का तप है आयंबिल । प्रभु महावीर से जब किसी व्यक्ति ने पूछा- आपके शिष्य संत-साध्वी वृंद में उत्कृष्ट साधक कौन हैं। भगवान महावीर ने सहजभाव से उत्तर दिया- धनकुमार जैन आगमों में धन्ना अणगार के रूप में प्रतिष्ठित हुए। जिस दिन से उन्होंने दीक्षा अंगीकार की उन्होंने निरन्तर आयंबिल तप की आराधना कर अतिरूक्ष आहार ग्रहण करते थे। वे सूखी रोटी को पानी में नम कर उसे गले के नीचे उतारकर रस परित्याग का तप आयंबिल करते थे।

आयंबिल तप की महानता वासुदेव श्रीकृष्ण और द्वारिकापुरी नगर से जुड़ी हुई है। महान् योगी एवं तपस्वी श्रेष्ठ द्वेपायन ऋषि को यादव कुल के युवकों ने मद्यपान की उन्मत्त अवस्था में अपमानित किया, जिससे कुपित हो उन्होंने द्वारिका नगरी को श्राप दे दिया। वासुदेव श्रीकृष्ण ने महर्षि द्वेपायन से क्षमा मांगी, परन्तु द्वारिका नगरी अभिशप्त ही रही। द्वेपायन ऋषि का श्राप नगरी को दग्ध करने के लिये कच्चे धागे से लटकी तलवार की तरह निरंतर रहा।

ऐसे में प्रतिदिन एक परिवार में एक आयंबिल तप की आराधना होती रही। इस तरह द्वारिका नगरी सुरक्षित रही। एक दिन एक वृद्ध व्यक्ति को आयंबिल करना था पर वह सोचने लगा इतने दिन हो गये अभिशक्त द्वारिका नगरी को नष्ट कोई नहीं कर पाया। अब संकट टल गया, विचार कर उसने आयंबिल तपाराधना नहीं की। इससे अवसर पाकर द्वेपायन ऋषि ने द्वारिका नगरी को जला डाला। द्वारिका नगरी धूँ-धूँ जलने लगी। बैलों के अभाव में श्री कृष्ण और बलराम दोनों अपने माता-पिता को स्वयं खींचकर ला रहे थे कि नगरी का जलता हुआ एक द्वार बैलगाड़ी पर आ गिरा और वहीं पिता वासुदेव और माता देवकी का प्राणांत हो गया। कृष्ण और बलराम के देखते-देखते उनके सामने द्वारिका नगरी का विनाश हो गया।

इस तरह आयंबिल तप की आराधना ने द्वारिका नगरी को जहाँ सुरक्षित रखा वहीं आयंबिल तप से मुख मोड़ने पर उसका विनाश भी हो गया। यह आयंबिल तप की श्रेष्ठता का अनुपम प्रसंग हमारे लिये प्रेरणादायी है।

आयंबिल तप आराधना से मोक्ष, अनुत्तर विमान, देवलोक, उत्तम मनुष्य भव मिलता है, आत्मा परित्तसंसारी सुलभ बोधि-उत्तम मनुष्य चरम शरीरी बनता है, ज्ञान संकट, शील संकट, दीक्षा संकट, रोग संकट, देव संकट, बंधन संकट दूर होता है, कर्मों की निर्जरा होती है, तेजोलब्धि, वैक्रियलब्धि, वीर्यलब्धि, अवधि ज्ञान की प्राप्ति होती है।

यह रस परित्याग आत्मा को परमात्म रूप देता है। आत्मा में दिव्य ज्योत प्रकट करता है, जीवन को निखारता है, परिशुद्ध करता है। इसकी विराटता से हमारा जीवन रिद्धि-सिद्धि परम कल्याणकारिता प्राप्त करता है। ◆◆◆

क्रोध-मुक्ति से कषाय- मुक्ति

कविरत्न डॉ. दिलीप धींग
(निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र)

संसार और संसार की समस्याओं का मूल है कर्म और कर्म का मूल है - कषाय। प्रेम, सरलता, निश्छलता और निरासक्ति जैसे सद्गुण कषायों के द्वारा हरण कर लिये जाते हैं। कषाय मानव को विपन्न बनाकर पतन के गर्त में गिरा देते हैं और लम्बे समय तक उसे वहीं रखते हैं। दशवैकालिक सूत्र (8/37) में कहा गया है-

कोहं माणं च मायं च लोभं च पाववड्ढणं ।

वमे चत्तारि दोसे उ इच्छंतो हियमप्पणो ।

क्रोध, मान, माया व लोभ - ये चारों कषाय जीवन में पाप और सन्ताप बढ़ाते हैं। अपना भला चाहने वालों को इनका त्याग कर देना चाहिये। क्योंकि दशवैकालिक सूत्र (8/38) में कहा गया है-

कोहो पीइं पणासेइ माणो विणयनासणो ।

माया मित्ताणि नासेइ लोहो सव्वविणासणो ।

क्रोध प्रीति का नाश करता है, मान विनय को नष्ट करता है, कपट मित्रता का नाश करता है और लोभ इन सबका नाश कर देता है। भगवती आराधना (1331) में तो यहाँ तक कहा गया कि वात, पित्त आदि विकारों से मानव इतना उन्मत्त (विक्षिप्त) नहीं होता जितना वह कषायों से होता है- होदि कसाउम्मत्तो, उम्मत्तो तध ण पित्तउम्मत्तो । आवश्यक निर्युक्ति (120) में आचार्य भद्रबाहु कहते हैं- ऋण को थोड़ा, घाव को छोटा, आग को तनिक और कषायों को अल्प नहीं मानना चाहिये, क्योंकि ये थोड़े ही बहुत हो जाते हैं।

जैन परम्परा के आचार पक्ष में कषाय-त्याग का अत्यधिक महत्व रहा। कषाय-त्याग को मुख्य मानने से समाज में धार्मिक अन्धविश्वासों व कर्मकाण्डों पर चोट हुई। आचार्य हरिभद्र ने अपनी कृति संबोध सप्तवर्तिका (गाथा 2) में कहा कि किसी पंथ या वाद में मानव का कल्याण नहीं है, कल्याण तो कषायों को छोड़ने में है-

नाऽम्बरत्वे, न सिताम्बरत्वे, न तर्कवादे न च तत्त्ववादे ।

न पक्ष सेवाश्रयणेन मुक्तिः, कषाय मुक्तिः किल मुक्तिरेव।

यह कथन साम्प्रदायिक, सामाजिक व मानवीय एकता की राह प्रशस्त करने

के साथ ही धर्म का आडम्बर- मुक्त स्वरूप का प्रतिपादन करता है। किसी भी प्रकार की साधना, उपासना या तपस्या की आराधना हो, सबका मुख्य लक्ष्य है, कषायों को कम करना।

कषाय चार हैं और उनमें क्रोध प्रथम है। क्रोध कषाय धर्म के प्रथम चरण क्षमा को भारी नुकसान पहुँचाता है। उत्तराध्ययन सूत्र (23/50) में क्रोध को भयंकर अग्नि कहा गया है- **संपज्जलिया घोरा अग्गी चिट्ठइ।** प्रश्नव्याकरण सूत्र (2/2) में कहा गया कि क्रोध की आग में सहिष्णुता, दया, सत्य, शील, संतोष तप, संयम, ज्ञान आदि सद्गुण जलकर भस्म हो जाते हैं। प्राचीन ग्रन्थ ऋषिभाषित (36/13) में कहा गया है-

कोहेण अप्पं डहती परं च, अत्थं च धम्मं च तहेव कामं।

तिव्वं य वेरं पि करेंति क्रोधा, अधमं गतिं वा वि उविंति कोहा।

क्रोध स्वयं को जलाता है, दूसरों को जलाता है। यह धर्म, अर्थ और काम को जलाता है। तीव्र वैर कराने वाला क्रोध जीवन के पतन का कारण है। आचारांग सूत्र (4/3/136) में कहा गया है कि क्रोध आयु को नष्ट करता है। व्यक्ति स्वयं क्रोध नहीं करे,यह एक पक्ष है। साथ ही यह भी आवश्यक है कि वह दूसरों के क्रोध का निमित्त भी न बने। भगवती आराधना (गाथा 1360 एवं 1365) में क्रोध की हानियाँ बताते हुए कहा गया है कि क्रोधग्रस्त मानव का वर्ण नीला पड़ जाता है, वह हतप्रभ हो जाता है तथा उसका सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। व्यग्रता और बेचैनी से उसे शीतकाल में भी प्यास लगने लग जाती है तथा पिशाच- ग्रस्त मनुष्य की तरह काँपने लगता है। क्रोध दुश्मन का उपकार करता है तथा परिवारजनों, मित्रों व अपनों के लिए समस्या का प्रत्यक्ष कारण बनता है।

भगवती सूत्र के 12 वें शतक के 'अतिपात' नामक पाँचवें उद्देशक के तीसरे सूत्र में क्रोध के दस नाम बताये गये हैं- **कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलणे कलहे चंडिक्के भंडणे विवादे।** इन दस नामों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

1. **क्रोध :** गुस्सा करना, आग बबूला हो जाना आदि आवेश की सामान्य प्रवृत्तियाँ क्रोध है।
2. **कोप :** क्रोध उत्पन्न होने के उपरान्त अपने स्वभाव से विचलित हो जाना कोप है। आचार्य अभयदेव के अनुसार क्रोध के उदय को अधिक अभिव्यक्त नहीं करना कोप है।
3. **रोष :** नाराजगी जताना, आवेशपूर्ण स्थिति में रहना, आँखें दिखाना और रूठे हुए रहना रोष है।

4. दोष : स्व - पर से द्वेष या अप्रीति रखना। स्वयं पर अथवा दूसरों पर दोषारोपण करना। स्वयं पर दोषारोपण या क्रोध करते हुए व्यक्ति आत्महत्या कर लेता है। कभी-कभी दूसरों पर आरोप लगाते हुए भी व्यक्ति आत्महत्या कर लेता है। इससे कौटुम्बिक और सामाजिक गौरव नष्ट होता है।

5. अक्षमा : किसी के द्वारा किये हुए अपराध को सहन नहीं करना तथा दूसरों की गलती या भूल को माफ नहीं करना अक्षमा है।

6. संज्वलन : बार-बार क्रोध की आग में जलना संज्वलन है। ईर्ष्या करना और मत्सरभाव रखना भी संज्वलन है।

7. कलह: वैर बढ़ाने वाला व्यवहार और वचन-प्रयोग करना कलह या क्लेश है। अनुचित, अप्रिय, मर्मभेदी, कर्कश भाषा -प्रयोग, वाक्- युद्ध आदि के माध्यम से तनावपूर्ण स्थिति निर्मित करना कलह है।

8. चाण्डिक्य : क्रोध का वीभत्स रूप चांडिक्य है। अति क्रोध की अवस्था में सिर पीटना, बाल नोंचना आदि चांडिक्य है।

9. भण्डन : किसी पर हाथ उठाना, हाथापाई करना या काया से अनुचित व्यवहार करना, लाठी या हथियार से प्रहार करना आदि भण्डन हैं।

10. विवाद : जैसे आग को प्रज्ज्वलित रखने के लिए ईंधन डाला जाता है, वैसे ही झगड़े को कायम रखने के लिए अण्ट-शण्ट बोलना, गाली-गलौज करना, कुतर्क करना, अनावश्यक बहस करना आदि विवाद के रूप हैं।

कसायपाहुड (9/86) में भी क्रोध के दस रूपों का वर्णन है, जिसमें चांडिक्य एवं मंडन के स्थान पर 'वृद्धि' (क्रोध बढ़ाना) एवं 'झंझा' (तीव्र संक्लेश) शब्द उपलब्ध होते हैं। क्रोध के इन दस नामों से सुस्पष्ट पता चलता है कि क्रोध बहुरूपिया है। क्रोध कई रूपों में उपस्थित होता है। वह जब आता है तो अनेक बुराइयाँ साथ लेकर आता है और जाने के बाद भी अपने मारक प्रहार के अप्रिय निशान छोड़ जाता है। क्रोध के उक्त दस रूपों के सन्दर्भ में कह सकते हैं कि क्रोध नहीं करने वाला-

* अपनी अपरिमित प्राण ऊर्जा बचा लेता है। तन-मन से स्वस्थ रहता है।
* सहिष्णु, धैर्यवान, विवेकवान तथा विचारपूर्वक कार्य करने वाला होता है।
* सबका प्रिय तथा सबके आदर का पात्र बन जाता है।
* अच्छी निर्णय क्षमता वाला और दूरदर्शी होता है।
* पारिवारिक विग्रह और क्लेश से बचा रहता है।

क्रोध से बचने वाला कई अवांछनीय समस्याओं से बच जाता है और दूसरों को भी कई समस्याओं से बचा लेता है। क्रोध से मुक्त रहने वाला अपने परिवार, व्यवसाय और समाज के विकास में सहायक बनता है। बौद्धिक, वैचारिक और आध्यात्मिक विकास के लिए क्रोध-मुक्त होना एवं क्षमा धारण करना श्रेयस्कर है।

क्रोध की तरह अन्य कषाय भी खतरनाक होते हैं। व्यक्ति और समाज का अहित करने वाले होते हैं। लेकिन यहाँ क्रोध पर चर्चा का सन्दर्भ है। इसलिए अन्य कषायों की चर्चा को अपवर्जित किया गया है। फिर भी यह कहा जा सकता है कि जो अपने क्रोध को देख या समझ सकता है, वह अपने अन्य कषायों को भी देख और समझकर छोड़ सकता है। इसी प्रकार जो अन्य कषाय (अभिमान, छल और लोभ) को देख या समझ सकता है, वह क्रोध की प्रेक्षा-समीक्षा करके उसे छोड़ सकता है।

वस्तुतः किसी भी व्यक्ति में एक कषाय होता है तो अन्य तीन कषाय भी होते हैं। बस, उनकी तीव्रता और मन्दता का अन्तर रहता है। इसलिए किसी एक कषाय को छोड़ने का संकल्प अन्य कषायों को क्षीण करने में सहायक बन जाता है। अतः व्यक्ति को चाहिये कि वह अपने सर्वाधिक प्रबल कषाय को छोड़ने की प्रतिज्ञा और साधना करे।

चारों ही कषाय अनेक प्रकट और अप्रकट रूपों में व्यक्ति और समाज को घेरे हुए रहते हैं। कषाय विपन्नता, विषमता और विपत्तियों को न्यौता देते हैं, जबकि अकषाय से सम्पन्नता, समता और सम्पत्ति में अभिवृद्धि होती है। कषायों को परास्त करने के लिए क्षमा, मृदुता (विनय), ऋजुता (सरलता) और संतोष जैसे सद्गुणों को धारण करना चाहिये। ये सद्गुण जीवन को रचनात्मक, सकारात्मक, साधनाशील और पुरुषार्थयुक्त बनाते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति सम्पन्नता की दिशा में आगे बढ़ना चाहता है। वह सम्पन्नता महज धन-साधन तक ही सीमित नहीं होनी चाहिये। जीवन के सभी क्षेत्रों में व्यक्तित्व, कृतित्व और साधना का विमल आलोक प्रस्फुटित होना चाहिये। ऐसे सरल, सहज, सजग, सफल, सार्थक और आलोकमय बहुआयामी जीवन के लिए कषायों का परित्याग परम आवश्यक है। तनाव - मुक्ति के लिए भी कषाय-मुक्ति आवश्यक है। कषाय-मुक्त व्यक्ति मुदित, स्नेहिल और प्रबंधन में कुशल होता है। कषाय- मुक्त जीवन में प्रेम, सुख, शान्ति, रिद्धि, सिद्धि, समृद्धि और खुशियों के रंग-बिरंगे फूल खिल उठते हैं। कषाय-मुक्ति से जीवन और जगत् सर्व-मंगल जुड़ा हुआ है। कषाय- मुक्ति से ही मुक्ति का परम लक्ष्य पाया जा सकता है।

◆◆◆

गुरु गुण सप्तपदी

श्री नेमिनिधिश्रीजी म.सा.

अष्ट षष्ठी तमीपाटे, श्री वीरजिनशासने ।
श्रीमद् राजेन्द्र सूरीशः धुरंधरो महामुनिः।।

जिनरेव परं नाथः अन्यगतिः न यत्ह्यदि ।
निश्चलः सूरिराजेन्द्र, कल्यौ धीरो महामुनिः।।

अनर्थकारि चित्तस्य, दमन करणो द्यतः ।
जिताक्षर सूरिराजेन्द्रः कल्यौ दान्तो महामुनिः।।

उपशम रसास्वादे, यस्य मतिः सदा रता।
प्रलीन सूरिराजेन्द्रः, कल्यौ शान्तो महामुनि :।।

परवशमनो ज्ञात्वा, दुःखस्यैकनिबन्धनम् ।
स्ववशः सूरिराजेन्द्रः, कल्यौ स्वरूपौ महामुनिः।।

शुद्धसंयमपक्षार्थे, आहूतं जीवनेन्धनम् ।
संविग्नः सूरिराजेन्द्रः, क्रियोद्धारी महामुनि :।।

यस्य नास्ति परापेक्षा, परभावेषु निस्पृहो ।
निःसङ्गी सूरिराजेन्द्रः कल्यौ तृप्तो महामुनि :।।

सा. श्री अनंतदृष्टाश्रीजी म.सा. की
सुशिष्या श्री मयूरकलाश्रीजी म.सा.की शिष्या

◆◆◆

माधवा चक्रवर्ती

श्रावस्ती के समुद्र विजय राजा की रानी भद्रा के परम पुण्यशील पुत्र का नाम 'माधवा' था। ये भरत क्षेत्र के चक्रवर्ती बने। सांसारिक क्षण-विध्वंसी रमणीय पदार्थों की अस्थिरता व नश्वरता को समझकर अपने पुत्र को सिंहासनासीन कर वे धर्मघोष मुनि के चरणों में दीक्षित हो गये। आयुष्य पूर्णकर सिद्ध गति को प्राप्त हुए।

श्री पुण्य सम्राटनी चतुर्थ पुण्यतिथि निमित्ते

श्री राइंद गुण थई

(छंदः इन्द्रप्रभ)

श्री तपोनिधिश्रीजी म.सा.

वंदितु जीरावल देव देवं थौसामि सोहम्म गणेसरं तं।
णिच्चं जयंतं यअणंत सिस्स, राइंदसूरीस्सर विस्स पूजं ।।

देहस्स कुरं जिणसासणाणं रक्खवत्थ कज्जे पढ़मंम्मि वंदे ।
बज्झत्थ बावे जड सारिसं ऐ, राइंदसूरीस्सर विस्स पूजं ।।

रागाइरुदं सयखंड शीलं, वच्छल्ल-जुतं जिणआणवुत्तं ।
बज्झेक लक्खवं किरियोद्धरट्ठे, बज्झाणुभावे मुकअन्ध सोत्तं ।।

छत्तातरे चामर पालगीए, तिव्वे पलोमे चिय मेरुसत्तं ।
साहुं सयंदास महोधरामि, राइंदसूरीस्सर विस्स पूजं ।।

भिक्खुं अगच्छस्स य तुल्ल-तिण्हं, मुक्खवग्ग-दारे भक्तत्तमेहे
मोहंध - नेत्ते समये थुणामि, राइंदसूरीस्सर विस्स पूजं ।।

मेहे जहा वीर-पहू णमामि, कोसंम्मि ताई थुलभद्दसाहू ।
जे ढुंढगे भातं-मणे जहा म्मि, राइंदसूरीस्सर विस्स पूजं ।।

सड्ढा सुशीला सुलसाव्व पिम्मं, सेवे भवांमांही समत्त पोअं ।
मिच्छारि सीहे अरुहंत सद्दे, राइंदसूरीस्सर विस्स पूजं ।।

आवाय अंतम्मि दुहावहंणं, ए कुच्छियेणं विसयेण मुत्तं ।
णिण्णेह आभं चिय सम्हरामि, राइंदसूरीस्सर विस्स पूजं ।।

मोहाउले जे णिर विक्खव सत्थे, अन्नाणगण्भे समये सरामि ।
दुप्पक्खव सत्तुं पडिमल्ल भूअं, राइंदसूरीस्सर विस्स पूज्जं ।।

संतोवसंतेण तथा जइम्मि, रत्तक्खवगत्ता कह वंछिया भो ।
कोहस्सुदीरा तइआ बुहेणं, सन्नामिउं विण्हु कुमारएणं ।।

किंवा ण तित्थस्स कहा भदंत, एयारिसं जोग-बलिं सिहामि ।
तुट्ठो सयाहं मयुरव्व मेहे, राइंदसूरीस्सर विस्स पूज्जं ।। (जुम्मं)

सा. श्री अनंतदृष्टाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या
श्री मयूरकलाश्रीजी म.सा.की शिष्या

◆◆◆

इंसान की पहचान

एक गुरु अपने शिष्य के लिए औषधि खोजने जंगल में गए। एक शिकारी भी शिकार के लिए वहाँ गया और एक सैनिक भी जंगल का रास्ता भटक गया। तीनों को प्यास लगी। दूर कहीं झोपड़ी दिखाई दी, जिसमें एक दृष्टिहीन व्यक्ति बैठा था। शिकारी वहाँ पहुंचा और बोला 'ए अंधे ! मुझे पानी पिला दे, वरना तीर से तेरा जलपात्र फोड़ दूंगा ।

दृष्टिहीन व्यक्ति ने कहा, 'चल भाग शिकारी कहीं का, नहीं दूंगा पानी ।' उसी के पीछे सैनिक आया और बोला, 'अंधे, पानी पिलाकर मेरी प्यास बुझा । चाहे तो धन और वस्त्र ले ले।' उस व्यक्ति ने चिढ़कर कहा, 'राजा का सैनिक है, मुझे लोभ दिखाता है, जा नहीं मिलेगा पानी ।' तब तक गुरुजी भी वहां पहुंच गए थे । उन्होंने कहा, 'सूरदासजी, थोड़ा-सा जल प्रदान करें, बड़ी कृपा होगी।' दृष्टिहीन व्यक्ति बोला, गुरुदेव, मेरा सौभाग्य है कि आप मेरी कुटिया में पधारे।' उसने गुरुजी को पानी पिलाया। पानी पीकर गुरुजी ने कहा, आप देख नहीं सकते, फिर यह कैसे जान गए कि पहले आया व्यक्ति शिकारी, दूसरा सैनिक और तीसरा मैं, एक अध्यापक हूँ ? वह बोला, 'गुरुजी, बोलचाल से ही इंसान की पहचान हो जाती है। यह सुनकर गुरुजी ने उससे विनती की कि वह शिकारी और सैनिक को भी पानी पिला दे ताकि इनके मन की आँखें भी खुल जाएं ।

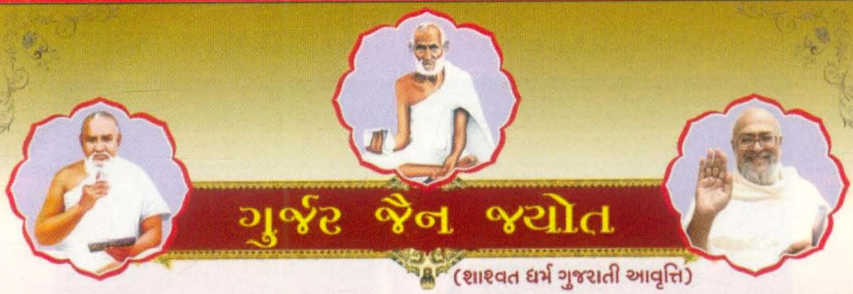

સંપાદક : સુરેશ સંઘવી
ગગનવિહાર સોસાયટી, બી–૧૭૧, નવમા માળે,
ખાનપુર–અમદાવાદ–૦૧. મો. : ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯

ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

અસંવિભાગી

"असंविभागी न हु तस्स मोक्खो ।"

(જે સંવિભાગી નથી, અર્થાત્ મળેલ સામગ્રીઓ સાથીઓ વચ્ચે વહેંચતો નથી તેની મુક્તિ થતી નથી.)

જે એકલો જ પ્રાપ્ત સામગ્રીને ભોગવે છે, તેને ઘણું ઓછું સુખ મળે છે. તેથી ઊલટું જે વ્યક્તિ સાથીઓમાં વહેંચીને અને સૌની સાથે બેસીને પ્રાપ્ત સામગ્રીઓ ઉપભોગ કરે છે, તેને વધારે સુખનો અનુભવ થાય છે. સાથીઓમાં સામગ્રી વહેંચવાની વાત કહેવામાં જેટલી સહેલી લાગે છે, તેટલી કરવામાં સરલ નથી – તેટલી જ કઠણ છે કારણ કે વહેંચવામાં સૌને થોડું થોડું આપીને પોતાને માટે વધારે રાખી લેનારને લોકો સ્વાર્થી સમજશે અને સાથીઓમાં જો કોઈને ઓછું અને કોઈને વધારે ભાગ દેવાશે તો, જેને ઓછું મળ્યું હશે તે પોતાનું અપમાન થયું માનીને નારાજ થશે અને વહેંચવાવાળાને પક્ષપાતી સમજશે. એટલા માટે વહેંચવાવાળાને સરખા ભાગ કરવાની સંમતિ આપવામાં આવી છે, જેથી દરેક સાથીને સરખો ભાગ મળે અને પોતે પણ તેટલો જ લે, જેટલો બીજાને મળ્યો છે. વહેંચવાવાળો કદાચ કાંઈક ઓછું લે તો વાંધો નહિ. તેનાથી તેની પ્રશંસા થશે અને તેની શોભા પણ વધશે, પરંતુ સાથીઓમાં તો દરેકને સરખો હિસ્સો મળવો જોઈએ, કારણ કે અસંવિભાગી મુક્ત થતો નથી.

– દશવૈકાલિક સૂત્ર, ૯/૨/૨૩

પરિષદ પરિવાર સહ.... શ્રી સકળ જૈન સંઘને નૂતન વર્ષાભિનંદન

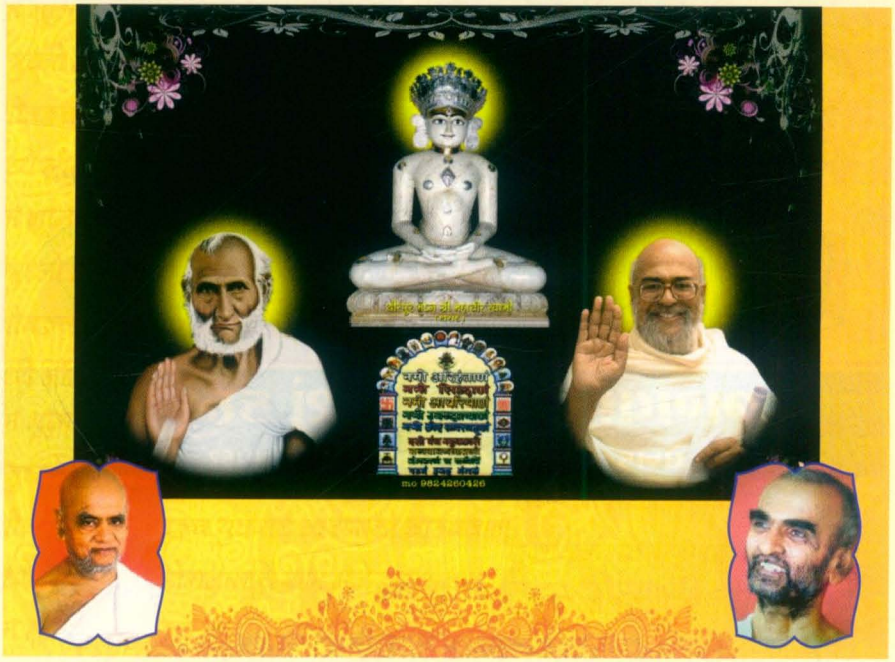

દર વર્ષે દીપ સે જલે દીપનો સંદેશો લઈ આવે છે. દિપાવલીનું પર્વ અને સ્વસ્થ સંપન્ન સંસ્કાર સાથે ધર્મ આરાધના દ્વારા વિશ્વમાં દિવ્ય પ્રકાશ પાથરવાનું આહ્વાન કરે છે. નવા વર્ષની સુપ્રભાત માટે જીનેશ્વર પરમાત્માની અસીમ કૃપા... તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય પ્રાતઃસ્મરણીય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા., પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ, ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા., ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા સમસ્ત શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોના શુભાશુભ આશિર્વાદ મેળવી સંવત ૨૦૭૮ના કારતક સુદ-૧ને શુક્રવાર તા. ૫-૧૧-૨૦૨૧ નવા વર્ષની સુપ્રભાતથી ધર્મ ઉદ્ધમમાં જોડાઈ જીવન સફરની શરૂઆત કરી. આ વરસની દિવાળી પણ સફળ બનાવીએ તેવી અંતઃકરણપૂર્વકની શુભેચ્છા સાથે પરિષદ પરિવાર સહ... શ્રી સકળ જૈન સંઘને **નૂતન વર્ષાભિનંદન.**

લિ. શાશ્વત ધર્મ - ગુર્જર જૈન જયોત પરિવાર

- સુરેશ સંઘવી

પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રી, પૂજ્ય આચાર્યશ્રી આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોના દર્શન-વંદનાર્થે ઉમટ્યું શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોના ભાવિકોનું વાવાઝોડું

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના યાત્રિકો ૧૨ બસો દ્વારા પૂજ્યશ્રીઓના દર્શન-વંદનાર્થે

શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ જાલોર આયોજિત ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ પૂજ્ય શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોનો ગત તા. ૧૯-૭-૨૦૨૧ના રોજ જાલોર નગરે મંગલમય ભવ્યાતિભવ્ય ઐતિહાસિક ચાતુર્માસ પ્રવેશ થયો હતો. જ્યારે ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક પૂજ્ય આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોનો ગત તા. ૨૦-૭-૨૦૨૧ના રોજ શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થ ખાતે મંગલમય ભવ્યાતિભવ્ય ઐતિહાસિક ચાતુર્માસ પ્રવેશ થયો હતો.

પૂજ્યશ્રીઓ પ્રત્યે અખૂટ શ્રદ્ધા ધરાવતા અસંખ્ય ગુરૂ ભક્તોનું જાલોર-શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થ અને પાટણનગરે આવા-ગમન ચાલતું જ રહેતું હોય છે. ગત બે વર્ષ દરમ્યાન કોરાના કાળના કારણે ભક્તો સામુહિકરૂપે પૂજ્યશ્રીઓના દર્શન-વંદનાર્થે જઈ શક્યા ન હતા. બે વર્ષના વિરહ બાદ પર્યુષણ મહાપર્વની ઉજવણી બાદ પૂજ્યશ્રીઓના દર્શન-વંદનાર્થે જઈ શાસનનો મહિમા વધારવા એક એક ભક્ત થનગની રહ્યો હતો અને માળવા, મારવાડ, ગુજરાત સહિત અન્ય રાજ્યોના શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોએ સામુહિક રૂપે પૂજ્યશ્રીઓના દર્શન-વંદનાર્થે જવા આયોજન કર્યુ હતું. દરેક સંઘોના યાત્રિકોની વ્યવસ્થા સચવાઈ રહે તે માટે જાલોર ચાતુર્માસ સમિતિ અને શ્રી ભાંડવપુર તીર્થ ટ્રસ્ટ મંડળ દ્વારા સૂચના અપાઈ હતી અને તે મુજબની તારીખે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોના ભાવિકોનું વાવાઝોડું ઉમટી પડ્યું હતું.

જૈન શ્રેષ્ઠિવર્યોની બહોળી વસતી ધરાવતા એક દંડા અને એક ઝંડાથી પ્રચલિત થરાદનગરના સુખ-સમૃદ્ધિ અને ભક્તિભાવથી છલકાતા પરિવારો વિવિધ નગરો-ગામોમાં સ્થાઈ થયેલ છે. જેમાં મુખ્ય અમદાવાદ - મુંબઈ - સુરત અને ડીસામાં થરાદવાસી પરિવારો મોટી સંખ્યામાં સ્થાઈ થયેલ છે. અલગ-અલગ નગરો-ગામોમાં રહેતા હોવા છતાં થરાદવાસીઓ સ્નેહ સંબંધો જીવંત રાખી શક્યા છે. પૂર્વજોની પુણ્યાઈ અને ગુરૂવર્યોના આશિર્વાદથી

થરાદવાસી પરિવારોમાં એકતાની ભાવના અતૂટ તાંતણે ગુંથાયેલી છે.

ગત તા. ૨૫/૨૬ સપ્ટેમ્બર-૨૦૨૧ના રોજ પૂજ્યશ્રીઓના સામુહિક રૂપે દર્શન-વંદનાર્થે જવા શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ) દ્વારા ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું. તા. ૨૪-૯-૨૦૨૧ની રાત્રિએ લાભાર્થી શ્રી દિનેશભાઈ ખુબચંદભાઈ ઉજમશીભાઈ દેસાઈ પરિવાર સહિત ૧૨ લકઝરી બસો દ્વારા ભાવુક ભક્તોએ જાલોરનગરે જવા મંગલમય પ્રસ્થાન કર્યું હતું. સવારે જાલોર પહોંચી નિત્યકાર્ય પતાવી નવકારશી કરી. બડા ન્યાતી નોહરા ખાતેના ઉપાશ્રયમાં બિરાજમાન ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોના દર્શન-વંદન કરી ધન્યતા અનુભવતી હતી. ત્યારબાદ સ્નાન આદિ કરી પ્રભુ સેવા-પૂજા કરી બપોરનું જમણ પતાવી થોડા આરામ બાદ બપોરે ૨-૩૦ કલાકે લાભાર્થી પરિવાર સાથે સકળ સંઘ સામુહિકરૂપે પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદનાર્થે વાજતે ગાજતે પહોંચ્યો હતો જ્યાં સાંવત્સરિક ક્ષમાપના કરી ગુરૂવંદન કર્યા હતા ત્યાર બાદ પૂજ્યશ્રીઓના મુખકમળ દ્વારા પ્રાસંગિક ચોટદાર પ્રવચનનું શ્રવણ કરી સહુએ જય જયકાર કર્યો હતો. સાંજના ચૌવિહાર કરી જાલોરનગરેથી શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થે જવા પ્રસ્થાન કર્યું હતું. શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ જાલોર ચાતુર્માસ સમિતિ દ્વારા ત્રણેય ટાઈમના ભોજનની સુંદર વ્યવસ્થા કરાઈ હતી જ્યારે બોર્ડીંગ ખાતેની આધુનિક એ.સી. ધર્મશાળામાં દરેક યાત્રિકોએ રાત્રિ મુસાફરીનો થાક ઉતાર્યો હતો અને શ્રી જાલોર સંઘની અનુમોદના કરી હતી. તા. ૨૫-૯-૨૦૨૧ના રોજ અમદાવાદ સંઘના ૫૫૦ યાત્રિકો સહિત અન્ય બે સંઘોના યાત્રિકો પણ પધાર્યા હતા. કુલ ૭૦૦ થી ૮૦૦ ગુરૂભક્તોની શ્રી જાલોર સંઘ દ્વારા જે ભક્તિ કરાઈ હતી તે અનુમોદનીય અને અભિનંદનીય બની રહી હતી.

તા. ૨૫-૯-૨૦૨૧ની રાત્રે ૧૦ કલાકે શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થે પહોંચી જેમને જે વ્યવસ્થા મળી તે મુજબ ૫૫૦ થી અધિક યાત્રિકોએ રાત્રિ વિશ્રામ કર્યો હતો. તા. ૨૬-૯-૨૦૨૧ની સવારે સહુ યાત્રિકોએ નિત્યક્રમ પતાવી પ્રભુ મહાવીર આદિ જિનબિંબો, ગુરૂમંદિર, પુણ્ય સમ્રાટ સમાધિ, યોગિરાજ સમાધિ વિગેરેના દર્શન-વંદન, સેવા-પૂજા કરી નવકારશી કરી હતી ત્યારબાદ જયંતસેન જૈન યાત્રી ધર્મશાળા (વિજયવાડા ભવન)થી થરાદનિવાસી અમદાવાદ સ્થિત આ સંયમ યાત્રા પ્રવાસના લાભાર્થી શ્રી દિનેશભાઈ ખુબચંદભાઈ ઉજમશી પરિવાર સહિત સમસ્ત યાત્રિકોએ વાજતે-ગાજતે શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન સભાભવન ખાતે પહોંચી પૂજ્ય આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા. ના દર્શન - વંદન

સાથે ક્ષમાપના કરી હતી. જ્યાં પૂજ્ય આચાર્યશ્રીએ નવકાર મંત્રોચ્ચાર પૂર્વક પ્રવચનનો પ્રારંભ કર્યો હતો. અહિંસા વિષય પર વિવેચન કરી જીવનમાં અહિંસા, સંયમ અને તપને આચરણમાં લાવવા પ્રેરણા કરી હતી. શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થ જિર્ણોદ્ધારની પૂર્ણાહૂતિ (પ્રતિષ્ઠા પ્રસંગે) સમસ્ત થરાદ સંઘને પૂર્ણ ઉપસ્થિત રહેવા આહ્વાન કર્યું હતું. પુણ્ય સમ્રાટશ્રીના પાયલોટ અને કાર્યદક્ષ મુનિરાજશ્રી આનંદવિજયજી મ.સા.એ ભાંડવપુરની પ્રાચીનતા અને વીરપ્રભુના અતિશય પર પ્રકાશ પાથર્યો હતો.

અ.ભા.શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તથા શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરાએ સર્વ પ્રથમ સકળ સંઘના યાત્રિકો સહિત સાંવત્સરિક ક્ષમાપના કરી આ વર્ષના ચાતુર્માસ આયોજક સંઘવી દુદાજી ચંદાજી કટારીયા પરિવારને અભિનંદન પાઠવી શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થની પ્રતિષ્ઠામાં થરાદ સંઘ તન-મન-ધન અને સેવા સમર્પણ માટે તત્પર રહી પૂજ્યશ્રીની પ્રત્યેક આજ્ઞાનું પાલન કરવા વિશ્વાસ પ્રગટ કર્યો હતો. ચાતુર્માસ આયોજક પરિવાર દ્વારા સંઘનો આભાર વ્યક્ત કર્યો હતો. પેઢી દ્વારા કરાયેલ વ્યવસ્થા માટે શશીભાઈ વોરાએ ધન્યવાદ અર્પિત કર્યા હતા. આ બે દિવસનો યાત્રા પ્રવાસ સુખરૂપ સંપન્ન થયો હતો.

પાટણ નગરે બિરાજમાન શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોના દર્શન-વંદનાર્થે રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ સહિત અમદાવાદ ટ્રસ્ટ મંડળ...

ગુજરાત રાજ્યના ગૃહમંત્રી શ્રી હર્ષભાઈ સંઘવી પણ દર્શન-વંદનાર્થે

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તી પાટણનગરે ચાતુર્માસ બિરાજમાન પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા., પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા તથા શ્રમણી ભગવંત આદિ ઠાણા-૩૪ના દર્શન-વંદનાર્થે અ.ભા.શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ અને શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા સહિત શ્રી હીરાભાઈ ભણસાળી, શ્રી અરવિંદભાઈ દેસાઈ, શ્રી ધીરૂભાઈ પરીખ, શ્રી અરવિંદભાઈ ધરૂ, શ્રી પંકજભાઈ વીરવાડીયા, શ્રી પ્રફુલભાઈ સંઘવી વિગેરે પાટણ નગરે પધાર્યા હતા. રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ

તથા ટ્રસ્ટીમંડળે પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા., પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણા-૩૪ના દર્શન-વંદન કરી આશીર્વાદ મેળવ્યા હતા. પાટણનગરમાં ત્રિસ્તુતિક સમુદાય સહિત અનેક સમુદાયના શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોના ધાર્મિક અધ્યયન સ્થળ શ્રી સિદ્ધહેમ જ્ઞાનપીઠ પર જઈ ધાર્મિક અધ્યયનમાં સહાયક પંડિતવર્ય શ્રી ચંદ્રકાન્તભાઈ સંઘવી દ્વારા પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોના ચાલી રહેલ ધાર્મિક અધ્યયનની જાણકારી પ્રાપ્ત કરી હતી.

આ પ્રસંગે શ્રી અમદાવાદ ટ્રસ્ટ મંડળ દ્વારા પંડિતવર્ય અને સહાયક ભાઈ-બહેનોનું બહુમાન કરાયું હતું. શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ) શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોના ધાર્મિક અધ્યયનમાં સહાયક બનવામાં અગ્રેસર રહેલ છે.

પૂર્વ સમયમાં પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ને મુનિ અવસ્થામાં ધાર્મિક અધ્યન કરાવવામાં ત્રણ વર્ષથી અધિક સમય સુધી અમદાવાદ સંઘનું અનુમોદનીય યોગદાન રહ્યું હતું. પ્રતિ વર્ષ પંડિતવર્યોની વ્યવસ્થા કરી સમુદાયના અનેક શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોને ધાર્મિક અધ્યન કરાવવાનો ઉત્તમ લાભ અમદાવાદ સંઘ પ્રાપ્ત કરી રહેલ છે. પાટણનગરમાં બિરાજમાન શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોના ધાર્મિક અધ્યનમાં સહાયક બનવાની ભાવના વ્યક્ત કરવામાં શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ) સદાય તત્પર રહે છે.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)એ કોરોના કાળના પ્રારંભના બે માસ સુધી પાટણનગરમાં બિરાજમાન બધા જ સમુદાયના શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોની ભક્તિ અને ધાર્મિક અધ્યન તથા અધ્યનરત મુમુક્ષુ ભાઈ-બહેનો સહિત સાધર્મિક ભક્તિનો લાભ લીધો હતો. જે પાટણ જૈન સંઘના બધા જ સમુદાયમાં અનુમોદનીય રહ્યો હતો.

શ્રી અમદાવાદ ટ્રસ્ટ મંડળે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણમાં સાધારણ ખાતામાં રકમ રખાવી લાભ લીધો હતો. શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણે સહુનો આભાર માન્યો હતો. પાટણનગરે પૂજ્ય મુનિરાજ ભગવંતો, શ્રમણી ભગવંતોના દર્શન-વંદનાર્થે સાંવત્સરિક ક્ષમાયાચના માટે શ્રી સંઘો-પરિષદ પદાધિકારીઓ અને ગુરૂભક્તોનું પ્રતિદિવસ આવા-ગમન થઈ રહ્યું છે. તાજેતરમાં ગુજરાત રાજ્યના ગૃહમંત્રી શ્રી હર્ષભાઈ સંઘવી પણ પધાર્યા હતા અને શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોના દર્શન-વંદન કરી આશિર્વાદ મેળવ્યા હતા. સમસ્ત શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતો અધ્યનરત બની સુખશાતામાં બિરાજમાન છે.

શ્રી નિરાગરસાશ્રી પ્રથમ શતાવધાની સાધ્વીજીશ્રી

તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા., પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ તથા ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આશિર્વાદથી મંદસૌર નગરમાં ચાતુર્માસ બિરાજમાન પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી ડૉ. અમૃતરસાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી નિરાગરસાશ્રીજી મ.સા.ને શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘની પ્રથમ શતાવધાની સાધ્વીજી થવાનું ગૌરવ પ્રાપ્ત થયું છે. આ અવસરે કાર્યક્રમનું આયોજન કરાયું હતું. જેનું સફળ સંચાલન ઉજ્જૈન નિવાસી સુશ્રાવકશ્રી અભિષેક શેઠીયાએ કર્યું હતું. ગચ્છાધિપતિ અને આચાર્યશ્રીએ સાધ્વીજીના શતાવધાની ગૌરવ પ્રાપ્ત પર આશિર્વાદ પ્રદાન કર્યા હતા. આ કાર્યક્રમમાં પરિષદના રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી શ્રી સુધિરજી લોઢા, રાષ્ટ્રીય મંત્રીશ્રી સંજયજી કોઠારી અને નમકમંડી - ઉજ્જૈન શાખા પરિષદ અધ્યક્ષ શ્રી હુમકચંદજી ચૌરડીયા તથા મંદસૌરશ્રી સંઘના ગણમાન્ય સમાજજનો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

ટૂંકાણમાં... સુરત

શ્રી સૌધર્મ બૃહતપગોચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ સુરત - અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ પરિવાર સુરત (થરાદવાળા)ના તત્વાધાનમાં શ્રુત પ્રભાવત મુનિરાજશ્રી વૈભવરત્નવિજયજી મ.સા. આદિઠાણા તેમજ પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી અનેકાંતલતાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણાની નિશ્રામાં પૂર્ણ માહિતી ન મળતાં યોજાયેલા કાર્યક્રમોની વિગત ટૂંકાણમાં....

પાલમધ્યે તા. ૨૨-૯-૨૦૨૧ ચૈત્ય પરિપાટી

લાભાર્થી : વોહેરા રસીલાબેન બાબુલાલ જયંતિલાલ પરિવાર

અભ્યુદય પૌષધ શિબિર તા. ૧-૨-૩ ઓક્ટોબર ૧૦ થી ૨૨ વર્ષીય ચૈત્ય પરિપાટી તા. ૨-૧૦-૨૦૨૧

લાભાર્થી : અદાણી અમૃતલાલ મોહનલાલ પરિવાર

પર્યુષણ પર્વનું શ્રીસંઘનું પરમ કર્તવ્ય શ્રી સંઘ સ્વામી વાત્સલ્ય, તા. ૩-૧૦-૨૧

લાભાર્થી : વોહેરા હાલચંદભાઈ દીપચંદભાઈ પરિવાર

આસો માસની શાશ્વત નવપદ ઓળી આરાધના તા. ૧૨ ઓક્ટોબર થી ૨૦ ઓક્ટોબર

લાભાર્થી : આસો માસની કાયમી ઓળી ભણસાળી કાંતિલાલ અમુલખભાઇ પરિવાર

૬ થી ૨૦ વર્ષની બાળક–બાલિકા એની સામુહિક અષ્ટ પ્રકારી પૂજા તા. ૧૭–૧૦–૨૧

લાભાર્થી : વોહેરા સવિતાબેન કેશવલાલ જીતમલભાઇ પરિવાર

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના તત્વાધાનમાં

અદાણી શાંતાબેન શાંતિલાલ ભુદરમલભાઈ પરિવાર દ્વારા આયોજિત શાશ્વતી નવપદની ઓળી આરાધના સંપન્ન

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના તત્વાધાનમાં અદાણી શાંતાબેન શાંતિલાલ ભુદરમલભાઈ પરિવાર દ્વારા આયોજિત શાશ્વતી નવપદની ઓળીનો પ્રારંભ સંવત ૨૦૭૭ના આસો સુદ – ૭ ને મંગળવાર તા. ૧૨-૧૦-૨૦૨૧ના રોજથી થયો હતો. થરાદવાસીઓની એકતા માટેની પ્રખ્યાતિ પ્રથમથી જ રહેલી છે. ઉચ્ચકોટીની ઉદારતા સાથે આ આયોજકના આયોજનને ચાર ચાંદ લગાવવાની અદાણી પરિવારની ભાવનાને સાકાર કરવા અને અદ્‌ભૂત સફળતા અપાવવા અદાણી પરિવાર સાથે આરાધકોની સેવાભક્તિ કરવા મોટી સંખ્યામાં સમાજજનો જોડાયા હતા. આ ભવ્ય આયોજનમાં 300 જેટલા ઓળી આરાધકો જોડાયા હતા. પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના અંતેવાસી પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા.એ ઓળી તપ આરાધકોની ભાવનાને બુલંદ બનાવી હતી. સાચા અર્થમાં સંત બનીને ધાર્મિકતાનો ધોધ વરસાવ્યો હતો. પૂર્વ ભવોમાં અનંતવાર જન્મ ધારણ કરી રહેલા પાપોની નિર્જરા માટે પૂજ્ય મુનિરાજશ્રીના મુખકમળ દ્વારા અપાયેલ માર્મિક વ્યાખ્યાનથી પ્રેરાઈ 300 જેટલા આરાધકો ઓળી આરાધનમાં જોડાયા હતા. આરાધકોને કોઈ જ તકલીફ ના પડે તે માટે બે પંગતની વ્યવસ્થા કરાઈ હતી. ઓળી આરાધનાના નવેય દિવસ અને પારણા ટાણે અપૂર્વ કોટીની ઉદારતા સાથે અદાણી પરિવારની અનુમોદનીય સેવાભક્તિ અને સંઘ ભક્તિ જોઈ આખો સમાજ અભિભૂત થઈ ગયો હતો. અદાણી પરિવાર તથા સગા-સ્નેહીઓ તરફથી રૂ।. ૭૬૦ના કવર દ્વારા આરાધકોનું બહુમાન કરાયું હતું.

અવંતિકા નગરી (ઉજ્જૈન નયાપુરા)ની પાવન ધન્યધરા પર ક્ષમાપના પર્વ અને વિવિધ તપારાધના અનુમોદનાર્થે તથા તપસ્વીરત્ના પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી રશ્મિપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની ૭૬મી ઓળીની પૂર્ણાહૂતિ નિમિત્તે ભવ્યાતિભવ્ય અષ્ટાન્હિકા મહોત્સવ સંપન્ન

શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન શ્રી સંઘ ઉજ્જૈન નયાપુરા અને ચાતુર્માસ સમિતિના તત્વાધાનમાં પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીની માલવમણી વયોવૃદ્ધ પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની પ્રશિષ્યા અને વચનસિદ્ધ સરલ સ્વભાવી પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી કલ્પલતાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા તપસ્વીરત્ના પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી વિદ્‌વદગુણાશ્રીજી મ.સા, તપસ્વીરત્ના પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી રશ્મિપ્રભાશ્રીજી મ.સા., આદિ ઠાણા ઉજ્જૈન (નયાપુરા)નગરે ઐતિહાસિક ચાતુર્માસ સંપન્ન કરવા જઇ રહ્યાં છે.

પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોના ઐતિહાસિક ચાતુર્માસ અને વિવિધ શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમોથી ઉજ્જૈન નયાપુર નગરની પુણ્યવંતી ધરા ગાજી ઉઠી છે. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોના ચાતુર્માસ પ્રવેશથી જ શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ ઉજ્જૈન નયાપુરામાં ચોથો આરો વર્તાતો હોય તેવું ધર્મમય વાતાવરણ છવાઇ ગયું છે. ચાતુર્માસની શરૂઆતથી જ એક પછી એક ઐતિહાસિક શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમો અને તપ-આરાધનાના વિવિધ દશ્યો સર્જાઇ રહ્યા છે.

તા. ૨૦-૯-૨૦૨૧ના રોજથી તા. ૨૭-૯-૨૦૨૧ના રોજ દરમ્યાન ક્ષમાપના પર્વ અને વિવિધ તપારાધના અનુમોદનાર્થે તથા તપસ્વીરત્ના પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી રશ્મિપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની ૭૬મી ઓળીની પૂર્ણાહૂતિ નિમિત્તે ભવ્યાતિભવ્ય અષ્ટાન્હિકા મહોત્સવ સંપન્ન થયો હતો.

-: ચાતુર્માસિક કાર્યક્રમોની ઝલક :-

ચાતુર્માસ ભવ્ય મંગલ પ્રવેશ : નવકારશીના લાભાર્થી પીપાડા પરિવાર

કરૂણા દિવસે અબોલ જીવોની આત્મશાંતિ માટે ૧૨૫ આયંબિલ :

કાર્યક્રમના લાભાર્થી રાજગઢ નિવાસી બાફના પરિવાર તથા ચતર ચપલોદ પરિવાર

ગુરૂપૂર્ણિમા દિવસે ગુરૂપદ મહાપૂજન : લાભાર્થી ગાદિયા પરિવાર

શ્રી નેમિનાથ ભગવાન જન્મ કલ્યાણક મહોત્સવ : પ્રસ્તુતિ શ્રી જયંત જ્યોતિ બહુ પરિષદ

શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ ભગવાનના અઠ્ઠમ : દર રવિવારે બાળકોની શિબિર

નવકાર આરાધના એકાસણા સાથે : શ્રી નવકાર મહામંત્રની આરાધના દરમ્યાન

અડસઠ અક્ષર પર પુણ્ય સમ્રાટ દ્વારા રચિત અડસઠ તીર્થની ભાવયાત્રા નવદિવસ નવ સંઘપતિ દ્વારા, અડસઠ દિપક દ્વારા ભવ્ય આરતી. એકાસણાના પારણાના લાભાર્થી ચત્તર ચપલોદ પરિવાર

પર્યુષણ મહાપર્વની મંગલમય આરાધના અને સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ

પ્રભુ મહાવીર જન્મવાંચન અને સ્વામી વાત્સલ્ય :

શ્રી કુમારપાળ રાજા દ્વારા પરમાત્માની આરતી :

લાભાર્થી - ચિરોલા નિવાસી લુંક્કડ પરિવાર

બહુમાન : અઠ્ઠમથી ઉપરના સમસ્ત તપસ્વીઓ : લાભાર્થી સકલેચા પરિવાર

તપસ્વીઓના પારણા : લાભાર્થી ચત્તર ચપલોદ પરિવાર

દાદા અવંતિ પાર્શ્વનાથજીની ૧૦૮ પદ યાત્રા : તા. ૧૩-૯-૨૦૨૧થી પ્રારંભ, યાત્રાની પૂર્ણાહૂતિ પર વિશિષ્ઠ બહુમાન, ભક્તિમય સંધ્યામાં સમાજના આચાર્યશ્રી, સાધ્વીજી અને સમાજજનોને ભાવાંજલિ

ક્ષમાયાચના :

અષ્ટાન્હિકા મહોત્સવ

પ્રથમ દિવસ : તા. ૨૦-૯-૨૦૨૧ સોમવાર

પુણ્ય સમ્રાટ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેનસૂરિ ગુરૂપદ મહાપૂજન

લાભાર્થી : અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન મહિલા પરિષદ નયાપુરા, ઉજ્જૈન

દ્વિતીય દિવસ : તા. ૨૧-૯-૨૦૨૧ મંગળવાર

અઢાર અભિષેક મહાપૂજન : લાભાર્થી : અઢાર ભાગ્યશાળી પરિવારો

તૃતિય દિવસ : તા. ૨૨-૯-૨૦૨૧ બુધવાર

શ્રી ગૌતમસ્વામી મહાપૂજન : લાભાર્થી : ખેડાવદા નિવાસી સમસ્ત સકલેચા પરિવાર

ચતુર્થ દિવસ : તા. ૨૩-૯-૨૦૨૧ ગુરૂવાર

શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વર ગુરૂપદ મહાપૂજન

લાભાર્થી : ઘોડાવન નિવાસી પગારિયા પરિવાર

પંચમ દિવસ : તા. ૨૪-૯-૨૦૨૧, શુક્રવાર, શ્રી સિદ્ધચક્ર મહાપૂજન

લાભાર્થી : ઘોડાવન નિવાસી પગારિયા પરિવાર

ષષ્ટમ દિવસ : તા., ૨૫-૯-૨૦૨૧, શનિવાર

શ્રી ૧૦૮ પાર્શ્વનાથ મહાપૂજન : સાંજે ગિરીવધામણા

લાભાર્થી : ચિરોલા નિવાસી લુંક્કડ પરિવાર

સપ્તમ અને અષ્ટમ દિવસ : તા. ૨૬ અને ૨૭-૯-૨૦૨૧ રવિવાર-સોમવાર

શત્રુંજય પહાડની રચના સાથે શ્રી શત્રુંજય મહાતીર્થની ભાવ યાત્રા

શ્રી આદિનાથ પંચ કલ્યાણક પૂજા

તા. ૨૬-૯-૨૦૨૧ રવિવારના રોજ જૈન ઓસવાલ ધર્મશાળામાં સ્વામી વાત્સલ્ય
લાભાર્થી : ભાટચલાના નિવાસી ગિરિયા પરિવાર

તપસ્વીરત્ના પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી વિદ્વદગુણાશ્રીજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી તપસ્વી રત્ના પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી રશ્મિપ્રભાશ્રીજી મ.સા. ૭૬મી ઓળી પારણાનો કાર્યક્રમ સંપન્ન

પારણાનો ચઢાવો વિક્રમ સર્જક : એક લાખ સત્તર હજાર બોલાયો હતો પારણુ કરાવવાનો લાભ ગિરિયા પરિવારે લીધો હતો

(૧) ખીર એકાસણા (૨) દિપક એકાસણા (૩) આસો માસની શાશ્વતી ઓળી, (૪) દીપાવલી મહાપર્વ નિર્વાણ મહોત્સવ અને છઠ્ઠ તપની આરાધના (૫) તા. ૫-૧૧-૨૦૨૧ સવારે ૫.૩૦ કલાકે ગૌતમ રાસ અને મહા માંગલિક (૬) ઉજ્જૈનથી અલૌકિક પાર્શ્વનાથ હાસામપુર છરી પાલિત સંઘ (૭) નયાપુરાથી ભૈરવગઢ ચૈત્ય પરિપાટી, નવકારશી લાભાર્થી ધાર નિવાસી સકલેચા પરિવાર

-: વિશેષ :-

તપસ્વી રત્ના પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી રશ્મિપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની ૭૬મી ઓળી અને સમસ્ત તપસ્વીઓના ઉપલક્ષમાં ચોવીસીનું આયોજન. લાભાર્થી : અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક/મહિલા અને તરૂણ પરિષદ નયાપુરા ઉજ્જૈન

જય જિનેન્દ્રના લાભાર્થી : બાલોદા નિવાસી સકલેચા પરિવાર, શ્રી ત્રિસ્તુતિક સંઘના અધ્યક્ષ શ્રી સુરેશજી પગારિયા તથા ચાતુર્માસ સમિતિ અધ્યક્ષ શ્રી કપિલજી સકલેચાના નેતૃત્વમાં યોજાયેલ શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમોની જેટલી અનુમોદના કરીએ તેટલી ઓછી છે.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ) ખાનપુર જૈન સંઘમાં ઓજસ્વી અને તેજસ્વી આભને આંબતા ઉત્સાહ સાથે માતૃ-પિતૃ વંદના કાર્યક્રમ અને ચૈત્ય પરિપાટી કાર્યક્રમ સંપન્ન

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ) ખાનપુર જૈન સંઘ દ્વારા ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીની તપસ્વીરત્ના પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી શશીકલાશ્રીજી મ.સા.ની પ્રશિષ્યા અને પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી અમિતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી

ભાગ્યકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૩ તુલસી વિહાર ખાનપુર અમદાવાદ નગરે ચાતુર્માસ સંપન્ન કરવા જઈ રહ્યા છે. પર્યુષણ મહાપર્વ અગાઉ સંપન્ન થયેલ કાર્યક્રમોની પ્રસ્તુતિ સપ્ટેમ્બર માસ અંકમાં કરાઈ હતી. જ્યારે સંવત ૨૦૭૭ના ભાદરવા સુદ ૧૪ ને રવિવાર તા. ૧૯-૯-૨૦૨૧ના રોજ પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી ભાગ્યકલાશ્રીજી મ.સા.ની પ્રેરણા અને નિશ્રામાં ઓજસ્વી અને તેજસ્વી આભને આંબતા ઉત્સાહ સાથે મેહુલભાઈ રૂપાડા (ઝાલના)ના વ્યક્તવ્ય દ્વારા માતૃ-પિતૃ વંદનાનો ભવ્ય કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. ચોમાસાની ચૌદસથી પર્યુષણ પર દરમ્યાન એક આરાધકે ૧૫૧ સામાયિક કરવાના હતા. જેમાં મોટી સંખ્યામાં આરાધકો જોડાયા હતા. ૧૫૧ સામાયિકના આરાધકોનું બહુમાન કરવાનો લાભ પ્રજાપતિ અરવિંદભાઈ શંકરલાલ આંગડીયાવાળા (મહેસાણા) અમદાવાદે લીધો હતો. નવ દિવસીય શિબિરનો લાભ વોરા કીર્તિલાલ હાલચંદભાઈ (ગાંધીધામ) પરિવારે લીધો હતો. માતૃ-પિતૃ વંદના કાર્યક્રમનો લાભ ધરૂ મફતલાલ હાલચંદભાઈ પરિવારે લીધો હતો અને પ્રભાવનાનો લાભ એક ગુરૂભક્ત તથા વોહેરા મફતલાલ અમુલખભાઈ મિયાગામવાળા પરિવારે લીધો હતો. સંવત ૨૦૭૭ના ભાદરવા વદ-૨ને ગુરૂવાર તા. ૨૩-૯-૨૦૨૧ના રોજ ભવ્યાતિભવ્ય ચૈત્ય પરિપાટીનું આયોજન કરાયું હતું. વહેલી સવારે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી ભાગ્યકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણાની નિશ્રામાં ૭૦૦થી અધિક સમાજજનોની હોંશિલી હાજરીમાં વાજતે-ગાજતે તુલસી વિહારના ગુરૂમંદિરથી આ ચૈત્ય પરિપાટીએ મંગલમય પ્રસ્થાન કર્યું હતું. પ્રથમ ગગનવિહાર સોસાયટી સ્થિત શ્રી કલિકુંડ પાર્શ્વનાથ જિનાલય ને જુહારી શ્રી નેમિનાથ જિનાલય થઈ ઘી કાંટા સ્થિત શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ જિનાલય, લાંબેશ્વરની પોળ સ્થિત જિનાલય, હાંલ્લા પોળ સ્થિત જિનાલય, શ્રી જગવલ્લભ પાર્શ્વનાથ જિનાલય, પાંજરાપોળ સ્થિત મૂળેવા પાર્શ્વનાથ જિનાલય, રતનપોળ ગોલવાડ સ્થિત શ્રી મુનિસુવ્રત સ્વામી જિનાલય વિગેરે જિનાલયમાં બિરાજમાન જિનેશ્વર પરમાત્માના દર્શન-વંદન કરી આ ચૈત્ય પરિપાટી રતનપોળ, હાથીખાના સ્થિત શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાનમંદિર ખાતે પહોંચી હતી અને ત્યાં પરિવર્તિત થઈ ધર્મ સભામાં ફેરવાઈ હતી. ત્યાં પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી ભાગ્યકલાશ્રીજી મ.સાએ પ્રાસંગિક પ્રવચન ફરવાવી માંગલિક સંભળાવ્યું હતું. પાંજરાપોળ હઠીસિંહ કેસરીસિંહની વાડીમાં નવકારશીનું આયોજન કરાયું હતું. જેનો ભાવુક ભક્તોએ લાભ લીધો હતો. આ ચૈત્ય પરિપાટીનો સંપૂર્ણ લાભ ઉદરાણા નિવાસી દોશી ભુદરમલ રાયચંદભાઈ પરિવાર તથા દોશી સવિતાબેન વાઘજીભાઈ પરિવારે લીધો હતો. ઓજસ્વી અને તેજસ્વી આભને આંબતા ઉત્સાહ સાથે મોટી સંખ્યામાં ચૈત્ય પરિપાટીમાં જોડાયેલા શ્રદ્ધાવંત ભક્તોએ ઘણા ચૈત્યોના દર્શન-વંદન કરી ધન્યતા અનુભવી હતી.

कुमकुम सने पगलिये

मंदसौर में महाशतावधान के प्रदर्शन से नगर हैरान

साध्वीजी को शतावधानी की उपाधि अर्पित

मंदसौर। इस बार त्रिस्तुतिक जैन संघ द्वारा करवाये गये चातुर्मास में विद्वान् साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी म. आदि ठाणा की धूम पूरे नगर में मची हुई है। चातुर्मास के पहले दिन से तप, जप, तथा जिन वचन प्रवचन का लाभ अच्छी संख्या में उठाया गया।

त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के स्थानीय अध्यक्ष श्री गजेन्द्र कुमारजी हींगड़, राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा तथा चातुर्मास समिति के अध्यक्ष व परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुधीर लोढ़ा ने बताया कि साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी आदि ठाणा के सान्निध्य में बहुमान चातुर्मास में 8 मासखमण, 141 अट्ठाई तप तथा 11, 14, 16 आदि उपवासों की तपश्चर्या के बहुमान कार्यक्रम सामूहिक तथा पारिवारिक रूप से लगातार होते रहे। इसी तारतम्य में पर्युषण पर्व की आराधना के पश्चात् अष्टान्हिका महोत्सव हुआ जिसमें विभिन्न बड़ी पूजाएँ लाभार्थियों की ओर से पढ़ाई गई। उपसंहार में साध्वीजी की निश्रा में नवग्रह, अष्टमंगल तथा दशदिक्पाल पाटल पूजन तथा वृहद् श्री शांतिस्नात्र पूजा हुई जिसमें आठ दिन तक श्री अजितनाथजी का मंदिर भक्ति भावों से गूंजता रहा। श्रद्धालुओं ने पूरे उल्लास से जिन दर्शन पूजन तथा अनुष्ठानिक क्रियाएँ पूर्ण की। छह दिनों तक प्रतिदिन साधर्मीवात्सल्य हुए। पर्युषण के पश्चात् चैत्यप्रवृत्ति का आयोजन भी हुआ जिस दिन पूज्य साध्वी मंडल तथा श्रावक-श्राविकाओं के समूह ने चार मंदिरों श्री अजितनाथजी, श्री पार्श्व पद्मावती, श्री आदिनाथजी नयापुरा तथा श्री नवलखा पार्श्वनाथजी में दर्शन- चैत्यवंदन किया। अंतिम दिन जैन महाविद्यालय के प्रांगण में नगर की पूरी त्रिस्तुतिक समाज का स्वधर्मीवात्सल्य श्रीसंघ व चातुर्मास समिति की ओर से हुआ जिसमें महोत्सव के विभिन्न लाभार्थियों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रमों के मध्य सार्वजनिक रूप से श्री संजय गांधी उद्यान के पं. मदनलाल जोशी सभागार में शतावधान का प्रदर्शन साध्वी श्री निरागरसाश्रीजी ने सफलता पूर्वक कर सैंकड़ों नरनारियों को हैरान कर दिया। साध्वीजी ने अपनी स्मरण शक्ति तथा ध्यान शक्ति का अद्वितीय प्रदर्शन किया। ऐसा कार्यक्रम मंदसौर नगर में ही

पहली बार हुआ। नागरिकों ने इसकी खूब सराहना की।

त्रिस्तुतिक श्रीसंघ द्वारा साध्वी श्री निराग रसाश्रीजी म. को शतावधानी की उपाधि से अलंकृत किया गया व तत्सम्बन्धी प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया। विगत 16 अक्टूबर को श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ की परीक्षाओं के पुरस्कार साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी म. के सान्निध्य में वितरित किये गये। छात्र-छात्राओं को श्री गजेन्द्रकुमारजी हींगड़ की ओर से भी नकद राशि के पुरस्कार दिये गये।

मुनिराज श्री के दर्शनार्थ गृहमंत्री आये

पाटण। विराजमान मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनार्थ गुजरात सरकार के गृहमंत्री हर्षभाई संघवी पधारे एवं मुनिराज श्री के दर्शन वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किए। इस प्रसंग पर मुनिराज श्री और गृहमंत्री के बीच धर्म चर्चा हुई। मुनिराज श्री ने गृहमंत्री को जैनाचार्य गुरुदेव श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. लिखित साहित्य भेंट किया। त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की ओर से गृहमंत्री का सम्मान करते हुए उनको पाटण के कलाकार द्वारा सांगानेर कागद पर निर्मित सिद्धचक्र की तस्वीर अर्पण की गई। हर्ष संघवी ने गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की फोटो के दर्शन कर गुरु पूजन किया एवं उनका स्मरण करते हुए कहा कि पूर्व में अनेक बार जैनाचार्य श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

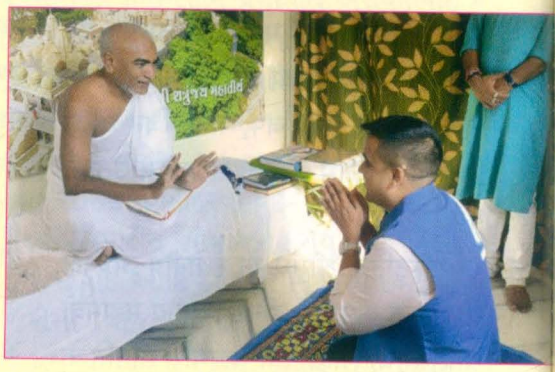

अवन्तिका (उज्जैन) की पावन धरा धन्य हुई
चातुर्मास में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान एवं तपआराधना
पुण्य सम्राट का पुण्याशीष
पूज्य साध्वी विद्वदगुणाश्रीजी म.सा. एवं
पूज्य रश्मि प्रभाश्रीजी ने बिखेरी अपनी विद्वद्ता की रश्मियाँ

उज्जैन । महाराजा विक्रमादित्य श्रीपाल महाराजा एवं विभिन्न महापुरुषों के गुणों की साक्षी रही पावन धरा पर पुण्य सम्राट का दिव्याशीष लेकर

गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरिजी व पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरिजी के शुभ आशीर्वाद से पूज्य साध्वीश्री स्वयंप्रभाश्रीजी की सुशिष्या पूज्य साध्वीजी श्री विद्वदगुणाश्रीजी एवं पूज्य श्री रश्मिप्रभाश्रीजी ने अपने प्रभावकारी ओजस्वी, प्रेरणादायी प्रवचनों से मालवा के उज्जैन में चातुर्मास के दौरान विविध तपआराधना एवं धार्मिक अनुष्ठानों से सुवास आच्छादित की उसकी महक से सम्पूर्ण मालवा सुवासित हो गया। अति उल्लास, उमंग, उत्साह के साथ श्रावक-श्राविका इस पावन सरिता में डुबकी लगाकर अपने आपको पावन कर रहे हैं।

श्री श्रेयांसनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर, नयापुरा उज्जैन में चल रहे चातुर्मास की झलकियाँ मन को आनन्दित कर रही है। भव्य चातुर्मास प्रवेश के पश्चात करुणादिवस पर 125 आयम्बिल, गुरु पूर्णिमा पर गुरुपद महापूजन, भगवान नेमीनाथ का जन्म कल्याणक, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु के अट्ठम, प्रत्येक रविवार को बच्चों की ज्ञान गोष्ठी, श्री नवकार महामंत्र की आराधना अक्षर पर पुण्यसम्राट द्वारा रचित भव्य अड़सठ तीर्थ की भावयात्रा, पर्युषण महापर्व पर तपाराधना का सामूहिक महोत्सव, चौसठ प्रहरी पौषध, शत्रुंजयतप, पैंतालिस आगम का तप, सामूहिक अठ्ठाई, अष्टानिका प्रवचन कल्पसूत्र, वारसा सूत्र का वाचन, जन्मोत्सव चैत्यपरिपाटी, सामूहिक क्षमापना आदि विभिन्न आयोजन ने पूरे वातावरण को धर्म और भक्तिमय कर दिया पूज्य साध्वीजी भगवंता श्री रश्मि प्रभाश्रीजी की 76 वीं वर्धमान ओली के समापन एवं विविध तप निमित्त श्री संघ द्वारा अष्ठानिका महोत्सव का आयोजन किया जिसमें गुरुपद महापूजन, अठारह अभिषेक महापूजन, श्री गौतमस्वामी महापूजन, राजेन्द्रसूरि गुरुपद महापूजन, श्री सिद्धचक्र महापूजन, श्री पार्श्वनाथ महापूजन, श्री शत्रुंजय महातीर्थ की भव्यातीभव्य पहाड़ रचना के साथ भाव यात्रा एवं श्री आदिनाथ पंच कल्याणक पूजा आयोजित हुई। पूज्य साध्वीजी का उल्लासपूर्वक पारणा करवाकर अनुमोदना की गई। खीर एकासना, दीपक एकासना तथा शाश्वत ओलीजी भी श्रद्धापूर्वक सम्पन्न। चातुर्मास के आगामी आयोजन में दीपावली महापर्व निर्वाणी महोत्सव पर बेले की तप आराधना, 75 पुण्यशालियों द्वारा नैवेद्य की थाल सजाकर लाना, निर्वाण का लाडु, आरती तथा गौतमस्वामी रास, ज्ञानपंचमी आराधना तथा चातुर्मास समापन पश्चात् नयापुरा से भैरव तथा उज्जैन से हासामपुरा की पदयात्रा संघ का आयोजन होगा। पूज्य साध्वीजी भगवंत श्रीसंघ के साथ राजेन्द्रसूरि शोध संस्थान तथा नमकमण्डी सहित विभिन्न संघों से पधारेंगे। श्री श्रेयांसनाथ जिन मंदिर से अवंतिका पार्श्वनाथ की 108 पद यात्रा उल्लास से चल रही है।

परिषद प्रांगण से

युवा श्रावकों द्वारा पर्वाराधना

अहमदाबाद। त्रिस्तुतिक समाज के जिन ग्रामों/नगरों में साधु-साध्वी भगवंतों के चातुर्मास का लाभ नहीं मिला, वहाँ जिन शासन समर्पित परिषद् के युवा श्रावकों ने आराधना सम्पन्न करवाई निम्नानुसार युवा सेवा के लिये तत्पर रहे।

दिल्ली में दीप दिलीपभाई दोशी सूरत तथा मनीषभाई छाजेड़ पारा, आलोट में पशाल वसंतभाई वोहेरा सूरत, तीर्थांक केतनभाई अदाणी सूरत तथा पिण्टू प्रकाश भाई वोहेरा अहमदाबाद, राणापुर में मोक्ष रजनीभाई भणशाली सूरत, राज गिरिशभाई सेठ सूरत तथा अक्षिल दिलीपभाई संघवी सूरत, थांदला में राज कल्पेशभाई भणसाली सूरत, वीर जयेशभाई देसाई सूरत, नीव विपुलभाई वोहेरा सूरत, बड़ावदा में पार्थ प्रकाशभाई वोहेरा अहमदाबाद, राज प्रकाशभाई चंडालिया कुशलगढ़, प्रशम सुधीरजी चंडालिया कुशलगढ़, मेघनगर में दिनेशभाई पंडितजी साबरमती, आकोली में भव्य अरविन्दभाई सेठ सूरत, विमल जगदीशभाई दोशी सूरत, समकित प्रवीणभाई दोशी सूरत, बागरा में त्रिलोकभाई कांकरिया, मेंगलवा में भाविक वाघजीभाई माजनी अहमदाबाद तथा कमलेशभाई हीरालाल भणसाली सूरत, सियाणा में अंकित देसाई अहमदाबाद, करवड़ में दोशी विशेष नीलेशभाई अहमदाबाद तथा संघवी पूजन जिज्ञेशकुमार अहमदाबाद। युवाओं द्वारा करवाई गई धर्माराधना के लिये नवयुवक परिषद तथा धर्मोत्तेजक परिषद ने भूरी-भूरी अनुमोदना की है।

* अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद हुबली द्वारा हाल ही UPSC परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाली मेघा जैन का शाल व माला द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर परिषद के अनेक सदस्य उपस्थित थे।

मदुरै। श्री सिवांची ओसवाल जैन संघ मदुरै की आम सभा स्थानीय

आराधना भवन में रखी गई। श्री संघ प्रवक्ता दिनेश सालेचा ने बताया कि नई कार्यकारणी का गठन किया गया जिसमें संघ संरक्षक सुमेरमल गुलेच्छा, अध्यक्ष मूलचंद श्रीश्रीमाल, उपाध्यक्ष रतनचंद लोढ़ा, सचिव कांतिलाल बालड़, सहसचिव विमलचंद बालड़, कोषाध्यक्ष किशोर गुलेच्छा सहित कमेटी सदस्य त्रिलोकचंद गुलेच्छा, मूलचंद धोका, वीरचन्द नाहटा, राजेन्द्र चौपड़ा, बगदराज बागरेचा एवं संघ में युवा कार्यकर्ताओं में उत्तमचंद छाजेड़, महावीर श्रीश्रीमाल, धनराज चौपड़ा, गौतमचंद गुलेच्छा, अमृतलाल चौपड़ा को मनोनीत किया

गुरु पूर्णिमा पर गौ सेवा

बैंगलोर। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा बैंगलोर द्वारा गुरु पूर्णिमा निमित्त कोरमंगला स्थित अखिल कर्नाटक प्राणी दया गौशाला में सेवा की गई। यह कार्य उपकारी गुरु गौतमस्वामी, गुरु राजेन्द्रसूरि, परिषद संस्थापक यतीन्द्रसूरि एवं गुरु जयंतसेनसूरि को याद करते हुए किया गया। गौशाला में 1200 मूक पशुओं को करीब 500 किलो केला, काकड़ी, खरबूजा आदि सामग्री खिलाई गई। इस मौके पर परिषद कार्यकर्ताओं द्वारा गौ पूजन भी किया गया। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रकाश हिराणी ने बताया की गुरु बिना जीवन शुरू नहीं होता है। गुरु को पूर्ण समर्पित रहना ही हमारी सच्ची शक्ति और भक्ति है। हमारे जीवन में एक गुरु की आवश्यकता है, जो हमें सही मार्ग व दिशा बता सके। गुरु ही हमारे जीवन के आधार हैं। बैंगलोर शाखा अध्यक्ष डूंगरमल चोपड़ा ने बताया की गुरु और समुद्र दोनों ही गहरे हैं। इस अवसर पर उपाध्यक्ष हेमराज, सचिव नेमीचंद संघवी, कोषाध्यक्ष रमेश क्षत्रियवोरा, चम्पालाल निमाणी, प्रकाश ओस्तवाल, राजु गांधी मुथा, राहुल निमाणी, नरेश आदि सदस्य उपस्थित थे।

यात्रा निकाली गई

महिदपुर। श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद परिवार द्वारा चार दिवसीय यात्रा संघ का आयोजन किया गया। राजेन्द्र सूरि ज्ञान मंदिर महिदपुर में सुबह गुरुदेव के दर्शन वंदन कर यात्रा संघ ने प्रस्थान किया। यात्रा संघ जावरा व मन्दसौर में साध्वीजी म.सा. के दर्शन वंदन कर जालोर (राजस्थान) पहुंचा जहाँ पर गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. व मुनिमण्डल के दर्शन वंदन कर सुखसाता पूछ कर क्षमायाचना की व गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त किया। पश्चात् भाण्डवपुर तीर्थ में आचार्य श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा. के दर्शन वंदन कर

क्षमायाचना की एवं आशीर्वाद प्राप्त किया। पाटन (गुजरात) में मुनि भगवंत व साध्वीजी म.सा. के दर्शन वंदन किये। यात्रा संघ ने जालोर, भाण्डवपुर, भीनमाल, मांडोली, नाकोड़ा, जीरावाला, केशरियाजी, काया, इसवाल, रणकपुर, फालना आदि तीर्थों की यात्रा कर प्रभुजी के दर्शन व पूजा की। यात्रा संघ में परिषद परिवार के माणकलाल छाजेड़, नरेन्द्र धाड़ीवाल, सुरेश छजलानी, श्रेणिक सकलेचा, लेखेन्द्र धाड़ीवाल आदि शामिल थे।

* **महिदपुर।** मंदसौर में विराजित साध्वीवर्या डॉ. अमृतरसाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 की निश्रा में नरेन्द्र धाड़ीवाल की सुपुत्री कु. सुचित्रा धाड़ीवाल ने 16 उपवास की तपस्या पूर्ण की। इस निमित्त धाड़ीवाल परिवार की ओर से अजीतनाथ मंदिर मंदसौर में वर्धमान शक्रस्तव अभिषेक का आयोजन किया गया। राजेन्द्रसूरी पौषधशाला जनकुपरा में चौवीसी का आयोजन किया गया। मंदसौर श्रीसंघ की ओर से तपस्वी का बहुमान किया गया।

* **बैंगलोर।** नवयुवक परिषद शाखा बैंगलोर द्वारा गुरु पूर्णिमा निमित्त कोरमंगला स्थित अखिल कर्नाटक प्राणी दया गौशाला में सेवा की गई। यह कार्य उपकारी गुरु गौतमस्वामी, गुरु राजेन्द्रसूरि, परिषद संस्थापक यतीन्द्रसूरि एवं गुरु जयंतसेनसूरि को याद करते हुए किया गया। गौशाला में 1200 मूक पशुओं को करीब 500 किलो केला, काकड़ी, खरबूजा आदि सामग्री खिलाई गई। उस मौके पर परिषद कार्यकर्ताओं द्वारा गौ पूजन किया गया।

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रकाश हीराणी ने बताया की गुरु बिना जीवन शुरू नहीं होता है। गुरु को पूर्ण समर्पित रहना ही हमारी सच्ची शक्ति और भक्ति है। आगे उन्होंने बताया हमारे जीवन में एक गुरु की आवश्यकता है, जो हमें सही मार्ग व दिशा बता सके।

इस अवसर पर अध्यक्ष श्री डूगरमल चौपड़ा, उपाध्यक्ष हेमराज, सचिव नेमीचंद संघवी, कोषाध्यक्ष रमेश क्षत्रियवोरा, चम्पालाल निमाणी, प्रकाश ओस्तवाल, राजु गांधी मुथा, राहुल निमाणी, नरेश आदि सदस्य उपस्थित थे।

* **हुबली।** महिला परिषद 'शाखा हुबली' द्वारा पावापुरी में 'ब्लड टेस्ट कैंप' का आयोजन किया गया जिसमें जरूरतमंद लोगों के लिए 'सुगर, हीमोग्लोबिन एवं थाईराइ' जैसी बीमारी का पता लग सके।

इस कैंप में अतिथि के रूप में हुबली धारवाड़ महानगर पालिका की सदस्य 'उमा मुकुंद' हाल ही में UPSC परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाली 'मेघा जैन' उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथि द्वारा दीप प्रज्वलित एवं पौधारोपण द्वारा किया गया।

अतिथि उमा मुकुंद ने महिला परिषद के कार्यों की सराहना की वहीं मेघा जैन ने बताया की आज के युग में महिला पुरुष सब समान हैं। आप महिला होकर भी

इतने बड़े कैंप का आयोजन कर आपने महिला शक्ति का परिचय दिया है। महिला परिषद 'अध्यक्ष पूनम जैन' ने परिषद् द्वारा किये हुए जीवदया एवं मानवता के कार्यों को बताया। वहीं 'पूर्व अध्यक्ष मिन्टू जैन' ने बताया की परिषद में समय-समय पर निर्धन लोगों के लिए ऐसे कैंप करने चाहिए जिससे जरूरतमंद लोगों को उसका फायदा मिले इस अवसर पर सभी अतिथियों का शाल, माला एवं मोमेंटो द्वारा बहुमान किया गया।

कार्यक्रम में शोभा जैन, सिकिता जैन, रेखा गांधीमुथा, भावना जैन, ललिता जैन, सीमा सेठ, शीला सेठ, संगीता मुथा, कल्पना जैन, उर्मिला जैन, विमला गांधीमुथा, चंद्रिका जैन एवं नवयुवक परिषद के सदस्य उपस्थित थे।

श्री बदरीनाथजी बैरागी का निधन

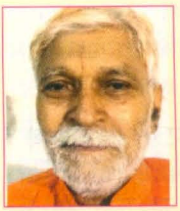

मोहनखेड़ा तीर्थ। मोहनखेड़ा तीर्थ पर 50 वर्षों से लगातार पूजन, सेवा तथा मंदिरजी व गुरुमंदिर में अपनी आत्मीय सेवा देकर 'स्वर्णिम पारी' से सभी यात्रियों के चेहते बने अत्यंत विनम्र, मिलनसार, हसमुँख, श्रद्धावन्त, प्रमुख पूजारी श्री बद्ररीनाथजी बैरागी का दि. 25 अक्टूबर 2021 को प्रभु मिलन हो गया।

श्री बदरीनाथजी की आत्मीयता के कारण लाखों गुरुभक्त उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानते थे। वे सभी श्रद्धालुओं को प्रभु अथवा भगवान के नाम से संबोधित कर सभी के दिल में जगह बना लेते थे। प्रभु का अभिषेक, पूजन, आरती, केसर घिसकर देना, मंत्रोचारण, चढ़ावा बोलना, स्नात्रपूजन आदि अनेक पूजन विधि में जैन भक्तों का सहयोग करवाते थे।

अक्सर माता-पिता अपने छोटे बच्चों को उनके हाथों से प्रभु व गुरु पूजा करवाते थे। रक्षापोटली आदि भी बंधवाते थे। अनेक भक्त अपने नए वाहनों की पूजा मोहनखेड़ा तीर्थ पर लाकर उनके हाथों से करवाते थे, मुनि भगवंत पूज्य श्री लखाबा, पूज्यश्री सागरविजयजी, आचार्य देवेश श्रीमद् विजय विद्याचन्द्रसूरिजी, राष्ट्रसंत पुण्य सम्राट गच्छाधिपति विजय जयंत सेन सूरिश्वरजी म.सा. और उनके पाट परम्परा के आचार्य भगवंतों तथा पूज्य मुनिराज श्री देवेन्द्रविजयजी, पूज्य श्री सौभाग्यविजयजी, पूज्य श्री जयप्रभविजयजी, पूज्य श्री लक्ष्मणविजयजी आदि वरिष्ठ मुनिभगवंतों व इनके शिष्य, प्रशिष्यों तथा साध्वी भगवंतों की आत्मीय वैय्यावच्च का आशीर्वाद लेकर अपनी झोली भरने वाले बद्रीभाई पूजारी के देशभर के सभी गुरुभक्तों से सीधी पहचान थी।

अपनी नाटी कद, सफेद बाल, केसरिया कुरता वाली छवि सभी गुरुभक्तों के आखों में बसी है। पूज्य गुरुभगवंतों, गुरुभगवंत गच्छाधिपति श्री नित्यसेनसूरिजी म.सा., पूज्य आचार्य भगवंत श्री जयरत्नसूरिजी म.सा. तथा मुनिभगवंत साध्वी भगवंतों ने उनके कार्यों, भक्ति व वैय्यावच्च की सराहना करते हुए उनके गमन को अपूर्णीय क्षति बताया। लाखों गुरुभक्तों की ओर से वरिष्ठ पूजारी श्री बदरीभाई को आत्मीय श्रद्धाजंली।

परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारियों की संयम वंदन यात्रा

दो दिन तक कई साध्वी समुदायों के दर्शन, परिषदजनों से भेंट

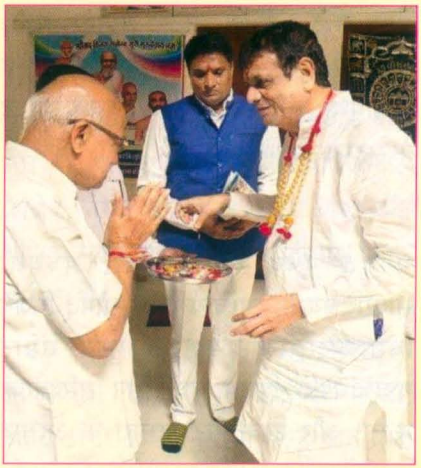

मंदसौर। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के समस्त राष्ट्रीय व प्रांतीय पदाधिकारियों की मध्यप्रदेश में चातुर्मास विराजित साध्वीजी भगवंत के दर्शन वंदनार्थ संयम यात्रा राष्ट्रीय अध्यक्ष 'श्री रमेशजी धरू' के नेतृत्व में रतलाम से प्रारंभ हुई।

जिसमें राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुधीर लोढ़ा, राष्ट्रीय मंत्री श्री शांतिलालजी गोखरू, श्री संजयजी कोठारी, प्रांतीय अध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी दंगवाड़ावाला, राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री श्री भरतभाई व्होरा, पर्यावरण मंत्री श्री अनिलजी दसेड़ा, जनकल्याण मंत्री श्री सुशीलजी छाजेड़, सहमंत्रीद्वय श्री राजकमलजी दुग्गड़, शैलेशजी ओरा, संगठनमंत्री श्री प्रफुल्लजी जैन, रतलाम संघ ट्रस्टी डॉ. निर्मलजी मेहता, पूर्व राष्ट्रीय पदाधिकारी श्री नगीनजी सखलेचा उपस्थित रहे। राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने जावरा में साध्वीजी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. रतलाम में साध्वीजी श्री पुण्यदर्शनाश्रीजी म.सा. के दर्शन वंदन कर सांवत्सरिक क्षमापना की। श्रीसंघ अध्यक्ष डॉ. सुरेशजी मेहता, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शांतिलालजी दसेड़ा, परिषद अध्यक्ष श्री अशोकजी नवलखा, महामंत्री श्री संजय जैन सहित जावरा श्रीसंघ के वडिलों ने बहुमान किया। संचालन श्री पारसजी सखलेचा ने किया। उपरांत पदाधिकारीगण मंदसौर पधारे।

रतलाम में बहुमान ट्रस्ट मण्डल अध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी लुणावत, उपाध्यक्ष श्री सतीशजी खेड़ावाला, शाखा अध्यक्ष श्री विनयजी सुराणा, महामंत्री श्री प्रवीणजी संघवी ने किया। कार्यक्रम का संचालन श्री राजेशजी खाबिया ने किया। ट्रस्टीगण श्री निलेशजी लोढ़ा उपस्थित थे। मंदसौर में चातुर्मास हेतु विराजित प.पु. साध्वीवर्या डॉ. अमृतरसाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 के दर्शन वंदन कर सांवत्सरिक क्षमापना की। इस अवसर पर मंदसौर श्रीसंघ अध्यक्ष गजेन्द्र कुमारजी हिंगड़ एवं त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा एवं संघ के वरिष्ठगण सर्व श्री देवेन्द्रजी चपरोत, हरीशजी चपरोत, मनोहरजी सोनगरा, विजयजी सुराणा, धर्मेन्द्रजी कर्नावट, वीरेन्द्रजी डोसी, रोहितजी संघवी, अजयजी फांफरिया। श्रीसंघ के सचिव अशोकजी खाबिया, परिषद अध्यक्ष दिलीपजी कर्नावट, महामंत्री महेशजी चपरोत, तरुण परिषद शाखा मंदसौर के महामंत्री अनिमेषजी पोरवाल, जयेशजी डांगी, कपिलजी खाबिया, कमलेशजी सालेचा,

अपूर्वजी डोसी, हर्षजी खाबिया सहित मंदसौर श्रीसंघ के महानुभावों ने बहुमान किया। इस अवसर पर अतिथि स्वागत उद्बोधन गजेन्द्रजी हिंगड़ ने दिया एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू एवं सुरेन्द्रजी लोढ़ा ने मार्गदर्शन उद्बोधन दिया। इस अवसर पर राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू ने साधर्मिक भक्ति के ऊपर सुंदर गीत प्रस्तुत किया। चातुर्मास समिति के अध्यक्ष श्री सुधीरजी लोढ़ा ने मंदसौर आध्यात्मिक चातुर्मास वर्ष 2021 की मुख्य उपलब्धि पताका, अष्ट सिद्धि महातप, मासक्षमण, अट्ठाइ महोत्सव नवकार आराधना, चैत्य परिपाटी, शासन स्पर्शना, शतावधान, नवपद शाश्वत ओलिजी की श्रृंखलाबद्ध प्रस्तुति शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत की। आभार संघ सचिव श्री अशोकजी खाबिया ने माना।

बड़नगर में राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने साध्वी श्री अमित दृष्टाश्रीजी महाराज सा. ठाणा-7 के दर्शन वंदन कर सुख साता पूछते हुए मिच्छामी दुक्कड़म किया इस अवसर पर साध्वीजी द्वारा संबोधित करते हुए कहा कि परिषद रूपी पौधा मानव सेवा, जीव दया के कार्य करते - करते वट वृक्ष बन गया है।

परिषद जनकल्याण जीव दया एवं परोपकार के कार्य हमेशा करते रहे। परिषद के राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य एवम् स्थानीय शाखा के प्रवक्ता राजकुमार नाहर ने बताया कि राष्ट्रीय पदाधिकारियों का स्वागत बहुमान किया गया। संघ की ओर से स्वागत उद्बोधन ट्रस्टी राजेन्द्र जैन दंगवाड़ा वाला, परिषद की ओर से अजय सियाल ने दिया सभी राष्ट्रीय प्रांतीय पदाधिकारियों का बहुमान ट्रस्ट की ओर से पुखराज सियाल, नरेन्द्र चोपड़ा आदि ट्रस्टी द्वारा किया गया। परिषद की ओर से अजय सियाल, तरुण परिषद की ओर से नमन छाजेड़ प्रांतीय महिला परिषद की ओर से अनीता सर्राफ, सचिव पिंकी सर्राफ, स्थानीय शाखा परिषद की ओर से मोना कुमठ, बालिका परिषद से मुस्कान ओरा, तरुण परिषद से नमन छाजेड़ द्वारा किया गया बहुमान। सभा को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेशजी धरू ने कहा कि ज्ञानार्जन एवं सूत्र कंठस्थ योजना के तहत नौनिहालों एवं बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण किया जा रहा है। कोरोना काल में परिषद परिवार के सहयोग से समाज के जरूरतमंद परिवारों को सहयोग किया गया। राष्ट्रीय महामंत्री सुधीरजी लोढ़ा ने कहाकि पुण्य सम्राट के आशीर्वाद से शिक्षा के क्षेत्र में चिकित्सा के क्षेत्र में मानव सेवा के क्षेत्र में परोपकार के कार्य परिषद करती रही है और वर्तमान में भी कर रही है।

श्री लोढ़ा ने आगे कहा कि विपरीत परिस्थिति में परिषद् द्वारा परोपकार ओर सेवा कार्य किये इस अवसर पर राष्ट्रीय पदाधिकारियों का स्वागत मनोज ओरा, साकेत गामा, सुरेश ओरा, पवन मेहता, राकेश गोलेचा, जीतू चोपड़ा, आशीष ओरा, यश ओरा, दक्ष ओरा, नमन चोपड़ा सहित संघ एवं परिषद के कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया। राष्ट्रीय एवं प्रांतीय कार्यकारिणी में संघ समाज का नाम रोशन करने वाले पदाधिकारियों राजेन्द्र दंगवाड़ा, शांतिलाल गोखरू , शैलेश ओरा, राजकुमार नाहर, अनिता सर्राफ, राकेश गोलेचा का भी बहुमान किया। कार्यक्रम का संचालन शांतिलाल गोखरू ने किया अंत में सभी के प्रति आभार रोहित ओरा द्वारा व्यक्त किया गया।

श्री संघ सौरभ

प्रो. मेहता उज्जैन शोधपीठ के निदेशक बने

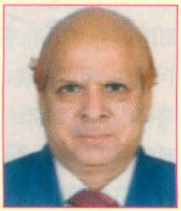

उज्जैन । पुण्य सम्राट युग प्रभावक जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा संस्थापित श्रीमद् राज राजेन्द्रसूरि शोध संस्थान के अध्यक्ष विधायक श्री पारसजी जैन तथा सचिव श्री सुशीलजी गिरिमा ने बताया कि श्री राजेन्द्रसूरि शोध संस्थान के निदेशक पद का कार्यभार प्रो. श्री बी.के.मेहता ने संभाल लिया है।

यह पद श्री तेजसिंह गौड़ के निधन से रिक्त हुआ था। श्री बी.के. मेहता विक्रम विश्व विद्यालय उज्जैन की गोपनीय शाखा से 15 वर्ष कार्यरत रहकर सेवा निवृत्त हुए हैं। आप यूसिक के छह वर्ष निर्देशक रहे। आपके शोध निर्देशन में अभी तक 47 छात्रों को पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त हुई है। आप म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशित 4 पुस्तकों के सहलेखक हैं। आपके निर्देशन में 6 छात्रों को मेटकास्ट भोपाल द्वारा युवा वैज्ञानिक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। आप कई शिक्षा संस्थाओं में विशेषज्ञ रहे हैं। विक्रम विश्व विद्यालय की कई समितियों के अध्यक्ष व सदस्य रहे हैं। आपके निदेशन में शोध संस्था को नये आयाम प्राप्त होने की आशा है।

नैनावा निवासी गुरुभक्त अरविन्दजी छाजेड़ का निधन

श्री सिद्धाचलतीर्थ (रमेश अनोखी तथा अशोक शेठ लुणाल) । नैनावा निवासी गुरुभक्त सुश्रावक श्री अरविन्दजी गणेशमलजी छाजेड़ का यहाँ देहवसान अट्ठमतप के दूसरे उपवास में गुरु भगवंत को वोहराते - वोहराते हो गया। वर्तमान चातुर्मास में पालीताणा में बिराजमान साधु-साध्वियों की भक्ति के लिये यतीन्द्र भवन में चातुर्मासिक सुपात्र भक्ति का लाभ लेने वाले चार लाभार्थियों में से आप एक थे। भावनगर आपकी कर्मभूमि थी। आप चातुर्मासिक आराधना के लिए यतीन्द्र भवन में थे। आपके आठ मास का माहा धर्मचक्र तप चल रहा था जिसके अंतर्गत 8 मास में 24 तेले तथा शेष बेले

(छट्ठ) होते हैं। यह तप पूर्ण होने वाला था। अपने अंतिम समय का पूर्वाभास होने पर आपने पूरे परिवार को भावनगर से अपने पास बुला लिया था। आपके अठ्ठम का दूसरा उपवास था। अपनी धर्मपत्नी को भी गुरु भगवंत से उपवास का पच्चक्खाण करवाया। आप मातुश्री छठीबाई तथा पिता श्री गणेशमलजी के पुत्र थे। आपके परिवार ने पुण्य सम्राट युग प्रभावक गुरुदेव के तीन चातुर्मास नैनावा में करवाये थे। युग प्रभावक श्री निश्रा में नैनावा से जैसलमेर छ'रि पालित संघ का आयोजन किया था। शत्रुंजय तीर्थ पर बाबु के देहरासर में युग प्रभावक पुण्य सम्राट की प्रतिमा बिराजमान करने वाले गुरुभक्त आप ही थे। शाश्वत धर्म द्वारा हार्दिक श्रद्धांजलि।

स्व. श्री शांतिलालजी डुंगरवाल को श्रद्धांजलि अर्पित की गई

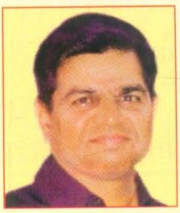

इंदौर। सरलमना, परम गुरुभक्त, तपस्वी तथा स्थानीय परिषद एवं गुमास्तानगर श्रीसंघ के ट्रस्टी श्री शांतिलालीजी डुंगरवाल जिनका देहावसान संवत्सरी के दिन चौविहार उपवास में राजेन्द्रसूरि म.सा. की जीवन गाथा सुनते-सुनते हो गया था को जैन समाज की विभिन्न संस्थाओं ने विनम्र श्रद्धाजंलि अर्पित की। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, राजेन्द्र उपाश्रय ट्रस्ट, गुमास्तानगर श्रीसंघ, महिला परिषद नाकोड़ा मंदिर ट्रस्ट, महिला मंडल तथा अन्य संस्थाओं के वक्ताओं ने उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पण करते हुए कहा। सम्पूर्ण रूप से अपने आपको तप सामाजिक कार्यों में जोड़ने वाले शांतिलालजी ने सहदंपत्ति दो वर्षीतप लगातार किये थे। नियमित प्रतिक्रमण, सामायिक पूजन करने वाले शांतिलालजी इंदौर परिषद के सक्रिय सदस्य रहे। आप अपने नाम के अनुरूप शांत स्वभाव के थे। पिछले वर्ष पर्युषण में जन्मोत्सव के दिन ही आपके युवा बेटे की अचानक मृत्यु हो गई थी। आपके पिताजी का स्वर्गवास महावीर जन्म कल्याणक के दिन हुआ था। शाश्वत धर्म परिवार की ओर से भी श्रद्धांजलि।

श्री शांतिलालजी तलेरा का स्वर्गवास

रतलाम। एक जिनशासन प्रेमी, परम गुरुभक्त, सरल, समाजसेवी, सरस व्यक्तित्व का यकायक वियोग स्तब्ध करने वाला है। व्यावसायिक कार्यों से अहमदाबाद से वापसी के समय अहमदाबाद के प्लेट फार्म पर ही हृदयाघात के कारण उनका निधन हो गया। मिलनसार श्री शांतिलालजी सभी से बहुत ही

आत्मीयता से मिलते थे। अपनत्व उनका विशेष गुण था। धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ होने के साथ-साथ सामाजिक तथा पारीवारिक दायित्वों को भी बखूबी निभाते थे। राष्ट्रसंतश्री के प्रति उनकी समर्पणता बहुत ही उम्दा थी, आरम्भ से ही उन्होंने गुरु को हृदय में रखा था, गुरुदेव के प्रत्येक कार्यक्रमों में फिर वे कहीं भी हों, अपने मित्रों के साथ उपस्थित जरूरत रहते थे। रतलाम चातुर्मास तो सबके साथ उनके लिए भी स्वर्णिम पल लेकर आया था प्रतिदिन लगभग 12-14 घंटे लगातार चार माह तक अपनी ड्यूटी देते थे। समाज की अग्रिम पंक्ति के वे सदस्य थे। साधु-साध्वीजी भगवंतों की सेरा, वैय्यावच्च मन से करते थे। एक बड़े एवम् प्रतिष्ठित तलेरा परिवार के जवाबदार सदस्य होते हुए बच्चों को संस्कारों से सज्जित किया। मित्रों से जिंदादिली से मिलते थे, अपने मित्रों व परिचितों से वे सतत प्रत्यक्ष अथवा मोबाइल आदि से संपर्क में रहते थे। सच में उनका वियोग मित्रों, परिवार, संघ, समाज परिषद सभी के लिए अपूर्णनीयक्षति है। परिषद एवम् शाश्वत धर्म की ओर से भावभरी श्रद्धांजलि।

– अशोक श्रीश्रीमाल, इंदौर

श्री नथमलजी जैन का निधन

इंदौर। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के पूर्व राष्ट्रीय शिक्षामंत्री, श्री लक्ष्मणी तीर्थ के ट्रस्टी, गुमास्ता नगर इंदौर त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के वरिष्ठ सदस्य, परम गुरुभक्त अलीराजपुर निवासी श्री नथमलजी जैन सा. का दि. 21 अक्टूबर 2021 को अरिहंत शरणम हो गया। मारवाड़ के पश्चात अलीराजपुर से अपना सफर आरम्भ करने वाले श्री नथमलजी आरम्भ से ही धार्मिक प्रवृत्ति के रहे। लंबे समय तक आपने श्री लक्ष्मणी तीर्थ व अलीराजपुर संघ में अपनी सेवाएँ दीं। आप आर.एस.एस. में भी सक्रिय रहे। पश्चात् आप गुमास्ता नगर इंदौर पधारे और यहाँ भी संघ में आप सक्रिय रहे। स्वस्थ रहे तब तक नियमित पूजन, भक्तामर सामायिक करते रहे। पितृत्व धर्म का पालन करते हुए बेटियों को संस्कारों से सिंचित किया। श्रीसंघ, परिषद परिवार एवं विभिन्न संस्थाओं ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री तेजकरणजी सगरावत का देहवसान

इंदौर। इंदौर त्रिस्तुतिक जैन संघ के वरिष्ठ कम्प्यूटर व्यवसायी, धर्मनिष्ठ, समाजसेवी श्री तेजकरणजी सगरावत का कुंवार सुदी पूर्णिमा के पावन दिवस पर

प्रभु मिलन हुआ। मूलतः मंदसौर निवासी सगरावत परिवार व्यावसायिक दृष्टिकोण से इंदौर आये व व्यवसाय की बुलंदियों को चूमा। परिवार को व्यावसायिक, सामाजिक एवं धार्मिक संस्कारों से परिपक्व किया, आपके पुत्र श्री दीपकजी सगरावत इंदौर परिषद के व श्रीसंघ के सक्रिय सदस्य हैं।

आपका परिवार स्वधर्मि सेवा, अनुकम्पादान आदि में अग्रणी भूमिका निभाता आया है। श्रीसंघ, परिषद परिवार व विभिन्न संस्थाओं ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

ग्यारह उपवास पूर्ण किये

महिदपुर । यहाँ आत्म कल्याणार्थ सौ. एकता-पंकज मेहता की सुपुत्री कु. खुशी ने ग्यारह उपवास की तपस्या सुख शांति पूर्वक सम्पन्न की। इस अवसर पर श्रीसंघ के महानुभावों ने तपस्वी को बधाई दी।

रजत रश्मियाँ

11,000/- डॉ. निर्मला मेहता रतलाम द्वारा 'शाश्वत धर्म' को सादर भेंट।

1100/- अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के पूर्व राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री व लक्ष्मणी तीर्थ के ट्रस्टी स्व. नथमलजी जैन सा. अलीराजपुरवाले, गुमास्ता नगर, इंदौर की स्मृति में परिवार की ओर से भेंट।

1100/- महिदपुर निवासी कु. खुशी (सुपुत्री सौ. एकता-पंकज मेहता) के ग्यारह उपवास की तपस्या के उपलक्ष्य में 'शाश्वत धर्म' को भेंट।

1100/- श्री राजेन्द्रजी सौभाग्यमलजी भंडारी, राजगढ़ की स्मृति में 'शाश्वत धर्म' को भेंट। हस्ते श्री भेरूलालजी भंडारी, राजगढ़।

500/- मनोरमा बहिन भेरूलालजी भण्डारी राजगढ़ की स्मृति में 'शाश्वत धर्म' को भेंट हस्ते श्री भेरूलालजी भंडारी।

सभी का आभार - व्यवस्थापक 'शाश्वत धर्म'

जैन विश्व

मूलमुनिजी का देवलोकगमन

कोटा । श्रमण संघ के वरिष्ठ उपाध्याय श्री मूलमुनिजी ने 26 सितम्बर 2021, रविवार को 14 घंटे के संथारा-तप के साथ 99 वर्ष की आयु में अपनी नश्वर देह का त्याग किया।

पाली (राजस्थान) में जन्मे मूलमुनिजी ने एक बार जवाहराचार्य के शिष्य मुनि कन्हैयालालजी से व्याख्यान में जैन दिवाकर मुनि चौथमलजी रचित जम्बूकुमार चरित्र सुना तो सांसारिक भोगों से विरक्ति हो गई। मात्र 17 वर्ष की तरूणाई में उन्होंने समदड़ी में दीक्षा ली।

पटेल दादा भगवान के अनुयायी हैं

अहमदाबाद । गुजरात के नये मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र पटेल मूलतः पटेल समुदाय के हैं तथा दादा भगवान के अनुयायी हैं। राजनैतिक परिवर्तन के अंतर्गत श्री विजय रूपानी को गुजरात के मुख्यमंत्री पद से उच्चसत्ता ने हटा दिया। उनके स्थान पर श्री भूपेन्द्र पटेल ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। श्री पटेल ने भगवान सीमँधर स्वामी की प्रतिमा अपने सिर पर विराजमान कर मुख्यमंत्री कार्यालय में प्रवेश किया।

यह प्रतिमा उनने मुख्यमंत्री कार्यालय में स्थापित कर दी। बाद में उनने दिल्ली जाकर राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविद से भेंट की एवं उन्हें सीमंधर स्वामी की प्रतिमा तथा दादा भगवान से सम्बन्धित साहित्य भेंट किया। ऐसी ही श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिमा उनने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा अन्य केन्द्रीय मंत्रियों को भी भेंट की। इनमें उपराष्ट्रपति श्री वैंकया नायडु, गृहमंत्री श्री अमित शाह, रक्षामंत्री श्री राजनाथसिंह भी शरीक हैं। वैसे गुजरात में पटेल समुदाय में लाखों लोग दादा भगवान को मानते हैं। दादा भगवान की अवधारणा में श्री शंकरजी, श्री कृष्णजी तथा श्री सीमंधर स्वामी को आराध्य मानते हैं। उनका मंत्र श्री नवकार मंत्र, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय तथा शंकरजी के श्लोक तथा हर-हर महादेव का संयुक्त रूप है।

* हुबली। वी.एस. वी.एम. परिवार द्वारा गुरुदर्शन तीर्थ दर्शन यात्रा पूर्ण की गई यात्रिक संघ मदुरै पहुंचा।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला, फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा, फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार, फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि. मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सरत

कोबा (गांधीनगर) पि. ३८२००७

साध्वीजी द्वारा शतावधान : सभी हैरान

मंदसौर में साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी म.सा. के चातुर्मास के अंतर्गत साध्वीजी श्री निरागरसाश्रीजी म.सा. ने सार्वजनिक रूप से शतावधान का प्रयोग प्रदर्शित किया । साध्वीश्री की कुशल प्रतिभा से मंदसौर नगर के प्रबुद्ध तथा अग्रगण्य नागरिक हैरान रह गये ।

परिषदजनों की राज्यपाल से भेंट

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् हुबली शाखा के सदस्यों ने हुबली पधारे पुण्य सम्राट् जयंतसेनसूरिश्वरजी म.सा. के परम भक्त एवं कर्नाटक के महामहिम राज्यपाल थावरचंद जी गेहलोत से मुलाकात कर उनका शाल माला एवं मैसूर फैटा पहनाकर सम्मान किया ।

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
ए /RNP/MP/MANDSAUR/113/ 2021–23
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क–400/– | वर्ष – 68, अंक 10 | कुल पृष्ठ कवर सहित - 76

परिषद् के राष्ट्रीय व प्रान्तीय पदाधिकारियों की सफल संयम वंदन यात्रा

श्री रमेशभाई धरु का उद्‌बोधन

श्री सुधीर लोढा का वक्तव्य

इन्दौर में सम्मान

मंदसौर में श्री धरु का स्वागत

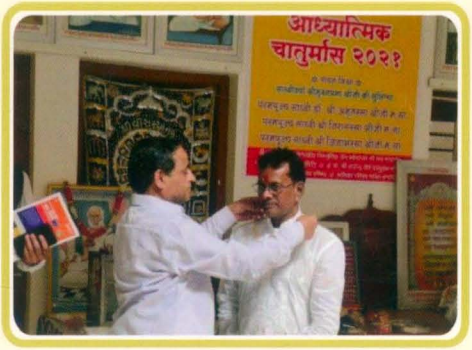

श्री भरतभाई व्होरा का स्वागत

श्री धरु इन्दौर में

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001